उ उठ भए। नी द्वारा मार्गिः -च्याच्या १३ वं वय यहः। च्या सक्या संत्रकः। अज्ञामान्य मिहिसम् भः मर साम् ।। শ্রী হিন্দু শর্ব মসপ্রো সাই। তর श्री संवयक्त्र भारतिवात कार्यास्त्री स्क्राम् श्री थरायत्था निकाम्युधानम् कीर्णभागीन् MURAINE IL

त्ज्ञामधानामं यतः। ज्ञाभवत्रक्षियतः। च्यास्य क्यायमः। सर्वत्र योक्त्याचनः। सर्वायकी संकारणः। अवाद नव संस्थाता नमः।। अथरावि शभी भे प्राद्य निकार ।। जमाना ठार्ड भवः भवा र यम (याय अभू कुंड यादाशाए भ्रावि ली ग्रांड। नाभक्षमाण्यक विश्व जिस्म भूगी यात नथः।। ७९ पूर्व भाकिमीयमा द्र्य भग्न प्रकादिका ठार्थ अभानाकुकाम् आठार्थाः॥ अय अयभा ठार्था अका। विकागाठात्य विकृः। वृक्षिणाठात्य समः। ठ्यू र्या ठार्या वास्थि:। अक्षमा ठार्यः आफि:। वक्रायक: अज्ञामव:। अख्याक्राक्ष काम:। अक्षेमाठाकः स कः। नवभागार्था तो इः। मनभाष्ठारकी लगाविन् । यकामना ठाकीः मक्तः। रेकाल भूकारार्थाः ॥ यलसा शत्य कृषयूग वर्षित संग्र आठार्या वक्षा विकू क्षेत्र लग्ह ।-विषया भारतिय संग्रं भारतियो निर्मिश्चे निर्मित भश्रामात्र त्याचि ॥ माभव प्रगर्याचित्रो हो

आठाएम रग्रम सक त्याह । काल यूग्र वार्षित यक यव भारकता ठार्थ रेडि॥

उक्र निका महन्नार्ग शिनास्त्रभा हार्यः। स्मानिका हार्यः। खाउँका हार्यः। वृक्षाभणका हार्यः। स्मानिका स्थीध्राहार्य महनूर्य रेष्टि॥ खिल्हा नामा न ।

ये नत्या यक्कामित्या यक्का विमा अण्डामागं कर्ष्ट्राया राज्या यक्कामित्या यक्का विमा अण्डामागं कर्ष्ट्राया

क्या १ क्र्रेकग्रीलिक, जय क्ष्म भर्मे वेद्य पमः ॥—०॥ कर्षा १ क्रिकं ग्री त्रा क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म भाव्य क्षा १॥ अख्य क्ष्मिक्ष क्ष्म जिख्य अद्यक्ष मात्रा क्ष्म भाव्य क्षा १॥ अख्य क्ष्मिक्ष क्षमा जिख्य क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष भाव्य ॥ जा स्त्रा क्ष्मिक्ष क्षमा जिख्य क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष भाव्य ॥ जा स्त्रा क्ष्मिक्ष क्षमा जिख्य क्ष्मिक्ष क्षमा क्ष्मिक्ष भाव्य ॥ जाव्य क्षिम् क्षमा जाव्य क्ष्मिक्ष क्षमा क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्य क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष क्ष

श्रीभक्ष अकारा ठार्थ ज्या वर्भ वादि ठपूर्छः भव् भित्य भ भक्षाता दशतियाति ॥ वाभू भूताल १० भूताना स्त्रां भ

याल अराज्य अध्यात्य प्रमुद्दीत्म भाव महिता ।

পারিধাবিবংমরেরু সম্ভক্ষা শারিবাসরে। उम्मल वर्षा शिल जू मिला जिल्लामण् मिला ॥-० भक्षा मंग्रायणांगा भकार्य भार्यां ग्राद र्वास्मार्भामन कार्यार्थ मक्त्रा निक सम्भ्रम्॥॥ अविरोणी अर्देशानि मक्षे त्यक भगाति ।। रेडि भूराने यह नाति। ७९ कृष भाषनाति॥ कार वस विवाद ला किनमें शे भार का दिशा क्षः। कामा दिन्य भाति ग्रहा नृज्क शा लाजाः स्र भाखा हतः। भारमक्षेत्रमभागा सर महा भारतो हित्र थारिख। श्वात्मार कर्य छलान पृष्ठिछ्ने ज सुरका मिना ठी भ मि ॥ ॥ ॥ ॥ जजभग्रमार्थः।

भारीत श्रक्ष भीभाष्म जाककर्ण हि अन्ध्रतः।
भूतिः श्री मक्षता ठार्ष्म (लाका व्यक्त कार्य क्रिय क्

भ्रुधम् गाभा क त्यम् क्यम् वार्तिनाः। ठकु छे । भेषाना का शिकान् (स्वान् क्व अर्गा।।।।। त्रक स्यक्तांत्राभ त्यांकांत्र कार्यकांत्र । भाक्षिय भारमा भीठे दार्का त्या भूकाल ॥ ए कीरे वाइ: भा समाग्र श्रीका सम हात । प्यः जित्क म्यूनः माकि उद्यकाली छ विद्यका॥ ४ শ্বনপর্স্ক তারীতি আতার্য: সাম সাদ্ক:। বিশাত নামতীতীর্থ সামবেদ মন্মো হাতে ॥१ তথ্যসীতি থাক্যক জীবাজ্য সর্মাজনো:। यकी जाव विविद्धिमा नाभा मू का नम् कु कथाए।।।।। ज्ञामभव्यकः। द्विममव्यारं ॥ विशेषः सूर्किमिग्जाला लाउर्धन योः भूषः। जिम्मन्त वा जानाथः (मूक्र भिष्ण भत्ष्या ॥ ।। जिम्मन्त वा जानाथः (मूक्र भिष्ण भ्रम्भ भ क्य के अर्स लाति वृज्या ह्या ठ विक्रण ॥>॰ প্রকাশপ্রস্ক চারীতি ব্স্তামলক মণ্ডক:1 आष्टार्यः क्षिष्ठ स्व नाभा (उदः स्यक् स्थक् ॥॥। भागः भाषा मधा श्रीर्थ कात्यमः भभूमा हुछः। भश्वाकः के ख्याऊ अजार युक्त मण्डक ॥ भ

श्रीभ जेयतमिगा मर्थमाइ।७

हेखरं श्री भठे: त्क्रच न्याला वमहिका स्रभः। (माया नाराम्को (मही मार्कि: श्रूमं भिर्त्रान्डि ह ॥ १०) भण्य माया नम् वार् श्रीर्थ थ्वा लाक निक्ता। भागमि खाठकार्या (वाम १०१४न भणकाः। १३८ भागमि खाठकार्या (वाम १०१४न भणकाः। भश्याका का का विकास का स्वान्ति ह ॥ १०।

8 कवेर्य स्वाक्ष्य के क्ष्य अवित्र श

निग्राम मक्तिल्याः म्लारी भेष्ठे देखल। वज़ार (दवजा जय जाभ त्कयभूना बू ज । ३७ डीर्यक पृत्र उदान्य भाकि: आ भात्र ताहि ह। क्टिक्सू अका शांषि आठात्मी विन्ध्सम्भकः॥३१। সর্পতাত্তি নামানি সার্ভী ত সূরী তি । अन्ध्रमात्मा प्रतिवाद्वा यज्दर्कम प्रमाह्न : ॥३४। भश्याका के किथिव भर् अकािभी नाभवः। हर्गिक भरेगनाक (वदा दिवा नह भाक्यः॥)व। भश्यकग्रि आठाका डेका श्रीर्था स्थाप्यः। आठार्थ लिका भठवातः भर्यालातम् विक्षाता।।१०। मग्रमामः भूर्वभाग्य दसामलक व्याटेरको १

णश्चनामासम्भ त्याकाः।

কীঠত পাতক মিকুজ থার্ফতে মেন জীবিনাত। भ, समारंग त्रश्यक साइवायः म द्रका ॥ १० (अला विस्में रेक्स वार्य का विना । भः समात्म यकीना के त्या यातः भ देखाल ॥-१४ शृति भारम्य क्षीर्यर्गं वार्यत त्या कितियाः। भ, ज्ञमार्गा त्रश्राय अ र्वाय्यायः भ क्राय ॥ १० आनत्मा रिविणात्मा व्या रार्यक त्यन कीरिनाः। भ अमाराग यजीना क्षानम् रातः भ ईकारा ॥ २७। यात्रित्य यात्राक हरका होता हात्रा विकारित अत्रक्षाक मह ह्यादि लागानि किथिकाचि रहे।।रगा तुरी। अधीय जामांगा त्रश्याक क्षंत्रक कंत्रक । आधार्स लास तमेनात्र एक भी फालन जिस मारण। मक्षमस्क्रामां : भाषायः मञ्जूषाः।

भ भारताय कामी आह भम नामालिस भीवता १५।

र्किलाभः त्क्य धिक्क प्रवाभा विवस्तः। (नरी आया ज्या ठार्च नेन्द्रदः भादिकीर्यिषः। ७० भिर्य भूमान मन्द्रायः खेलाका मार्ग भर्गः कर भें दांथ भाष्य्य भक्षात्रक भर्मा न्यारोह॥ १३। शक्षे प्राव्यति ठाभार्य भव्भाकां भर्ताभग्न्। भएभखावः भाष्यम्यः भन् त्यामधन् भारत् ॥७१ ত্র সরোবর প্রাক্ত সর্ম ক্সো ২০ দেবতা। त्वी भागानशी भागा भगठा र्य ल्डलना द्र्यः॥७७ महारा चिकला भारा सक् भार्मार्थ स् भर्गः। भः समारा रेश वर्भव मी प्रायाः भारति भए। ज्यान् शृष्टिः त्कव भा दिन्द का भा र भा पत्रा। मिवी छिन समाजिः भगमाजार्थः भम्यतः अनः।। अळ्लाम् ययन जीर्य प्रमध्य विनामन । भूमी नम् कार्य म मार्य छ व ठा खर्य है।। ७१। ভীর্থাশ্রম বনারণ শিরি শর্বত মাশরা:। भंत्रभुषी अत्रिष्ठ व सूत्री नाभानि रवे मुना ॥ ७৮॥ अभकाकाकाकाः॥

चिरानी अञ्चल के विश्वयां अञ्चल। भागानवीत्र नामा में देशक नामा में देशक ॥१०। आस्य ग्रह्म (कोट भागा भाग विव क्रिंड॰। याजायाज विनिर्भुक (अजमाञ्चय लक्षने ।। 8 · ।। भूत्राम निर्फल्य भारत यमवाभे कर्वाडि यः। आमावक विविभूति वयनामा भ डेटाल॥११ अराक्ष भू भि ला निक भागम् अन्तव बता। करता खेत्र अर्का भिन् भर्ग नामा अ देखाल ॥३१ वालाभित्रिवाद्य निष्य भीषा स्थान ष्रधानः। शसीता ठल यूकिन्छ भित्रियाया अ उठाउ ॥४७ याभः व्यक्त भूलायू त्याटाग्रा ज्ञान शावला । भाराभार विज्ञाणि नर्सन यह सकी छिए:॥११ यश्वभागत गसीरता कानतपु भानि गरः। भगीना लेवल थाल आत्र अ धकी छिं। ३६ সুর জান রতো নিত পুর বাদী করী শর্ব:। भिन्न भागत् भात् भा उधानः भत्रभुष्ठी ॥ ४७ विका गार्व भ भ मूर्गः भर्स गार भारति खारु । হ: এতার পদামাতি তারতী ম প্রকাতিত :॥ ११

জানতথ্বের সংস্থা: দূর্নতথ্বে দারে হিত:।

মর্থক্ষরতো নিত্ত পুরীনামা প্রকীর্তিত: 18৮

বৈতি দলনামাতিধানানি।

শ্রামঞ্জরাতার্য সাল্যে মঠায়ায়:।

स्थिक की प्राच्यामीया अस्य क्वाकि माम्राः भ भ भीला ठाइ भगाई भारत्य जा जाभ ध्यम्।। भ भ भीला ठाइ भगाई भारत्य जा जाभ ध्यम्।। ठिमभूती ठाडि जाम्माची वाभ र्यक्षिचे भ छ

দাণো মহাতীর্গ্য প্রমান রুছি।।
আত্রমান ক্রমান ক্রম

रेख्य এক এব ॥ रेडिभग्राभाग सम्बन्ध ॥ অশ্বান্ধণ তেদাः।

কর্নাইকাদ্রাবিড়া শ্চ মহারাপ্রান্ত্র শুর্জরা:। দ্রাবিড়া: পঞ্চাবিঞ্চাতা বিস্কাদক্ষিণবামিন:।ম মারপুতা: কান কুরা নৌড়া উৎকল মৈথিলা:।
পঞ্চ নৌড়া ইভিস্ফাতা বিষ্ণু স্যোত্তর বাসিন:॥
ইভি সম্মাসাধি কারি দল বিধ প্রাক্ষণা:।
সম্মাসিনা দ্রোদি মত্ত্বাদ্রণ প্রকরণ মারতাত।
তল্পদ্র প্রদাদি লক্ষণমার।

प्राचन क्षेत्रक, प्राक्ति वार्य व्यक्त प्राचन कर ।

प्राचन विषय, प्राचन कर प्राचन व्यक्त वार्य वार वार्य वा

मण्ड रोगरा श्रमा यह भगन्य कि ।।७ म्रेम्स्य प्रम्थ प्राप्त नाया कि ।। १ भग्ने स्वाप्त के स्वाप्त के ।। १ भग्ने स्वाप्त के स्वर्ण के स्वर

हारां स्थित स्टब्स न स्टब्स न र्थमास्य मा । १११ यक्ष मत्त भाषा मत्ता मुक्त मारास्य भाष्यास्य ॥ भाषाम् भाषा महत्त्व क्षा क्षा स्वर्थ भाषास्थ তম্ম চাত্রে চ মূলে চ প্রান্ধি জ্ঞান তু ধর্মে।
বিচন্ত্রারি ষড়কৌ থা কর্মুল্ট শ্চ মমার্থিন।
নকুন নাতি রিজ বা হিয়েন মূলতো প্রক্ষা
থালা নকর্ত কো নাধিকো ন প্রশাস্যাত।
কলিকা একা লেড তর্জনী বিকু দ্থাকে।
মহ্মমার কলিকোন তর্জনামহামা: স্ত্রা
ত্রমান্ধ কলিকোন তর্জনামহামা: স্ত্রা
ব্যাম্য কলিকোন তর্জনামহামা: স্ত্রা
ব্যাম্য বালিকা স্টান্ধ না ম্রোব্দা:।
সহাম যা কলিকা স্টান্ধ না ম্রোব্দা:।
সহাম যা কলিকা স্টান্ধ না ম্রোব্দা:।
স্থাম যা কলিকা স্টান্ধ

भग निक् भ गायादाः मूक्ता रिनर देळाल॥॥॥

म्खनाभाकार्ः।

क्टिशि: प्रम्भ्य, यक, नार्यांत्रण मणाक्रिशि:। ध्येत्वा म्यालि म्

नसमेश स्थापार ॥

यजीना विभावा मत्या भारका भारका अध्या । भारा श्री ध्रमालन यक ताकुन भारिक ॥ > 8 । ।

अक्ष आप के रेंकाल खायवाये में भी। रक्तिक केशांत्र कार्य तस में हा शिराखा कर व्यष्टिया अंग क्या अया आप अधिक व्यक्त वर्षाग्रान्यका नामांख तेस्र में हो मान्य का भारत जामा अरे विद्यामा हिं कर्त्र मुल भाव छ ।। দ্রত কাজাম সূত্রেল তে প্রতি সং প্রদায়ত:॥ ১৭ थकादाकात भकाता धंभाया छि "छजूत भूष"। मस्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।।।>> এক শান্ধি বিষ্ণু শান্ধি কর শান্ধি শান্ধি । ज्ञाय हिक यानि यह कल्मजी त्या विशान ।।।।। अक्ष भूषाभा धनाग्रकारिकाः।

त्याने से सामान्याका कर्षे प्रमेश स्थानिक । १० व्याप्त के सामिक स्थान क्ष्य क्ष्य स्थान क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

ल्या। १४॥ भ्रम्भा अक्षेत्रक्त अन्ध्रक्ष्य भ्रम्भा अस्त्र भ्रम्था भिया। १४॥

কার্নাম সূত্র মুগ্র বিষ্ণ ।। १৪ অপিরা:।

দ্বি প্রভাগ সাধার কর্মানির। স্বার্থান সমান্ত্র ব্যার্থান সমান্ত্র ব্যার্থানি।

বন্ধ প্রত্থা মন্তব্য স্থা স্থার প্রত্থার প্রত্থা প্রত্থা প্রত্থা স্থার প্রত্থা প্রত্

असमत्रस्द् ठ मण्येश्वाः अकीरिनः॥ २१ नागभूषा द्वारायार्था (यत्रभूषा ठ मध्यतः॥ २५ ज्रीत्य म्लजाता ठ शर्या भत्रस्भूषिका ॥ २५

মজে শ্বিত মূর্যেশ্চ চতুর্মিশার্ড সক্ষরে:1001 দক্ত প্রশাস্থ্য ব ।

या अस्ति। भारत्या द्यः भूभन्ति अस्ति। धाराष्ट्रभणल जिल्ला काला मुखाल ।।७१ भागिताक् काग् म्लाम्ड राष्ट्रम् सु हि स्रुवाः। यागम्ल्या इसि लेखान भारता म्लः भारताम्छि ॥ ७७ कर्ममण्ड भीत् लाकान् ब्याम मारिश किछः। यक भण्डान मण्ड भण द्भामि भूकाल बूरिः ॥७॥। केंक्र भूयु लग्धार्थ त्या देशी महार्थि त्यामार्थि। अ देशी भाषा त्याचि या कि कि के के के वान ॥ ७६ मुखाः (महा निया निर्मा । त्या निर्मा । কটি পৃষ্ণণ দশুবস্কু সম্পর্ণ শেষতা: প্রকার্তিতা:॥ ७४ गक्रवीधानमा (म्याः निख्या मृत्य भीर्भ्छाः। अब श्रीभामितिकासि निक्षस्टिम्पा सि ।। ११। अक्षभूता किला मणः अर्क काला खिठ भएउः। जिकायायरेन लिव न त्नात्वा भन्त व्यार ॥७० । रेल

প্রকণ্ঠার মান্ত্রণ বিশ্রবন্ধ করে প্রকার: ।-

শঙ্গোদকেনাঞ্চাতর শত প্রদাবন প্রস্থসূ জেন কেশবাদি চতু কিশতি নাম ভিরভিন্ধি छ ॥ ততা প্রান্ধণ হয় স্থ দত্ত প্রতি পুরভি-পুরা প্রদর্শ ॥ প্রার্থনা মন্ত্র:॥ সন্মা মা লোসায়ো জ: মন্যায়ো মি। ই ক্রফবাজা মি বার্যপ্র: শর্ম মেত্রর মংপাঞ্চ ভারিরারয় ॥ ইতি

বিষ্ণুবন্ধে থথা চক্র গুলে শিবকরে থথা।
বৈদ্র বন্ধে থথা বজ্র তথা দুন্দে অবদ্ধে । শ্বিত
দুর্ব্বা ভিম্থ: মন্ প্রদাবেন দুন্দে প্রহ্ন।
কুর্মাত ।

अमाणातिय जिल्लेज याजः कृष्ण हिमाययाग्।
यमि जिल्ले ए स्राजित्यः स्राणायाम माज छात् ए ॥माय ज्यागः न कृष्णिंज यायर स्राले विशासनेः।
आठार्थं विश्वित्य भागे स्राज्याभी स्राज्ञित्यार्थः।
माय ज्यागः न कृष्णिंज स्रामात्म याजः कृष्टिर।
यमिज्यागः ठेय कृष्णिर स्व त्रेय ठ शाहरार्थः।
यमिज्यागः ठेय कृष्णिर स्व त्रेय ठ शाहरार्थः।

প্রমাদেন হও ইত্বা যাত ইন্ধো ন মান্য:।

মত দ্বা তবে হ্রের: মান্য নাম কার্যেও ॥ য় বি
প্রমাদান্য দি স্কাণ আছতে প্রদান কর বি
প্রমাদান্য দি স্কাণ আছতে প্রদান কর বি
প্রমাদান্য দি স্কাণ আছতে প্রদান কর বি
প্রমাদান্য দি স্কাণ আছে দেব মত্র

বিশ্বিপ্র প্রস্কাণ মনতে দেব মত্র

বিশ্বিপ্র প্রস্কাণ মনতে দেব মত্র

বিশ্বিপ্র মান্ত মান্ত বি ক্র সাল্ভ ব্রামান্য।

বিশ্বিপ্র মান্ত মান্ত ম্নান ব্র বিক্র সাল্ভ ব্রামান্য।

বিশ্বিপ্র মান্ত মান্ত মান্ত মা

इस स्थल भक्छः भूमान ब देस साम्पूर्णताभका। देखि ह्र प्रायम देखिक म्ह्राप्तराव। अधिक प्रियमिति वीच गास्त्रीणण जलेव ह ॥ १६॥— देखिका जिके स्मार्ग नारामे जगर माला महारामित्राश दिस्सा स्मार्ग महाल ॥ श्रीभूख स्मार्ग परिस्ता स्मार्ग नाराम ॥ १६ विश्वास्त्र भूख प्रमु नार्मा महाल ॥ अकार्या कार्यभात भूख प्रमु नार्मा नयः ॥ १६ नह्यास्त्रात म्रु भ्रापाभः मर्कादेव विशियल । न महार न दिना गास्त्र मिश्र क्ष्मण्यम प्राः ॥ १६॥ विश्वास्त्र भर्म विश्वासित ॥—

দিশা মুরাদিয় ক্ষিণ্ডে ন কন্চিদোষতাগত্তে।। শিকাদিতি র্বিরীতে পি নীত এব ম আজানা ॥- रथ मामामि विक्थि देखि भिक्का वमिछ दि। ग मत्या विना भाक्ष् म्यूरामा मि ग्र्शाख्या। रेखि। रेम् भाषा विस्था वहना ।।-

প্রধেশে নির্গমে চ বিশেষ:।

মাতা দিয়া সমো দন্তো ব্রাহাত প্রকৃপাত্যা।
দাখি সাধন বেছু শ্চ ব্রিমুদ্রে নমো শ্রু তে॥ ४৮

१ मान श्रा वार् वार् वार मान म्स धूल म्दान्यत्। जा निर्माण विद्यानित् स्क्री निक्क्नेखा श्राहि। वार मान के मसाला भ्रावल म्द्र क क्रिल। भक्षक्रिम्द्रीक के रेकि लोगक आह ह ॥ छः जीर्ल मस-लाक्याकृत्।

প্রার্থা প্র বাদকো দল্ড মূলা প্রাক্তা ম বুক্রমার।
আসং সম্প্রাক্তি করা দল্ড মূলা প্রাক্তিক ।
অর্থ নিজি দ্রিপ্তি: করা প্রান্থি বন্দাদ পুক্রমানে।
মূলা দল্ড মর সামাঞ্চ অয়ে শিরাসিধারত্বে।
দল্ড করে সামাঞ্চ ন হুম্যা স্বান্থ্যস্থানি।
দল্ড করে সামাঞ্চ ন হুম্যা স্বান্থ্যস্থানি।
কর্মা। আর্থমুরা ততো বধ্বা দল্ড মূলা তু তর্মানে।

ততা দশুস্য মধ্যে তু প্রশাবা বের ভর্সংয়ত । ৫ ৪ বিষদ্ থারা তথাত্রে তু ভর্সায়ীত্বা মমুন্যিত: । । বিসাদি। অন্য হত ॥

भूता शिक्षे हि द्या त्य म्ल भूता जू मूर्क जाः।

श्राष्ठ व्यक्ति गक्षर्वा भाषा विके हि भावताः ॥ वदा

भग्नाक क कृत्य जावा नाव भग्नाक मार्यकाः ।

त्यभाक क कृत्य जावा क्र मृत्य भग्नाक हातिना ॥ वदा

भगायो भृत्य क चारत जू भाषा द्वा हिवा त्रकः ।

भग्न व्यक्त व्यक्ति भाषा व्यक्ति हिवा त्रकः ॥ द्वा ।

विभिन्न व्यक्ति भाषा व्यक्ति हिवा त्रकः ॥ दवा ।

व भावि भुता हाति हाति भाषा व भ्राष्ट्र हिवा त्रकः ।

व भावि भुता हाति हाति भाषा व भ्राष्ट्र हिवा त्रकः ।

व भावि भुता हाति हाति भाषा व भ्राष्ट्र हिवा त्रकः ।

व भावि भुता हाति हाति ।

व भावि भूति ।

व भावि भाषा हाति ।

व भाषा हात

বিনা দেখেন পাত্রেছু ন শক্তেন্সাতি পত্রম:। তিন্ধার্কলৈ দুখে মেক° নোমপাত্র ক্ষান্তন ॥৬०। সৃষ্টি জ্বেভি লোহ:। অতি:।

मण विश्य भूत्राता जिक्का मामना थात्रात्। वर्षि मण भावकाष्ट्र भूत्रातः कार्यात्र ११७०० भव भावासात्री किल्ला कार्यात्र ११०००

अमल्डा न शृह गाळ् मिश्रू तक अवगाम्ल । गरिगाळा९ माजग्रद मानागाम नान हरहर।।।।।। कं रेषि॥ गर्गार्थमण अभग अस्वायाति उद्गुक वार्गवीत्र।।। मत्ते अम्भूरगाष्टिक भूमा भवी न मित्यमः। म्तु विक्रमाम अध्या मिवृद्धिः अव्यामल ॥ ५७ त्रामा में के की कि कि कि विकार कि वार कि का। मण्ड धम भरिए सिक्षः निक्षः अव्यू यात्व ॥ ७४ रेत म्मार्के वात रेवाध त्यार् माम्सिर्वे वार् ।-अभ्रमाणिण कथी मि मिषूर्वत्मा वि अभूती। अर्जवास्मन गाउना स्थ्रक्षा स्थापुषः॥ ५६

धार्याक्षण ग्राल्क्य महित कार्याक्षण कार्याक्ष

श्राचिव वायू भूताल मण्ड क्यान आयू कि

থকীনা প্রায়াশ্চিত বিখি:।

प्यथात्य भवान्यस्य ।

वित्राच्यात्म स्ट हत्यात्म प्रविधात्म मिलाव्यात्म स्ट हत्यात्म प्रविधात्म मिलाव्यात्म स्ट हत्यात्म प्रविधात्म हिलाव्य क्षिण्यम् अस्त ।

वाम नात्मि ह ह्यात्म विदे क्षात्म सिलाम्यातः।

भाव्य म्त्यामिक हेर्या त्मात्म क्षिल्यम्यातः।

भाव्य म्त्यामिक हेर्या त्मात्म क्षिल्यम्यातः।

भाव्य म्त्यामिक हिक्यः त्मात्म क्षिल्यम्यातः।

भाव्य म्त्यामिक हिक्यः त्मात्म क्षिण्यम्यातः।

भाव्य म्त्यामिक हिक्यः त्मात्म क्षिल्यम्यातः।

भाव्य म्त्यामिक हिक्यः त्मात्म क्षिल्यम्यातः।

भाव्य म्त्यामिक हिक्यः त्मात्म क्षिल्यम्यातः।

भाव्य मिलाव्यात्म हिलाव्यात्म हिलाव्यात्म विद्यात्म ।

भाव्य मिलाव्यात्म स्ट हत्यात्म प्रविद्यात्म स्ट विद्यात्म ।

भाव्य मिलाव्यात्म स्ट हत्यात्म प्रविद्यात्म सिलाव्य मिलाव्य मिलाव्

म्हन्ति कर श्रात्य व्रानाग्राम वर्ण हर्ष ।

अवान्यां के प्रमाय व्यानाग्राम व्यान्याक ॥ १० ।

विक्तियं मृशिक वामि वद्यीग्राम क्ष्यक्ति ॥ १० ।

विक्तियं मृशिक वामि वद्यीग्राम क्ष्यक्ति ॥ १० ।

विक्तियं मृशिक वामि वद्यीग्राम क्ष्यक्ति ।

विक्तियं मृशिक वामि वद्यीग्राम विश्व ।

विक्तियं मृशिक वामि वद्याग्राम विश्व ।

विक्रिक मृशिक विक्र ।

विक्रिक मृशिक वामि वद्याग्राम विश्व ।

विक्रिक मृशिक विक्र ।

विक्रिक मृशिक विक्र विक्र ।

विक्रिक मृशिक विक्र विक्र विक्र ।

विक्रिक मृशिक विक्र वि

মিক্থ বর্জ তদা শ্নামাৎ প্রাণ থাত্রার্থমান্তঃ।
অনফাথে চাম্পরারে ন বগ্লীযাৎ কদা দ্রন। গভ ঘর্তীনা ঝ এয়াে দ্যোএক স্থানেন চাক্ষিমের।
কদা চিৎ স্থামিতা শ্রেষণ সুন সুদ্রা বিধীয়াত ॥ গ৬
তান ইতি লিকঃ। অব্যেশ কর্ম্যা।

হয় সিত্ত দলে তাতালাত র্বধানমেবন মন্তবি ॥ জলা বারাদি সামিলত তুতদ্যেতা বহুমেব না প্তি ॥ জলা শ্বরাদি সু ক্ষিণ্ডে ন ক কিন্দোর তাল তবেদি সুক্তরাং ॥ তমাংকেবল সুমি স্যামিত দ্যু ক্রেবাজান স্চান্দালাদি কৃত ক্বধানমেব দোধাবক্ ॥-তবেব তোক্ত প্রায়ামিত মিন্তব্য ॥ খার্ড

मिन्डि ध्यमीआ र 1.9:

इर्वाणाया भूर्या वा भूर्यः मालिज वर वा। काषाग्र म्लभाटान यिनः म्ल्य भूषिकित्। वागामि म्लभूक म् खळाणकाम वाभ्वः। महयुक्ताने भीराग्यः भ धिमन्द्री कर्याभ्वः॥ १०

स्मिक्षे क्रिक्षे क्रा में यह । अकाराबः।
अका राखा राष्ट्र स्मिक्षे श्रिक्षे नक्षे व्यक्षे श्रिक्षे नक्षे व्यक्षे स्मिक्षे भ्रात्मे नक्षे स्मिक्षे स्मिक्षे

किर्मिक त्यान अवाम्माजियमिषः ॥

व्यक्मत्यत्र भेस्म्मार्। जनसम्बन्धक, कार्याम्माः। इत्रियः हाक्ष्या,। जन गाह व्याप्याप्त हिस् रेक्त।।

र्मात्यामायक स्ट्रिं स्वास्त्रक क्राप्त्रम्थायकः। भूमः स्वास्यमायक स्ट्रः स्वलक्ष्वर्॥।। अन्मान् हरू भाग दिख्रे वाइ क भक्षिता । वृद्धि अं कार्य । ह भस्कि। दिश्र्य क्यर्य वार । जिस्मानिक कर्म लागू क्षित्व न कार्य वार ।। वृद्धि भागभाष्ट्रभम अर्क्ष ल्योष्टर्भ मुख्य अर्का वार ।। वृद्धि

वजर कमत्यन् कर्म ।

बेर्क मृत्य दिक्का राम क्रिक्त क्रिया दिक्का ।

निक्का रुम् न्या भारती विकास व्यक्त क्रिया क्

मास्मर्भेय, ब्रजा र्जक, मक्षे माय, त्रे संस् । में ज्ञिका द्व क्या जित्र में में, जैसे मूर्ये । भवत्तका रेव क्या जित्र में से हैं। जिसे मूर्ये ।

अ' भाक्ष ए क विश्विमा भाग गुहि सुरेजमा ॥१। দলেঅগ্নি:করে অগ্নি প্রস্কাগ্নি শ্বত তথ্যৈত । ल्या यह स्था व्यापा क्ष्य हिं। यह स्थल्य ।। रा क्राव्यक्ता अहा की व्ये की स्वती अञ्चला हुव । भराजिम भराजीय मूल्णान्क भरायंत ॥ न। भान अस्मादिक अर्थ प्राथय का संग अय । न्यास्याप्त्रम् विष्य श्रेष्ठ द्या क्रमण्डम्: ॥>० प्रकाण्डण ल्लास् जान्त्र १७ जिल्लास्य थार्ड भूनाग्रामा (यन अर्थ कधी अत्रा हात्र ॥» कमलाम् नाधाकृत्मे जलाक्ष्मन प्रक्ति। अंग्रेष के खारंबा नापा श्वीकारंग के कमश्रेद्धी ॥१४ भर्मकल कृत्व आर्ड १

वाभ जातान भ भक्त निशासेव कम्प्यार्थ তি ক্ষা কু মতি সতত যতি নিয়ত মান্স:॥১৮ यात्रिभामः विमा जिक्का जान शाता जलम्या ।। মসুতো নরক থাতি বারি শাশ্র তাজেওত:॥ ১৯। भ्रमश्राधा यमि भागानि उक्किन्छ ज्योभांभा क्षा अर्विषाताय जिक्नुना ज्यक अर्थ भगविष व्यक्षित्रमाति माग्राणि सक्ष्यं द्वास्यान्यूति:।१०। ा नार्से से के प्राचक खर्म प्राच के में गांते। भ्यांग हिंगू रहेर यालः माय विशे गारा। जानार अहिः अहिः आपात् अहि स त्यान्सनार

र्मित्रं भेतर हु।: मा है, यार्ने मा श्रे विश्व । ११। द्वमःभेयांते, आक मका च लक्षेत्रः। क्रिक्रि॰ मास्मामा के रहेन र के जलेग्वड ॥ १७। र्मां भेशिया का है, त्या मिष्टिय ला में से । मारम्भाषा कालमाळ विभरा राविमर्गनाए॥१४ त्रकेष्ट ॥ जवार्ते संक्राजक वृर्वेचाजक र्तेय. यं। छ्यादियाङ भावानि अक्षयं (वाष्ट्रायाः ॥१६ उउ:लोठ उउ: भ्रान जा प्रात क्रिम दिक । भागा स्तृ था । पूर्वन् लो वर न तक डाल ॥१७ अगळ। रिस्माक मिला लायु जुल अनेअशानिछ। भूनाग् भानभावाक गृतीगादि या । अमा । ११। কিলালেন চরেছিক্ষা পানিনা শকলেন বা।। अजळ॥ याष्ट्रियायाति भ्रामु प्रमानिष्ठ। आललाः माहि खंखका भागताला नव्य कर्मने ॥ १५ ज्यान्यकात्व भारात्व क्रिक्ष ॥ চাল্রালামু প্রফারে জাশ এব ॥ আহি:। भूमार्क लायूफ भाग वेतंय जाउदा भला। नाम् वाम् करा क्या काम नाम नाम निक करा ॥११

অত্যা সাহ্মাকুথেত থর:। বিশ্বার্থিত ।দ

সালার্মর পর্লেন নারিকেরে: কলিমকৈ:।

সানাঞ্চ দলাধারের কাররিত ম্নার্ম:।

বামেনো দ্বাত বাসামের কদাত্র সংগ্রে।।

কৈনার যাতিস্থানি প্রদান বিষ্ণু মোরিরেরি।

মৃত্যন্তরে লি।

यवभाष्ट्रक भर्मात्र कृष्ट्वा भर्मभ्यो भूटी । जिक्कार्य भर्यादिक्कू सिज्ञाभ कर्ना मिन ॥७॥

अव भ्राक्षभग्रमित जार्न भर्मित्र ठ पण पण जन जिस्स लाजता भरमाभित्री

क्षि त्यास्य ॥

পারাম: মছিথেতাখ্র দর্শা দার মা ক্রছি হবেও।।। কাসম, মাসম, বস্দু, প্রাগা দারা, ধগলানী:।

গ্রুম্: শাক তেনেন পাত্র তেনেন মঞ্চরী। নারী পুরুষ তেনেন রৌরত্ত নরক প্রজেনিতি॥

স্মৃতিবাক্যে থকে: সাত্র তেনো কাম্যাত:।।-

A 201 570 M.

श्री १०८ है खेर তিবিষ্ণ দি মাজিপাত্রণ। नार्कामक, र्राक्षित्राप्त । तानवं क्यनाव लिका मंद्र भागाताति॥ जवन्यंग्रेग्राजकभा य श्वीकाख्या भव्याय श्वीकादः॥ অত্তর সাত্রমঞ্চ তথেৎ সানি দ্রেন নিতঃ গৃয় न एसिडि भाम्न अश्रेक्षत १८ य छ भाग छर वाका वाक जावा क्षत्र का वोधानं नासिक्षिक প্তাए। একক্ষেব পাত্রখ্য থাবজদীব মবস্থানা মণ जवात्कि जिंक् ॥ ७७॥ नायभिक्छ त्या वि धिक्ष अञ्चान्यान् भार्।। असमात्व रिवर्षण रककाक स्नुख्या । वाजल जास व्यावल ज्याय नामि वे विधिः॥७१ प्रायम्बे क्र मात्र में वामिष्यक्र मात्र में । प्रस्त् जिक्ने ई स्था इस्मा जर महि ग्राकार १६ रेडिकभएल्यानिभाग अक्रान ॥

ज्य काश्यायम् सक्याभाइ।

ः लोहिक्युद्धत्वधकः ॥

ले जि गर्ड अभूकु क ते जिल राष्ट्रिक भिनि। विगाचासिक वस्त्रेच जारा भाष्यक मन्ने छ।।।। मक्ल अः अभूर भन्ना ते विका प्रकृषिभीन ज्या शिक्ष ज रास्त्र ना भारत मिनी। रा ধাতুনা প্রবারোগু থেলিনা শুক্তি দ্যক:। ले विक्य नमस्य परीना भाक्षमायकः॥ ।। वाद्यां वास्त्र । कारण नाम वर्ष का का हिए। व्याका याथ अमा त्याक थाषू तक कु व्याणिवा (कोमीना क्राम्य पाभः कक्षणा रिवा हिनी। मार्क ठामि राष्ट्रीगढ क्या माम्यभ भ गई॥६ यमिता क्रांक जागाम शिक्य भित्र भारत शहर । नव्क दोव्य गत्रा जियम् त्यानिष्ठ जायल ॥७ को भीन पूराल कन्हा म्ल वकः भारत यदः। এতে পর্ম হু সঞ্চ নাধিকক্ত বি ধীয়তে॥ १ यिनीर्भा न्य भाषात्यय हिलानि प्राचिषा निष् क्षाक्ष वार्वाभा शावरम्का प्राक्षिकार आर्कि क भक्ष इस्डिर्ज विश्वाला विशेष्छ। दिय नि-ज करी भूय दिश्वनि ज कोशीन

ত্তি হাতি হাত বাহি। সাহিবশ্ব সমূত্ত ।

ক্ষেত্ৰ প্ৰতি হাত কাক্ষ্যিম সমূত্ৰ ।

ক্ষাত্ৰ প্ৰতি হাত কাক্ষ্যিম সমূত্ৰ ।

কাদিনত কিক্তে হাত কাক্ষ্যিম সমূত্ৰ ।

কাদিনত কিক্তে হাত কাক্ষ্যিম সমূত্ৰ ।

কাদিনত কিক্তা ।

কাক্ষ্যিত কিক্তি হাত কাক্ষ্যিম সমূত্ৰ ।

কাক্ষ্যিত কিক্তা ।

কাক্ষ্যান্ত কিক্সান্ত কিক্তা ।

কাক্ষ্যান্ত কিক্সান্ত নিক্সান্ত কিক্সান্ত কিক্সান্ত

সুশ্রক দেব বস্ত্র প্র মালা সূত্রণ তার্থের ত। সন্ধ্রা দেব বস্ত্র প্র মালা সূত্রণ তার্থের ত। বাস্থ্যিত লেগু:।

কাষায় কম্বল থেবে হ্রুল পট্রবস্ত্রক । বাজা তপা আ শুদ্ধি: স্যান্ত সন্দের কদা চর ॥ । রিষ্টিদ্ধ বস্ত্রাণি ॥

হিত্রবাস্থান্ত মার্মণ মন্ত্র কার্মাস সতম্বর । প্রাথেশ জ ক্যা তোন্ত নত্রামা সাতম্কর । হিত্রবাস্থান্ত মর্মার্ম কার্মাস সতম্বর । ज्याकीत्राह्य क्रान्य अस्त प्रदेश्य ।। १७ आदिक क्रुं विक वस् पृती पृता परे ज्या। भारिक क्रुं विक वस् पृती पृता परे ज्या।

অনুষ্ঠান বিশেষে ধারণ প্রকার:।

আদ্বাসা দলে কৃষ্ণত প্লা তমন দল।
শ্রহ্ণ বাসা দলে কৃষ্ণত প্লাত মন দল।
শ্রহ্ণ বস্থা তার আর্বস্থ মন্তব্যর্মবযুগ

धात्रांप्र ॥

র্ম প্রার্থিত সমার্থিত প্রত্তি প্রার্থিত প্রতিত প

বস্ত্র প্রিয়নিত থস্থা নিষ্ক প্রত্যাত মৃত্যা।

থথা প্রান্ত নিষ্ক প্রত্যাত মদ সাত্তবা।

বাম প্রাধারে নিক্ষিক স্লাস্ক দ্বিরাসমে।

বিজ বস্ত্র প্রক্রণ। অথমর্ক কর্মো সামুক্ত মুদ্রা প্রাক্ত কর্ণায়ার ।

করণায়ার বিজ্ঞানিক কর্মানিক ক্রিয়ার প্রক্রা প্রান্ত করণায়ার ।

করণায়ার ।

করণায়ার ।

করণায়ার বিজ্ঞানিক ক্রিয়ার ক্রিয়ার প্রক্রা প্রান্ত ক্রিয়ার প্রক্রা প্রক্রা

र्कानाम शिला वथा नाशिका भूग अर्कलाः। लारक्या स्युक्ति लागे मेरा का या हिया भीवा ॥ अधार्योकि या त्रस्थाए भ्रामिनी भूषिकायन ॥ डेव्हिंग एके भूत्वेत यह अल्यापार आविशानिती॥-१ था अविनिज अधी सिवभः वाधिनीभना। क्रायमीक्ष नेपाला मन्त्रेग्री करंगी मना ॥१ भक्ष कृषा भूषि दिया भूग जर्म । অব্যালার মুদ্রেয় মন্তিরোপ্রামিতা মতা॥ । प्यवागाः भए शामि नाभः भारभक्षी प्रक्ति। वामार्श्वरेक ते मन्ध्र ने किया प्र मेहिया।। द क् ज्याजनी ज्या मुक्षि भ भूके जर समानदार। वाशार्स्क मिना शिक्टाः म्र मेवाः में समाधिकाः॥१ मिक्ना अस्थे भारतिया भारतिय भार वस्त्रो ह भ॰ भूरमा कृषा भ॰ लागो भ॰ श्रमातिलो ॥१ कार्यका अस्क माला में मित्रा क्रमा त्रिका क्रमा त व्यान्याञ् भूत्यो इस्ति भ्याजा वृ प्रान्त्वार्श्वाः। निर्धात्मकाम र्याः मः न्याम समार्थि ।

গান্যমুদ্রেয় মুদিতা বিকো: ম ভোষ করিন। ১। হয়েত্ব সংম্থো কৃত্বা মন্নতা তোনতা প্রুলী। তলাক্ত নির্মিতাপুর্জো মুদ্রেশ দায় সংক্রবা।।>। आत्मानमाछि भूगा श्लिके किकी नाभिका भूनः। তথেব তর্জনী মখ্য ধের্মুদ্র মধীরিতা ॥ ১১ ॥-অর্মপ্রকরণ কুর্মা ওয়া সাধক সওস:। राखे र विभूल्ये कृषा ग्राचिषा ठ कविष्टित ॥॥ মিণ প্রব্দানিকে শ্লিষ্টে শ্লিষ্টাপুষ্ঠকরে তথা। भस्यमामिक विष् की सका विव काल श्रेष्ट्रावि यहा भारूष भूषान्या विक्यः अस्तिष विद्वी। অকোন্য প্রতিতাপুষ্ঠ প্রসারিত করাপুশী ১১৪ भश भूष्यं भूमिज भाविभी कराल पूरिः। प्रयाजरा दिया भूता प्रवा पाम कर्माना भी रिषि भूडाश्रक्षण भ ज्या योनभार पात्रिजाः।

भक्षरगार जाना किए जानान महाभागत । निज् कार्क ह तिरा ह जाम मृथ मूही सर्गाः॥ ॥ দ্রকাণ সারিখো দানে থোগে তের বিশেষত: । এরু মৌন সদা তিষ্ঠান স্বাণি প্রাপ্রোতি মানব:।। ইতি মৌনকর্মাণি। অফ তীর্গস্থামিনা স্নাত: কৃত্যাদি । তার্গ ধার্মিনা স্নাত:

अस्म भू त्र के कामि प्रवण भाराना कृता कालाहकानः र्याह ॥ भाग्यमार हमा नव ধাবসক্তাহি। আমু দামু সমাসাং মুসা প্রক্ষা न्य राखे भारते शकान्य अर्थत हितायम नाभू माभागाम चरा रेम्बर कः प्याकामा रेखा व्या भाष्मे याणाक भूम अकाल्या ठभाग आ भाग चर्रा क्षेत्रा क्षर पश्च वर्ष प्राध् क्षर वस्र क होर का कोनीन कि भूख रिभूक भूखरें मश्रा जलाय प्रकाल कित्र्य वध्या कोभी ग भार्षिशं राज्य अक् स्मा भार्व लाश जलान छ काल्मा मलक्त्राम् भ्रिकान भ्रीषा कार्ष्ठ म तिला भूना जलान ठ प्रकारण अक्त को मीन

ততঃ শ্বাণ স্থিতাদি শ্লোকান্ পাঠিত্বা নাভি मध्र जलागन्ता नदी स्थित भ्रदान्। जिभूगण जला भादिक त्वद की स्विध्या अया अवन नयां रेखानखरं प्रक्रियं यह देखां या वाष्ट क्र ज्ञा अक्ष लके ज्ञानाजान, देवी अकामक স্থা বিষ্ণুখ্যাত্বা থথানাজি দম্ভা নৱবারণ শঙ্গ भूष या थलराज मित्रिभ विवाद देविभि मिक न नामां भरो। यह प्लाक्ष राजका कृति सन्दर थायन् यात क्रामम धमर्यने भाठात् ॥ उठ अभ्रजाभादि निर्णागभूषा अभ्यति। उ कृषा हा या म्लाजमिना कृषा मलक सल्लाम् क

ক্ত ভাত্তমা, ভাগ্রমাধূর্ণৈও ॥-আধি লাম নাম্ছ্র, বিদ্যাক্তার্ম বঙ্গ্রন সংলোক্ত দুখথ করা বাগোধ্য শ্রেক্তার্ম বঙ্গুন সংলোক্ত দুখথলা-করা বাগোধ্য শ্রেক্তার বঙ্গুন সংলোক্ত দুখথলা-করা বাগোধ্য শ্রেক্তার বঙ্গুন প্রত্যাক্তার্ক দুর্বি,

ब्र स्थानिक व्याप्ति व्याप्य व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति

দ্রাদশ প্রণবৈ রেই ত্রি:প্রাক্ষ্যাতিমন্ত্রিত।
দ্বাদশ প্রণবৈ কি: পিবেদ ভিমান্ত্রিত।
তর্পণ ত্রি: প্রণবত: আরৌ বেতা তিরাহ্বত:।
এক্ষেবেতিত থাক্যের সর্বাধ্য থান্যিতি বাহ্যত:।

स्यः विः सपर्वाययाणा । अन्या अस्यकः। कार्वाश्य क्षेत्र के विष्ट कार्य गावा वसः गृदः वधरा किर्ध्यः विकासिक । विधायकर्पाः भण्डाएकोभीना क्षमना मिक अकाल्प के जिक्तिए। शैव्यागाय एप्ट॰ 1 वस्राधारो भारतभूभ रहतभा भारत जिन्हित्भए॥ ज्ज भाष्ट्रभ भाषाका द्वामम सलेखामकः १ वंश्वकत्यार्थक्षिक स्वर्थित । १। मत्यभाता ह जन्मला द्वामना स्रमित दिलाः। उम्लिक एवः भन्धा त्याङ्य ° अभन्दि छार्गः। व क्षा अर्कर्का धाना वमन भागवन ह। শिव्याक्म को भीन भन् भने भे भी अलिए अन्यान विधि: शाक भीर्यानाः भ भूमाग्छ: I जीर्यशामिया मुल्ड अभवति लाएय धार्पय अकाराः। जीर्य मर्गात आसी मण्डात्यमे अभी वल्यन भ्वितः भागिन कृषा जाना मण्यू

लान वाद्या किलान प्रमें, स्वामाना भिया क्रमाहित के कि प्लारम प्रमें, स्वामाना मिया क्रमाहित लाम वाद्या कि प्लारम क्रमाहित

কুর্ফাৎ। নিগমে তদ্বিপর্য্যাদিতি। अत्यान असा का कृषि भूताय नराका कृषि लगाउ नक जितान कृषा अनिरान भूकि रामार्जन कृष्णि। रेकि कीर्थभाषिया भावः क्रापि ।-जयज्य भवेती ये त्याका यह नावि ह भृष्टि ।-नात्स भेर्ष्य काजामं हिन्छांमा काला हिन्। भार्षक वार्त्रास्य भारति क्यानि क्यानि ।१३ तात्स में ई प्त प्राज्यांत तातः मीति मना प्राप्त । किंभर् किंभिन छिडि कर्यक किंभभा थुना ॥२॥ रास्त्री हालगामार्थः तासः भयगं देखाल । महिक श्रिकार जार सामा जारा मर्थन।।। উন্মানে বিশেষা হ ॥ বছরাতী সাদ্পুর: সহযু ज्यारंग्रह। अवः माग्रेना द्या आर्थ्या भूर्यक भूरणाव প্রয়াণা ব্যরেশি চব্তমারি ॥ हस् छात् छत्ः भामान् भक्ष मामा स्जाभात्। चवक्य धराय. व्यक्त, मार्ता सेवच वर्ता ॥ १। गाचाल हर्ष यार्रे समक्षेत्र क्यं म्यं में मार्ने मेंगा क्रिकी प्राच गुष्टिक रूपा ॥१। প্রত্যাক্ত ক্রেক্স ময়াদি দেব শ্রীনাথ বিক্ষো তথ্য ক্রিয়ের ॥ প্রাভঃ মমুন্মায় ভব প্রিয়ার্থণ শ্রী বিষ্ণু যাত্রামনুবর্ত হিছে ॥ ৪॥

শ্রীবিষ্ণু থাত্রামর্বর্ত মান শ্রীনাথ বিষ্ণো সৃষ্টের গাজান্ ॥ সমর্ধা ডিরাম্বার কিশি প্রমান তথানি মা মাণ্ডিত্রক তুর্বন ॥ ড ॥

ইতিমৃত্যা মূত্র পুরিষোৎমর্গণ বিধি বংকুর্যাৎ।

থাসিন্দ্লেচ থতায় যা চথ্য চ্চতিরা।
নৈব তথ প্রশান্ত প্রাক্তার প্রাক্তিরা।
আইরেন্সৃতিরা প্রাক্ত: কুলাদ্ মিরুতারুয়া।
অন্যহত। দ্রুতিদেশার্থ সংগ্রান্থা শর্করা শ্রাদি
বার্কিতা। গা। চর্বস্থল মৃতিরা ন্নন সর্বি
গ্রহন দোল বৃত্তি।।

ওতেম্য দুৱাষে তু প্রত গুরীত মৃতিকা।

সম্পদ্যরাতি যো বিদ্র: মঠেলো জলমাবিল

তীর্গেলাক ন কুর্মাত কুর্মাতো মৃত বারিলা।

মৃতিকা গৃহীতা কীঠাদি রহিত ম্লো নিদ্ধাণে।
ভতদ্র দিশিনে শতাং কর্ণ সূত্র ধন্ধম্ম ম: ।

अमर्शि केप्र रिष्ट्र थियः त्रारिक वास्त्रा । भा নিখম প্রযাতাবাত সংবিদানো বিশ্রতিত: केलभूयम्शासिकु दिना कूर्णाम्दर्ध्य थः। >० जाती जू निकल क्यांद्र अस्म दिश भणा। इांगाधामञ्जूकाल्य वा शायाव यूनि वा हिए: 1 " जे खिक्क ९ र्था मन्या मन्त्र र्या यक्ष राक्षाः। नार्य कर्याचेत्र, स्रोत्र स्ता कार्यातं त्राक्तंति ॥॥ नाम्यायक्षेत्र, त्राच्न त्रती मन्त्र, दिखा रिंग्र ॥ र् অসকৃষ্য হ বিশ্ব তি কাঞ্চালাষ্ট ভূপ বিনা। रेम श्र गामा दे जिल्के कृष्ट विश्व भार्यः ॥ ११ गर्य भक्त अक्षा का गर्न लाभक छए कृतः। वावनीशि विरा, कार मक्। में स्था सिक सिक्री ॥ १० दृष्ट्राका रेक्सेलाका धर् प्याप्तकांत्रिं एक क विशाया देखाल्य क्र्याल् ।। नाजान मः। नकालिक करते अका हिस्मा ह देशिया हैणाः। र्भेत आप्रक समारकाळ, क्रास्य व्यक्षि सेथ, स्रोंक, ॥ १३। भावकार्यस्कः जायनम्म जाता भागा जायए॥१६॥

वकालिक हिस्मा गाता देय भागिक। मकामात्य मलेक भिन्न प्रायः भक्ष श्रिका ॥ चकाक्षाठ, र्रम्भ क्रिये क्रिये विक्राया वान हार्या विराध, त्रश्चित क प्रवेरित, ॥१४ অর্মাথিয়াত দ্রামার্মার্থার । दिशांग क वेशां क वर हा हा क का लिया ॥ ३५ वात्यकात भूमात्या शिथी भलाक भाग्येण । १२% यक भूमामि ॥ पत्मीक भूषाका भागा भूम का स किया गा। स्मा ठाउ निका भाषा क भूम लो ए विवर्ष (भाषा) धादा लोडि न कर्षक लोड महि मडीक्स्रा । कृल्क तिर कर्परा रुख श्विष्ठ विशायणः। २३। भूय लोठः भूराक्ष वृश्कोठः भभाठार्। भन्दाक भामलोयन लोयाविश्विम इवः॥स ल्लाक्यवुः अमाकार्यः लोक्यूल दिजः अग्रुषः। लोठाठार विशेषभगमा विश्वतलाः किया।

म्मा थियं न कर्यक लोठ मिक्ति भंडी न्यार्था।।। मकः॥ यदि वा विष्ठि लोठ ७२ ४ विक कार्विष्ः।

তদ্র্মাতুরে ভোত মাতুর্মার্থমস্করি ॥ প্র

भाम लोग्ड दिला शः।

अ नादः नाशित्रा वात्रिय कालाव्हभमा।
लोड मिक्कत भारते यू व्यक्षात्र प्रकार मिक्कतः।
वर त्यायायायः नात्रे व्यक्षात्रे प्रकार व्यक्षतः।
वर त्यायायायः नात्रे व्यक्षतः वाभावाद व्यक्षितः।
वर त्यायायायः नात्रे व्यक्षतः वाभावाद व्यक्षितः।
वर्षात्रे ॥ त्योष्ट्रव्याय व्यक्षितः भग्नाद्रविष्य कात्रात्रे ।
वर्षात्रे ॥ त्योष्ट्रव्याय व्यक्षितः भग्नाद्रविषयः वर्षात्रे ।
वर्षात्रे ॥ त्याव्यक्षत्र व्यक्षतः वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे ।
वर्षात्रे ॥ त्याव्यक्षत्र वर्षात्रे वर्यात्रे वर्षात्रे वर्यात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्यात्रे वर्यात्रे वर्षात्रे वर्यात्रे वर्षात्रे वर्यात्रे वर्षात्रे वर्यात्रे वर्यात्रे वर्षात्रे वर्यात्रे वर्यात्

प्रमान भाष्ट्र वा जिल्ला क्षेत्र भाष्ट्र । क्ष्मि याद्र भाष्ट्र वा जिल्ला क्षेत्र भाष्ट्र । क्ष्मि भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र । क्ष्मि भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र । क्ष्मि भाष्ट्र भाष्ट

পুথে পর্যুগ্রিতে নিজ বর্ণত প্রথাতো নর:। তথ্যাৎ মর্বর্ণ প্রথাত্ত্বন বক্ষয়েদ্বরধাবনং ॥७२। আযুর্বল থালা বর্জ: প্রজা পশু রমুনি ত। ব্রহ্ম প্রজা ঝা ঘো খা প্র নো দেবি বন মদতে ॥। ব্রহানের বা প্রভাবের বা ধার্ম মার্ডি মার্ক্র দন্ত

धारनं क्र्यार ॥

প্রাপ্তম্য ক্রোপরিষ্ট দ্র সঙ্কারে দ্বাধারন করে।
প্রস্কালত করে প্রকি প্রকালতর হস্তারেল।
প্রমানাস্যা মৃত্ত প্রাত কর্মণে দ্বধারন বিধারন ।
প্রাথাস্যা পূত্র প্রাত কর্মণে দ্বধারন ।
প্রাথাস্যা পূত্র প্রাত্তর করে প্রকাল ।
প্রাথাস্যা প্রতি প্রার্থান ।
নারামিক্স্রাল।

अलालम्स काक्षेक्र भ्राजिषि हिल्या दिल्। अभा द्वादम प्राप्ति र्यूय स्टिस् जिस्राजि॥

युव्द्वस्य धार्यः विधाय क्षान्मा रिण्ट्रिं भूम्भाभाषाप्र ॥ जलाभूय भूग्री ध अमर्भ भाष्ट्रा भारताम् प्रणा विधि कि आगां दिक कृषा एम् श्राक्षां अस्माद्धन गक्षा स्रिक गर्व्य ॥ क्रीची जित्रका न्त्र भूणाधा आमन्द्रभार । अम्।अस्माद जिम्ना निर्मा किर्मिक कृष्णि ।।।।।।

रेषिम् लाउनामियन्य भाठावर ॥

णालो भर्क गाला विक् म्हिरभुक्रमी जर्माद्वः। भवर दरक्तां गभाष्मा नाय भण्यायः॥ १०।

रेभण्यक् अभू कार्य जील्य आन अधा हत्। अन्या उर्द्रलक्यार्थ जीलीला र्वाड युवा ॥१॥ क्ष्र विभारतमान भूकीया नामकीर्याए। भारं ५० भयमा वाक्ति केवी मध्येत छ। १६६ आर् ऋषि धलग्र त्र्ष्य धिक भाषि । তিশেষ করণ বিদিত বিশ্ব ধানত মৃতি। নির্মুজ বন্ধন ম পার মু আমু রানিণ " শ্রী বল্লত বিবৃধ বোধ ফর নমামি ॥ ৪७॥ गभाषाम्बन्धामाम् व्याव विष्कृ भूरके वास् काल्यके । रेपा विकालाधि अमाखा सम्भ এস্ফাল্লি দাগত ভাৰতা । প্রথা थम किलायू जीयूजा नमः अकाश्र अस्ति यू। क्रिको अध्या मध्यान स्रक्षा जागाजा (य नमः। ४६॥-अविका भूलवा भार जनकर्य विवृष्यं । फान खेलाफ मिधार्थ अक मात्ना नक सुक ॥ ३७। थ्र भूक् निशासिय भाठत्य दिशियम्गरिः। नामा द्राप्तिसू अवेशान्त्र भ्रमेरवन विनिष्ण ह ॥ ४१ आकामाय (अर्खगण हिंद क माम्यायम् । उचरी हाम्य दिन्य भ्रतम् नह उच्चा भारत ॥ १४

ठिम्भू सी शीठियशा यथा की डा खणा रेथा:। क्रियाः आजादिकाः अकी धार्यदिकाशाला भूतिः। उफ़ा द्वादगवार् क मिर्वायम्य वाद्र्यू। क्रमराष्ट्र जिखिलाज्य चि क्रि॰ मार्डण का भूडरंग ग जल्य जिलक रूषा दिवाय्य स्विकः। प्रमुख्या क्षा माष्ट्रा माष्ट्रा माष्ट्र भारत एका भारतम्क भिष्य क्रित आसी प्रमुक्ति এক সাদ স্লে কৃত্য দ্বিত্য মত্য বিথি।। ज्ञानाभाभवगं, रेवी सिक्र् यांथा शिमस्थिः॥। प्राप्तः भण्याका वस्त्रामिनश्च पत्म ने भार्कराए। किकाना भाविया विवा नुभाविक कु प्रार्दन ॥ छ। कलेम्झ धार्कः क्र्या मिष्यं य यथा भूयः। म्यव्ये छालनाम अम्हिल्पनभाईत्य ॥ ७१। गित मध्य रिल तोर भागात्म हिराले न पू । यगस्य छल तो व भाम भयन भार्त भार्त ॥ ७० रेणारि भागेग ल्लाकाः यहनानि छ ॥ भृषिकाभाग विसिव्धि ॥ भृष्ठिका विशक्षा जाता तिकन लामायार। मक्तितेव रक्षत व्यक्षावलाना नुक्रमाए ॥६१ नलारेभी मार स्थे भूम् व अ अक् कि कि ।

र का हिक्कां जाए प्राप्त का कि विकास का महा

बालप्र वाम ब्रिय पाद्यस्थ, यत्याहर्षं ॥ भिष्मित्र वाम ब्रिय पाद्यस्थ, यत्याहर्षं ॥ भिष्मित्र वाम ब्रिय पाद्यस्थ, यत्याहर्षं ॥ वामप्रवित स्थिय पाद्यस्थ, यत्याहर्षं ॥

क्षि ज्ञान करिय भेरा भाग, रेखी क्रम जलभारित्यए। श्रात्व जात् ज्या शिधिः॥-এতান শ্বানমে ডাই ক্রমান্ন মুত্রমত। मास् व्याण्यमात्यमः वामकः स्कायक्षाकः वार्टन भावम एक मस मयाय न्यमाए। धनरवन वि भारत का भूमा लक्षा दि भौचित ॥ ।। लायों, नमाया त्राप्त, वारेक, रासमा मारा, अहि: आख्य राशिः श्रानं अदिकर्य कार ॥४७। पादम्भ भारतभाव् ग्रह भारतभ विकृषि हिस्त्र । कामिल ले ७७: भान भग्रम् वत्का विश्वान ।। १८ भारत्य व्यक्तिका का काष्ठे व्यक्ताला भेक्ष्यकाः॥ सका देक भारे ना के त्याच्य का क्षिण अंग्रुण ॥ एव जानुभान कि भान कले भान जले करे। শির: শ্লান ডথা শ্রেডে থাত: শ্লান বিথিয়ত। ৩৬। हक्स्वामी मिल्रा लामी कले लाभी कमारिकः। क्लभान अक्किं मित्रः भाग क्ल लिए॥४१-

भीरायन मूहालाक धानसभात खार्याह ॥ नयः निराण गन्नाण निरम्धिन स्मानयः। नया ख्रिम्य गापिते विस्त्रभूति नस्मानयः॥ नस्मा सुम्मा हाहिले जागीहलेक नस्मानयः॥

जार इति धार जिल्ल वामत्वस्थ अना भाह । यः भ्राष्टि भारत्य जील्य अधारि भड़्यां स्राप्ति ॥वे

क्राध्याभरकी ॥

যামিন্ দেবা শ্চ বেদাশ্চ পাবিগ্র পৃৎস্থামকর প্রত্যেন্যান সং তীর্থি যামিন্ সাস্তা স্ত্রোভরে প্রামহাভারত ।

आज्ञानमिभाधारा य भूर्ना अळ्ड्रमा भीन

তথা দ্যো র্মি:॥ তথাতি ষেক ক্র পালুসুএ-নবারিণা শুদ্ধাতি চাত্তবাত্যা ॥ १६॥ দান গঞ্জা রুদে শুদ্ধ মন্ত্রৌ নথ শিখাব ধি ॥ য: খ্লাতি মূল মন্ত্রেণ মর্বে রৈব মুনির্ম্বল:॥ १५ १४

থানসং বিষ্ণু ভিদ্ৰন মিডি বিষ্ণু মান ।।
বিষণে বিশাবিশ্ব নামা বিষণে নামা বিষণে নামা বিষণে নামা বিষণে নামা বিষণা বিশাবিশি ।।
গাঙ্গা মান সৰ্বৌ শ্চ পুষ্ণোর মান কোঠিতি:।
থাং পাশে বিশাবিশি মাতি নামাতি ভদ্ধাবিতি ।।।

क्षियायभग्नात था विक्र काक्रक्षांत्र क्षितंत्र ।

प्राः भग्न क्षांत्र क्षा क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र

भक्ष भाग विनिर्म्फः भगाषि भव्याणभाषि॥ इ गागां लिया पूका ना भू नी ना भू ई दिल आ। भागाणः भर्य जसूनाः तालभी जीत्र वाभिनाः॥ रेम जीर्याध्य जीर्थ अध्य जायभा जना :। आवाजीर्यं न जानि क्यं भारता हि जाग्रह । समाडीये जमशीर्य कीर्यामिस मित्र है। भक्तिक भंगा ही जिल्ह का अ कि श्री में विषय है। नवाध नक क्षान्य भवा कक हासाबिक। तित विवासि सर्यक्र एवं स्रान समा द्रावर ॥ व श्वान भवा भवा जाता। नामका उग्र मंकिता। सान द्यान् या वाता कान सिद्रिया ।। ३० हातः त्राय मर्के की प्र ज्ञानां ने मन कार्य । বরগেরর মারা, ঐ সকার্টে নি সরম ৫,॥ >>। रेजिमश्रामान भाराज्यापि ॥ अथ निष्धिाम्कारि गभाषा तिः भृष लाग गरि गभा न गर्वा । जर्गामानक मिछि एकरा भक्ष कर्म विष्कृष्ट ॥ अस्ति एण क्ष्म अवस्ति आक्रम्क । भागभन्नारिक कर्म एए मर्क निक्रम अवस्था

अनुका भाज उजारापि भारता नकः॥ उचा भरादः मर्थ ম্পেলিক্তা কুর্ন ।। ম ঠেল সাম মিফিলার। नाय ग्रम शक्र भागा किछि किछिन्छि किछिया छ कि पिनार्ग निष्यूक आद्य विकास पर विकास (य वायरं गरंश क्री स्मक्ष खोक्या खेरिक भाग भव कित लाकागृष्टिक स्ताकिल विकर्भम् रिकाक्षा भार में हि लाश का मान के के दे बंधा है जील विकाद आस्त्र मार्थि ठत्वाल भाउष म्या गा रिक प्रामार्ग काक केंक्षेड्र भेड़ी कत्वाचार्थर मागात्यणक भूषका भूष्क जिल्ले भारं भिक दीमानि दीमालेल दीमानमा नार मामार रेर्ड भाववाक्क अभार्य भावगृष्याय भावान् गायान गाल पार्व दिश्वण आहार दर्भात गालकर्ष् क्टिन्य क्याचन भारत मर्गत्व अरहेल भागः।। र्षि भक्ष ॥ भरक्षित्राचावस्त्रः किसिविष्ण প্রাথান্তিও রিমিণ্ডারি । हिलिकाके हिलिधूय हलाल त्रजभुला भाव भूषि भार्या माल्या मानानज्ञ भारा भारा

गाभान् अग्राहर्द ॥ अन्यात्म कार्यात्र ॥ अग्राम्य भाग्य भाग्य विकान क्ष्य विकान क्ष्य ॥ अग्राम्य विकान क्ष्य विकान

ধতি প্রতঃ কৃত্যাদি খ্রান বিধি:।

व्याष्ट्रयम सक्तर्वा ॥

श्रीण भामलोड विभणभग जल । विभित्र मृत्य किर्मानिका व सुर्भाण ॥ अजल अजि मृत्य सामिका व सुर्भाण ॥ अक्षानाभिकाका न सन सूर्म सुर्भाण ॥ कारिको अस्था ज्या भारता १ तमा स्मार्था थाउ।।-त्रभार्थे

নবার্ পরিরাগ্রামানামানামান নতোলিত: नुका अन न्वाहात्मनान काल कर्महन ॥३। १७ अगळ ॥ अखजातः आको तमा केमारिके देन उध्याः। भ्राग्राया प्राक्षित्र जीलित हिला तिष्य भू भक्तालार॥ सिनिस्था सिनि कश्चिश्वाम म कर्म ह। जासा माहि विष प्रभाव की भी ज्य जैसमार ॥ १ ॥ वर्षस्य स्थारम् स्थारम् व्हार हाराय ॥ व्यास्थाय भवाने स्थापत माधित तात्र मिह महः॥ मसाक माध्ये धस्त्र ठ वि: भिरवम् भू शैरिकेषः ॥ अभूकाश्चर्ध-र्जापत्र । है: ज्ञानेक व्यवार्जिक ॥ ४। म मुंद्रात मिलानः क्ष्यं भारत्यम् नार्म्यातः लाई किय हात्रिया यात्र हात्र मान्याम् यस्य राष्ट्र भाईका गामिका या कहा: त्यात्य स्व:। कार्यकाश्चर्या आठ क्रम्य छलाय दि॥।। मक्यान में भित्रः भाषात यात्र प्रातान मन्भालात । १ भः इहा श्रीला छ म्धा भारत सिर्मे छः।।-

বিদ্ধানি প্রমান বিদ্ধানি প্রমানি প্র

वि: श्राणीयान्यम मु स श्रीषा स्राम्य त्रवण तस्य विके अर रोत्र अर यथा में सक्ता ॥ १॥ गभाठ गर्भारेश भीएल भारिया र्यार পাদাত্যা প্রীয়তে বিষ্ণু র্বন্ধা শির্মি কীর্তিত:।>। नामज्य स्था स्थापाल भ्रमुखि नामा स्टेडिए। म्मिष्टि प्लाष्ट्र में प्रमें के ही एंग का माना मिल कर्न भूतप्रज्या अभूति श्रीर्याल जुनलाजिलो श्रक्षाम्भान्यात्रव भीगृत्व भक्तत्वणः।।। नार्छ भाभार्यना नागाः भीगाउ हास्य निष्या मक्षाके द्रम्य क्रम चीयत अर्कत्ववाः॥॥ भूई भाभार्भनाद्रभ श्रीष्ठ स् भूक्राका शत्र्।। আত্মনা কর্নে প্রত্যবায়ো দু নিতি: ।। हिवाछभा निर्मियान्या न्। या ज्वरण्हाः॥ প্রাত্ত্বা প্রাত্ত্ব প্রাত্তর প্রত্তর প্রাত্তর প্রাত্তর প্রত্তর পর প্রত্তর প্রত্তর

अहिः अधूकुणिस् वैगानिः क्रम पूर्तः । विद्वेगा न ह जन्द्राणि शक्त वाद्रीय भाष्ट्राल ॥ अणू वाला भूत्वा नक भाष्य विद्यक्ष ज्या । जेन आ असुनः।

देम कि नाष्ट्रशामा अ जत्या का ता कि भागी ना थिक ।। उन नि म्ह्यू र्वा शाकात्य मिलि जू ने कि का विकल्यः। अनुः॥

क्रम्गार्थः स्थात्वारिकः कल्रेगार्थिः स्थातिः स्थाति स्थाति। स्थातिः स्थाति स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थाति। स्थातिः स्थाति। स्थाति। स्थाति। स्थातिः स्थाति। स

থম: ॥ রামাবরাক্ষতেনাসি শ্রাদ্ধিকটো মরীর্মিল। বল

উদক্ষ্য প্রহুল প্রকারত সাবিখ্যাল থলার। তারস্বার্জ: ॥

आयड मूर्कांड: कृषा (भा क्रमी कृषि वरक्रा।। भरामके कित्यकेन त्यक्ष मानिना हिए:॥ भूकामके कित्यकेन त्यक्ष किः भिराद भः। १॥ भाष्यक्रम्भायास्त्र भर्ग्य विः भिराद भः। १॥ भाष्य भाषि विक्रिले मुकेकः॥ विः भिराद भिर्माक्षणे भाष्य श्रीष्ठ भूजाने वहनार ॥

कृभी भूताल ॥

চান্তালাম প্র মতারে দ্বী মূদ্র কিন্তু ভারনে।
ত্রিক্তি সূর্য গুলার কার্মিক ক্রিলার কার্মিক প্রতান কর্মিক।
আমার্মিক স্থান ক্রিক্তিক ক্রিলার ক্রিকার কর্মানিক
ক্রিণাম থাতান: সমর্শে নীরী বাসারিধার ক্রি

क्या छ। अश्र भ्राला-॥

हालालाहीन् काम त्रात्म इक्षेत्र हात्म दिलाउमः॥ श्रेष

দেবা র্চনাদি কার্যাদি তথা প্রর্বাভি বাদন । কুর্মাত সক্ষাণ চক্ষ তদ্ধন পুদি ক্রিয়া ॥ ११ কর্মদি।

ন্ত্রা জ্বা ত বুজা ত নিজ্ঞী কো পুন ক্র প্রত ।

প্রা জ্বা ত বুজা ত নিজ্ঞী কো পুন প্রত পত:॥

প্রা জ্বা ত বুজা ত নিজ্ঞী কো পুন প্রত পত:॥

শ্বাস্থা তামেওদাবিশ্র: সামে ধৃত্বা জলাস্থল। ধৃত্যার স্পর্মে শ্রন্ত প্রক্রমণ সরেদিনি।।।।।
ত্রাদি বিশেষ: ।

প্রত্যা প্রত

পারোরধি দলে তিঞ্চ ব্রাচার: শ্রান্তিত্যামিখাং। অধ্যা জ্বত কৃত্যো শিমমাচারো ন শ্রহারি। মৈচীনমি:।

অব্রহদক মাচারো ত্তমান্তর্ব ক্রান্ধা তবর্ত। থাইকদক আচান্তো বাইরেব শুদ্ধা সাত মাদন্তথেক সাদ্ধ কৃষ্ধা বাইরেক সাদ কৃষ্ধা চাচামে । নবং স্পর্কোক্তা চমনা সং তাবে তি: সীন্ধা হয় প্রস্কাল্চ মোত্রং সম্পূর্ণে ইতিসমূত্যর্থ সারে । বৌধায়ন:।

ক্যান্থ্য প্রক্র ।।।।।

ক্যান্ত । ক্রান্ত্র্য সা দান্ত্র্লিক্তর লাকার্য বিক্রান্ত্র্য প্রক্রান্ত্র্য প্রক্রান্ত্র প্রক্রান্ত্র্য প্রক্রান্ত্র প্রক্র প্রক্রান্ত্র প্রক্র প্রক্রান্ত্র প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত্র প্রক্রান্ত্র প্রক্রান্ত পরক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্রান্ত প্রক্র প্রক্রান্ত প্রক্র

भक्तमा हत्मन स्थाल लाग लिख हर्णिक । भाषा भूष भूमार्ग में बूबा तित क्रमना ॥ भगार्थ भूष जम्मना जिथक हत्मन ताज भूमार्थ भूष जम्मना जिथक हत्मन ताज प्रमिकार ॥ काकाग्रनः।

त्र भारति । त्र प्रमार्थितः भेरति हिन्य । । त्र प्रमार्थितः । त्र प्रमार्थितः । त्र प्रमार्थितः । त्र प्रमार्थितः । व्याप्ति । व्या

विश्वित्रमः आर्थकामामाम्यक्षिणः॥।

विश्वारिशिः॥ विराह्म छठः क्रिक्मिश्

হস্মহা ব। ব্রহি:।

প্রিকারাদ্রন্দানে ব ধর্মার বিশ্বর্যা ।। ব।।

প্রিকারাদ্রন্দানে বিশ্বরায়।

ক্রেকার্য প্রবিরোগে সন্দোধ্র কর্মার্য ।।

ক্রিকার্য বির্বারোগারী প্রন্যক্রমার্য ।।

ক্রিকার্য বির্বারোগারী প্রন্যক্রমার্য ।।

ক্রিকার্য বির্বারোগারী প্রন্যক্রমার্য ।।

ক্রিকার্য বির্বারাশারী প্রন্যক্রমার্য ।

ক্রিকার্য বির্বারাশারী প্রন্যক্রমার্য বির্বার্য ।

ক্রিকার্য বির্বারাশারী প্রন্যক্রমার্য বির্বার্য ।

ক্রেমার্য বির্বারাশারী প্রন্যক্রমার্য ।

ক্রেমার্য বির্বারাশার্য বির্বারাশারী প্রকার্য বির্বার্য ।

ক্রিকার্য বির্বারাশার্য বির্বারাশার্য বির্বার্য বির্বার্য ।

ক্রেমার্য বির্বার্য বির্বার্

অগ্নিব্যেরা গ্রিজ ভদ্দদ্বিদ্ধার্থ ভ্রা॥
বিদাসন সম্প্রের সমিন্দ্র সমিন্দ্র সম্ভ্রব ॥
ত্রিরাল ধার্যে ভ্রম গ্রিত্সকল
ভ্রে ॥ ত্রিরাল ধার্যে ভ্রম গ্রিত থার্যে ভ্রল বর্ত্তি ॥
ত্রা ॥ ঘতীত প্রশ্ন তারী ত ধার্যে ভ্রল বর্ত্তি ॥
ত্রা লামার্য প্রশাস্তি পরতাে ভলবার্ত্তি ॥
ত্রা প্রার্থে দিল্ল মুর্দিণ কর্ম ত ॥
ত্রা প্রার্থে দিল্ল মুর্দিণ কর্ম ত ॥
ত্রা প্রার্থে দিল্ল মুর্দিণ কর্ম ত ॥
ত্রা প্রার্থিত প্রার্থিত প্রার্থিত ।
ত্রির্ভা ধার্যে দিল্ল মুর্দিণ কর্ম ত ॥
ত্রা ত্রার্থিত প্রার্থিত ক্রিম্বর থার্যে দিল্ল মুর্দ্ধর বিশ্বর স্বার্থিত ।
ত্রা ত্রামার্য ক্রমিণ ত্রিম্বর থার্যে দিল্ল মুর্দ্ধর বিশ্বর প্রার্থিত ।
ত্রা ত্রামার্য ক্রমিণ ত্রিম্বর থার্যে দিল স্বার্থিত ।
ত্রা ত্রামার্য ক্রমিণ ত্রিম্বর থার্যান্ত ॥
তর্মির সামার্যান্ত ॥
তর্মানার্যান্ত ॥
তর্মির সামার্যান্ত ॥
তর্মানার্যান্ত ॥
তর্মানার্যান্ত ভ্রমির সামার্যান্ত ॥
তর্মানার্যান্ত ॥
তর্মানার্যান্ত ভ্রমির সামার্যান্ত ভ্রমান্ত ॥
তর্মানার্যান্ত ভ্রমান্ত সামার্যান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ॥
তর্মান্ত ভ্রমান্ত সামার্যান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত লা
ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত সামার্যান্ত ভ্রমান্ত লা
ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত সামার্যান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত লা
ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত সামার্যান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত লা
ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত লা
ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত লা
ভ্রমান্ত ভ্

काळायगः।

यात्व गत्व जाना त्याप विकास्य म्यार्कत

68 र्क हिमेलें: प्रवाका भेके स्रोक्त्राययः। १६। नाभा र्याय अर्थ अभावः॥ अजलभन् लाभन क गडीना अशे आताषुर। ण विक्रम्पर्स भेन्यता वेशंकर केंदा পঞার্থ দশসহশ্র°দশ সিদ্ধি পরে দ্বিদ: । नेह । जिलकारि सक्तर्न । जनामन सक्त्रन। थाभः। कोलाय क्षुण खिर प्राप्तिन मधे व्यवह। मारुष्य जाता भावन्या आअन भारी कल्मारार ।। कुरुवादित कार्नाभिद्धि त्यांक नी कास कर्मानि ॥ वन्ना दित्व वर्गारि नामः क्ष्रलार्:याष्ट्रवर् ॥-१-आउठात् भीलयर्गं शक क्रमणादि कर्मानि ॥ आशिक क्रमेद्धः क्राकः मास्कृत, क्रिक्सेस्।

वज्ञावसार्वाहिकामाड् मर्गेशा ॥ नाष्ट्राक्षिण भाषिनीक किलाजिन कूलाउद्या र्वि ह्या भीवागाः ।।

हषूर्मीखाभवानि। भारतव रागिष विरो। त्य क्षेत्रक्ष भाषाग्रं भाषं र्वत्रिक्षकर्ता । ह शिक्ष, नाम, बजा थि, दे, त्रहाक्का प्रते को गे.। त्यरं करामा कर्म के स्व कि कि स्था भाष भर्म ॥ १ एशेनाभभुक् ।भिक्ष गृश्य्य ए अवर्धना । भूगाभन के अर्खिया मिलाइट जिरिश्यर १ ॥१ रेणायन इक्लेश धारा धालाग्राय इक्त्रतः॥ धाने ख तदाना वायू ताग्राय सन्ति ता धनः। नित्रशास्त्राराखवाम् जीत्यावित्र विद्यायला-वाजाभाष्ट्राहि कामस्य वाला इतः स्वकृत्व शिक्षः।।।। याभिक्षोः

থানা দীবাজানো:শ্রন্ধি প্রাণাথাথের জায়ত প্রাণাথাথে এবতের পতকে শ্বন পারক:।ত। প্রাণাথাথেক নিষ্ঠায়ত নাকিন্তিদ্ পি দুর্লের ।।। প্রাপ্তিরা:१

अक्छ॥

अक्छ।।

अक्छ।

भकाश्रू लिखिमामा भीडम धन वारिया।
भू प्रशःभवि भाभक्षी वाम ध्रम् भू रम्हाः॥
कार्मिका मिकाश्रू त्ये नीमाप्रभा निक्षीडनः।
उतार भूषा भाषाका भाष्ट्रम् वस्त्र हारियः। ३०
उत्ति हार्ग लमा मह।।

क्रिय, ज्य क्रवें क्रक्रा शाक, शास क्रांत क्रें क्रवं । अविशास क्रांत क्रवं क्रक्रा शाक, शास क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रियं क्रांत । अवसास स्थान क्रियं क्रियं । अवसास स्थान क्रियं । अवसास स्थान क्रियं । अवसास स्थान क्रियं । अवसास स्थान क्रियं । अवस्थान क्रियं । अवसास स्थान क्रियं । अवसास स्थान क्रियं । अवस्थान क्रियं । अवस्थान क्रियं । अवस्थान क्रियं । अवस्थान क्रियं । अवसास स्थान क्रियं । अवस्थान वित्यं । अवस्थान

र्श्व क्राज्य ग्राम क्राय्य ।। अवस्य ह क्राय्य क्राय क्राय्य क्राय क्राय क्राय्य क्राय क्राय्य क्राय क्

अग्र-गाभकानादि सर्वाणः॥

एउटक मुखेभावाभू काम कान मा हार्सिक ॥

भकारं किलक विकासि नियानिक मुकता उक्रामारः स्रम् क्यांने भारे क्यः भार्येष हिमायन अस्ड कर शका कार भगारिका विभावन सर्कारं, भेक्षित्र स्थाव है॥ भरभात भार्यभाव स्थित अकलानि (आ मभान भारताराणान रिका इली जान सम्मारि है। र्यभाषान रेष्ट्रकः भ्रथला धन्यीतिष्ठः। পুব: প্রকাশতাতানে সূত্র: সূর্যাজনে ওত্ত:॥৮ र र्यः भ्यविषि भ्रश्वाश्रकाञ्चन हेनिर्याखा দ্বাধিজানাতান ক্তিত্ন: সতাতনবেতিত। रेक्ट्रकाः भूः सरभागा भन्यः भक्तराभनाः। अकारकाके कार्यार कि समाये कार अश्रीमिकारका का की कि कार्य चारा चारा। क्षणाक्रणा क्रम क्रिके सिट मेर्स्ट गांग निर्वा क्ष्में कुल्कों कू निवां वे कि कामिकां आई। भागास गीजामास वर्णाम् मानिकाअर्थ्यार् नामकाय ।। व्यक्तिमा अपन मान्या क्ला आश्रह कि दी हो क्लान भी कि कान भंगे।

में जेश मान्द्र, रें से, में शा अंद्रव, ॥ श्रिया प. श्री राधे क्ये ध्याय भीता, आश्रा मधारं देशे লেনা মুধ সুবছা কক্ষমানিলা বিষয়েশ্বর্ত্ত भनात् ॥।॥ अग्रास्कि,त्रामिशि॥ अय अइत्या लिभक रामात्वाभित्वर निमम्त क्वाभाषीः ॥ उद्याश्य त्या १ त्यो त्या १ त्यो आ १ व्याजि १ था अ भारत्य भव्या लगा छ তে অহু শাব্যে প্রত্যাশক্রো প্রতে ॥ अमागः मदायाः भयानाधि स्त्राभए धका त्येक भूछाल ॥ जब यह त्या १ वृधिक भ्य भराभा त्या बेश्विक्स तता बता होक्द्रका हि। ज्या दि॥ । आ १इ घिछा य अकात दकात (णाप) रेख मार्थ स्था है हो। कि के मेळा रहा। मास्थ के স্বাক্তারল ওার্মান্ত শব্দো নিঞ্চনমুখ্র গ भकात क रकार का ब्यामितिया मितास्था ॥ भक्ति १० भूर्यवर्गाच्या ७ छा क्षो स्वित्या उत्पिति॥ भर्कशानि छा। उत्तर प्रमाः अले वार्थान् अक्रानं क्रायन

केण्य धनिशायन भवस्य ग्राच् प्रश्र भ्राष्ट्रि आका क्षाकार ॥ चत्र अमाका कार्यान्यः कर्मभ्य अनिशृक्षाण मान्य भता भाग रेष्ट्र करा ॥ अध्यय भूत्स्वाने धनमा जु अद लास्स সাঞ্চার্ডিতে সর্যাক্রের সীক্ষরিক্রি সাঞ্চার্ড काता उउछि ॥ य किराल अभाशि किर युक्तभा काएकातः किछ विविवक्तमाणि जविषे ॥ अथवा के ग्रंत धानि वाजाञ्चा अभाधि लाज के छ ज्यार भेर विच्यासिल्यमस्यः भर्यस्यः भर्यस् माकि वीन्थवः॥ वेन्यव्यक्षा छिधायकः भकः थार अनर जाः भाष्ट्रकामार्वेश माश्री করণ তমান্তিকোক্ত শ্রকারেণ শ্রণবার্থানু স आनक क्षेत्र भाविशान ॥ देखि काभकानादि ह्यक्ष, ॥ जजशाना ह्यथाये, ॥इ। उत्रात्म सार्वनादि ॥

भाल्यनु विभाल भानः अर्थभानि भुक्तिनि। ज्युर्वर्गभुगिन्जमा भुभा त्याय्य्य । भा भक्षा भाइर्नभाक स्मान्य भव्य भूक्त भक्तभाक्ष नत्यार हा भवि भविष्य स्मान्य स्मान्य भक्तभाक्ष वर्षभावकाय्य ॥ यव निष्य स्मान्य विष्य

ন মাহিত বুর্যাগল্প ত্রিসাদ্ জান বিজ্ঞান সাঞ্চ भगन अग्रभङ्गः काग्रल गः भ भूकः॥ र आशाल लिने नाट्ने अकिए क्रम्एं जान्य भूल लला छ स्थाय खाउँगाद्य हिन्न भूग म्ल हानगार्थ छ्वरक । वामास वाग्यक हे क कर्र महित्व कन्ने हिला भूराकाः इः ऋ ज्यार्थ मुक्क भक्त न्तराक वर्षका नमाधा ॥ ७॥-আদিক্ষান্ত সবিন্ধু যুক্ত মহিত মেরুক্ষ কারাত্য ৫। কর্মাকরসমম্য বাধুসাই এ ন্রভ্ নারা खात्ये ॥ ह॥ अकामर्थन्यः या मस्यम् भरे यः भयाञ्चिष ॥ उँछत् श्रुत् यह कर्ण वर्ण वर्ग वर्ग वर्ग थणः॥ डेनाइत्रल्। अन् लाग्यरलाः ७०। वास् र र्जिस्स्याः त का का के के के के के कि मि रिल्लाभवर्भाः। ७०॥ वर्गाः ४ डेखवभ्रवा । २०ने॰ तः यु । तः ॥ चय । भक्षणं स्था भक्षणा ।। भा ग्रा ॥ देख भरूकागा जासारस्य उम सास्य कृत माधान जवारि मा भागाधानाम जद्भाव र्जान ।। १ रहा १८१ रहा १८। १८। १८। ११ ।। विक

अभ्वाप्तिकार्यान्यान्यान्यान्यान्य रेक्टबार भने विमार भूयजी विद्यारिक ॥॥ माजभाव्यक्रायानितः स्वातेन म् अर्थकः। महिति दंगभार्भ लोकित लक्षभ्यात ॥१ भ्याल्कर्म लक्ष ज जावलें कारिक्छात ॥ क्रमानिक अखारके तमस सामिक अखर ॥ ५ देश्याच्र माड स्मित्र साम्यामाहि मह शहाशा । . कार्यिका वाक विभाजा वार्तिभागः विशेषिक ॥ ५ ४

श्रिवंभा ॥

प्राभी काक्षे भाग छि भंजाना॰ गत्र न अरवर। अक्रिक्र क्रम् व्याज्य क्रास्का व्याज्य व्याज् তুলমী সাবিত বস্তু সাবিত্র এবি বিদ্যুত ॥ जमार कर्मभू अर्थ में प्राचार आत्क भारत वार्ष ॥॥ অন্যা: প্রবাল মুজাদি মালা অমুকৃতা মালি। न रूभाः भद्विणः (प्राफाः भाका विकू वियायणः प्रमाशी विक्र भारतक अञ्चाल्या कान् मूजारि वि। अर्था व भाभू अर्थ । जात्र वी वभू भक्षण ॥ १७ अभाः शक्रम काक्षे ला भानि कृता ममानि ते। गळा वर्गक संकि हात्या हिन्द्रा स्था

মার সত্মদ্বে।

अकारादि सका वाजिन्ति शिक्त भन्ना है कि स्ता विद्या अक्षेत्र । अत्रात्म विलाधिक्दः क्षेत्रभा वर्ष भालगा ॥ १६ अत्याक वर्ष-प्रभागा प्रथाभः क्षित्रामिकाः॥ विशिधका व्यक्तिन्ति भूभिक्षामा स्व कि स्ता विद्या

ब्रह्माय श्राप्त ॥

नाकृ काल द्विक तत्र, स्टाप्टि ट्या प्रमाशिशाता।

क्यां प्रकाश क्रिया प्रमाशिक प्रकाश ।

क्यां प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रमाशिक ।

क्यां प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया ।

क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश वित्त क्रिया ।

क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश ।

क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया क्रिया ।

क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया क्रिया ।

क्रिया प्रकाश क्रिया प्रकाश क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।

क्रिया ।

क्रिया क्रिय क्रिया क्रय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया

भाषृकार्गर शि

आवळा कात्रधात्ते धनभिभात्रि जानमान् का भाषभाना । शृजा चट्टा च धान भूत शिष्ट भाषेत्रास्त भाग वर्ता द् ॥ वासा न क्षेत्र च वर्ता वर्ता व् जास्तु भ प्रवाद गामल मालिक्यं, ॥ ४३॥-भाष का कि मध्येष्यं अस्ति ।। ४३॥-

भानि भारा भारा भारा भारा भारा ।।

अथवाक क्षेत्राला या विधान भक्ति काम्प्रमा পথ বিশতি ভি: প্রোজ্য মাণি ভি মুক্তি নায়িনী चिनाद्धिर्मम्भाष्य विनाजा कि स अर्थमा। অতি চারকরী শক্ত দুশাতি: শরিক ল্মিডা॥ २७॥ ठष्ट्रः अन्धानम् त्कः आ काम्यकर्भभू मिहिना। लाक्रियं आदः येत्रा मक्ष्रात्रीक क्रियामवा ॥॥ मध्याः अद्यम्द्रेशः प्राक्षा अध्या भूकि ध्रमाः भ्रतिकताः भ्राक्षाः भूकि वर्धना पूर्ण भाग समाः त्याजा क्यान्ताः भवी भिनित्ता भूगजीव ज्याः भूग भरा धाना अभृति भाः। १॥ विक्राणाम् भगता श्वाभी जाग वन्यान भोकिका भूकिमाः त्याका अर्क अञ्चल अभूकिमा भाभाभन्नाः पून्यभंग काश्यमाः श्वर्कक्षाः।

क्रंमामान्ने, क्षिक मिस्स ॥

लायः सक्ष्माक स्क्रम् समक्ष्मिन मर्गिक्रमाता

अनामा भूषा व्यक्तिनि किनिक्षेत्र कत्मणे चु । श्रे अश्रुत्केन विगाष्ठ निकल उराजिमिए। भर्या जिलाभूमीमाळ प्रत्यन्त्र दिन विरंगाण्य जर्कणानिला पिर्व भका भूगतभावनः । गर्भाराष्ट्र कथाप्रायः किक्षित्र काष्ट्र मण्या ११ अश्राल निवियुक्षी जभना ला आइ श्वादि। अश्रुणीयाः विर्याणपू किंदिर् भ्रेया क्यः॥७१। उल्लाख मलामाध्यि न धमा भाषामा कृष्टि। गव अजन अभीगानि वला न्यू हि राक्त आका। ७१ लाजा शक्षमा मका मैं ज जस्य संग्रे । सिरंग । व्यक्ष कृष्टा प्रत्यास्त्रिति छर्जनी भूलका वारी॥७३ अजागा भशा अर्थादि साम्बिने कत्यवारे ॥ रेडि लोख्य सु यविः भर्ति शिव प्रभं भार्॥ ज्याज्यास्त्र मि । अवाधा धश्रधात्य कविकान् कत्यने जू । मक्रमा मैं अक्षिय क्यमाना मधातिकारु॥ लाज भारते क मार । वामः ॥ भक्ति अ प्राप्ताक्ति अभूगिय गयः भूषः। गांभगा त्यर वीजवास्त्रमः अवस्थ भू भीग्रल ॥ वेल् ।

भानाभः अत्यादि ।-

ক্রমান মার্কিম গ্র ক্রমান মার্কির ক্রমান মার্কির ক্রমান ক্রমান

उं अक्ताकाछ । वाश्वास्त्राग्नेन क्षा कि ज्यान काछ । वाश्वास्त्राग्ने वि क्ष्यान अर्थ ।। विकाय मिक्य । वाश्वास्त्र भागा । विकाय मिक्य ।। विकाय मिक्य मिलि ॥ विकाय मिक्य मिलि ॥ विकाय मिक्य मिलि ॥ विकाय मिक्य मिलि ॥ विकाय स्वास्त्र ।। विकाय मिक्य ।। विकाय मिक्य मिलि ॥ विकाय स्वास्त्र ।। विकाय मिक्य ।। विकाय ।। विकाय ।। विकाय मिक्य ।। विकाय ।। विक

भगर्कूभाराय ॥

अन्यवाचि ॥ अन्यवाचि ॥

ক্রম্ব্র ত্রু ত্রু ক্রম্ মার মূল্য ক্রির ।। ১৯
ত্রু ব্রু ক্রের ক্রম্য ভ্রির ক্রম্য ক্রম্য ক্রম্য ক্রম্য ক্রম্য মূল্য ক্রম মূল্য ক্রম্য মূল্য ক্রম মূল্য ক্

नार्शिक क्राया है। व्यापन क्रिया हो । क्रिसे, वेस, बेबा मुख, वेस, वास्त्रे प्र समार ॥ १० अत्विद्यालय वर्गाया दा अ वर्ग क्रिके छान्। क्रि विग्रेश, विग्रेश, केक प्रश्रंत क्रिका आस्वः॥श्र একেক খাতৃকা বর্ণ সভার প্রজন্দেং মুধী:॥ मध्यासारं श्वान त्रन्तिन्त्रक सक् वः ॥ ८४ तस्य प्रस्थिति कार्य कार्य कार्य भीवः। মুর্গিন্তা পুরোগালা এত: মুক্সার্গাহরে। ১০ মিরা থক্তাথ মাধ্যেন তা ধার্তান্ত দেশত: । মাধ্র মধ্যক্ষিথা বর্ম: সরম্ম মাধ্র ক্রছে।। ৪৪ क्रम जिन्माल श्रु विक्र्भा ग्रन्ह एं ॥ **ज्या** किंत्र शिवा कल्ल भावका भन्छला पासि विसंता वाज का करो ६ १ हत भैवन्यति छान्। व्यक्ति सन्धंगंद भावाकातमः। अक्ष ग्रान् जिला दकार नागिया अधा निवा ॥३७ क्रवाया व श्रीयान्यान्याकाव व्यायं भः। मक् प्रक. विकासिक, में सरी ममस्रिक, ॥ ग्रन्तिग्रवायाय वर्ष्वीगार भारत्यातमः। यथ । यक्ताक प्राविक मार्किकाक समाहर्व ।। हा अस्तरान्या व्यक्ता स्रजानार्ड्या । अखोउत्र भाउ क्यां क्यां इस का भारत का उसा ॥

प्रोक्षिणं।।

अक्षात्व यक्ष र्या व्यक्षित्य क्ष्म व्यक्षिणं।।

स्क्रिक्ष्रेम् प्रेम् क्ष्म व्यक्षित्य क्ष्म व्यक्षित्।

स्क्रिक्ष्रेम अक्ष्म व्यक्षित्य क्ष्म व्यक्षित्।

स्क्रिक्ष प्राक्ष क्ष्म व्यक्षित्।

स्क्रिक्ष विक्षित्य क्ष्म विक्षित्।

स्क्रिक्ष विक्षित्य क्ष्म विक्षित्व विक्षित्।

स्क्रिक्ष विक्षित्य क्ष्म विक्षित्व विक्षित्।

स्क्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्षित्।

स्क्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्षित्।

स्क्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्षित्।

स्क्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्ष विक्षित्य क्ष्म विक्ष विक्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्ष विक्षित्य क्ष्म विक्षित्य क्ष्म विक्ष विक्षित्य क्ष्म विक्ष विक्य विक्ष विक्य विक्ष व

क्राक्र प्राक्रिय में क्रिक्स में क्रिक्स

अभूनाय मिरिक्ड व्यक्षत्मतित भूत्क न गडा न्यत्वन मस्यापिति मर्गनार भाषामा वा गडन ক্রম হুপথর ক্রমার মাধ্রামাত। ক্রম হুপথর ক্রমার মাধ্রামাত। কুরা বার্র প্রক্রেরা, নুরা ব্রহর বি প্রার্:। কুরা বার্র প্রক্রেরা, নুরা ব্রহর বি প্রার্:। কুরা ব্যর্থ প্রার্থ নার্থ কুরু কুরা নিলে কুরা ক্রমার সার্থ কুরু কুরু নার্থ

मान्य क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां में क्ष्य क्ष्यां क्ष्य क्ष्यां क्ष्य क्य

বুলালে সালে সর্যালে স্ক্র্মান্ত স্থানির। হর্মান্স্রান্ত্রিক করা সমান্যে ব্রদাকর। মানা গুলানিক করা ব্রু স্থানির সমস্থ্যেও।।৬০ মানা গুলানিক করা ব্রু স্থানির সমস্থ্যেও।।৬০

বাগান্ব হব মার্থান্ত তারাদি মালিকা তত:।
ত্তে তার্ দ্বর্ণ বর্ণ তারাদি মালিকা তেনা নেন্ন স্থানে।
মন্ত্রা তার্ প্রতি প্রতি মালিকা টোনম:। তথা ॥
মন্ত্রা নাল্কা কমেলেতে কম যোগত:।
তামার মাতৃকা বর্ল র্ম ক্রিয়ের ক্রিটিং।। ওয়।
যোগিনীত ভ্রে।

ব্যেথকর্মাতত: কুর্মাদ্বেবতা ভারমিষ্কয়ে। অক্টোত হেণ ত মুস্বা সাজালাক বিনিষ্কিমেল। ৬৬ ব্যেকর্মক শক্ত শ্রেদ্ধি ত্রান তরে।
নাত্রত জালার বিষ্ণানি: আজুন নাইর হ: শদা।
কলাতে তবেদ্রাম: কর প্রত্যাদিনাম কলা
ক্রির্গুলে কবেন্যুভ্ শুস্মাদ্যাম শরো কবে।
দুখালা মর্কদেবানা মর্ক মিদ্ধি প্রদামকা।। ৬।
তন্যান্তন মে মিদ্ধি দাত্র বিয়া স্করে।
ব্যুদ্ধা লাই প্রকাশ লোকরে দ্যুদ্ধানা করে।
মুক্রে মান্তে গ্রেদ্ধানা শ্রেদ্ধানা করে।
মুক্রে মান্তে শ্রেদ্ধানা শ্রেদ্ধানা করে।
মুক্রে মান্তে শরে

मान का रिक्ट वी भागा कर्यका (आ म्याभावे।।
मानी नाभ नि कर्यका शाको चूका थणा विधि॥
व्यक्षे भार न वक्षा क ठव् में का जले व ह।
प्राप्त का क्रा क्रिव भागि भ्राव वश्री॥
का भाग जिल्हा क्रा किर्व भागि भ्राव वश्री॥
का भग जिल्हा क्रा क्रिव भागि भ्राव वश्री॥

जगाड तामुख्यारंग ॥

उत्पर्भ भूके (णातान मन् क्वारेन भ्रामानि।।। अश्रुके भक्षमा पातान मन् क्वारे (क्वम् ता भारा भारा।।। जिले मृत्य मृत्या भारा मन् क्वारे (क्वम् ता भारा भारा।।।। जीत्ते मृत्य मृत्यः भूमा भारा भारा भारा।।।। প্রমাদার নাজতাব্দ্রার প্রাক্ত শত মর্ক্তার জ্বের স্থান্ত।
জন্মেরিক সংস্কার্শ কালার স্থা যথে দিও।
ক্রির স্যক্তাওর শত জন: কর ব্রস্থ ির্ব্রুরো
স্কল্পরার গতা অথ সুরশ্তর গ মহাযোগিরি
ক্রিয়ে ॥

সংবারাক্তা প্রমান্য শুদ্ধান্ত । ততঃ পুরাক্তিয়া কুর্যাক্তর সং মিদ্ধি কাম্যা।।१৪ ধরে। প্রা: উপ্রক্রমে কর্ম কুর্বাক্তর সং মিদ্ধি কাম্যা।।१৪ মন্ত্র ভূর্বেক শ্ব কর্মত ক্রাক্তর ।।

प्राचित्रा शाक्रुर सिक कार्या अप्राचला क श्रकार्वन प्राचित्र क्ष्मिक्ष कार्य श्रक्ष श

1. At 5. 2. 2. 2. 2. 3. W. by वे उरंदर्ध के केंद्रे के वे वे के अप क्रिका का निकार के ता निकार के मार के ता कि जार के ता कि ता के ता के ता निकार के ता के ता के ता के ता के ता के कार्का देन्द्रेन दिन्द्रेन मान ठक ज क क いーしのいしいり 6. £3535555555

ক্র্যারিজরু গোমোহ্যারা সারা মোন্ত তৎকণ ।। কুর্যারিজরু গোমোহ্যারা সারা মোন্ত তৎকণ ।। তথ স্থাবিজ্ঞান

ওঁকারায় বিশ্বহে স্বভারায় ধীমহি ॥ ডশ্লো শব: প্রজেদ্য়াৎ ॥ বিভি ।%।

नवः अभवः॥

দ্রিকান্সির ক্ষা প্রায়ন্ত্র প্রার্থ পর্য প্রার্থ পর্য প্রার্থ পর্য প্রার্থ পর্য প্রার্থ পর্য প্রার্থ পর্য প্রার্থ প

নি বিশ্বো পদারক্ত: স্মাওস্য তের প্র থার । থাতিক মুহ কুদাংক্ত মুদ্র মুদ্র মার্ম স্থিতি । প্র ন্যাপাং পদারক্ত মার্ম স্থেতি । মার্থ । প্র

चाकता, अस्त्रान्मार ।

गर्क नीष्ठ श्रृतिकः भारत् अमके महाक्षातः।

गर्क भूकात्रां मृष्ठा याहिका ग्रं प्रमा अवः॥ प्रभावा वर्णा क्रिया याहिका ग्रं प्रमा अवः॥ प्रभावा वर्णा कर्णा वर्णा कर्णा कर्

অনামা গ্রহ্মমাক্রম ড্রম্ণ কুর্মান্তর মান্তর্ম। মহামা গ্রহ্মমাক্রম ড্রম্ণ কুর্মান্তর মান্তর্ম ড তর্পনা তু সমাক্রম ড্রম্ণ নের তুর্বার থেও। নকের মান্মস্থারে নার র্মন প্রান্তর্ম লাজ।।। মারো তুলভিত্ত সূত্রে ড্রান্ন ক্রোন্তর্ম লাজ।।।। সাম্যো: সভিত্তে জিন্দ্র প্রক্রাল্য বি গ্রন্থ।।।

প্রথম্ব:।

त्रम् मारमस्य, यका, बश्चाय श रूप्त, मंद्रिश, गः मया यक्ति। । क

यण्यय विर्मक आक्रिका काम्यण क्रमार्थ आहर क्रिमण इत्हन जममील्य जमार्थ आह लाम् भी कि क्रमेशिक लात्के अभा सु क्र किलिए भूगण न सम्मामः ॥ लोज्यः॥

भक्ष शिक्षेषा वामि (अक्ष्या कर्म कूर्सणः। अश्वार में विना अध्या ७९ अर्सन निकल्पात

गम शादमा भादमे विका समय भवास्त्र। क्रम हाद मार्ट श्रादेग: छाउ थक मका भारता अञात्मार्थान्य अञ्चानः सर्वारार्थ उं उर्भर। केलि जिर्दिशा अन्तर्ग ऋगिशः अव केलि॥ অমন্ত: সাচ্চিদানন: স্ব প্রতা দ্বৈত বার্দিত:। প্রামাতি শক্ বিদ্ধো য় প্রমাধি: ম বিকশক:। उत्यान्वि मामानि वीत्रिकाक ध्रमायकः। মুত্ত মর্বর্চ মিক্টে মাৎ মুণ্য স্থিবিধ: মুত:1>6 धनवाना अव्यक्ष प्रत्यक्षवन ७९ भराः। यागळात्री नाज अध्यक् अभाषि स्मावना वि ॥>॥ र्वाक काः वर्भन्य क्या रेगा भरत्रे । মতি শক্তিমহম্রাঞ্চ দেশ্রব মুদাস্ত: 1>গ थिक. शिरमाभरंत्र येत प्रवेषाशिक्षिकः ॥ » रेडिजमार्किशः॥

শিক্ষদকা প্রান্ত মান্ত কার্য কেশবর্জিতা।
মন্ত্রি র্ন সর্বান্ত মান্ত মান্ত নিবারণ।
শিক্ষদকা প্রান্ত মান্ত ম

द्रमंगा समारा ना सि करा अस्मा सूचा भारत ॥११ वर अजाघार भ साभाकाला का वलन यू। भाकीगळ मद्रवस्य मामका भक्तिक करक ॥१७ अखिशाचि हांग में एक यक्ष सक्षादिनी कला। मामका अक्रिकीना वामिश्वी मिन्दे : 118 मसादिसाल दिकः जाग्रिक्यः भगाष्ट्र ।। जानश्चिक भर्भ के मानाग्राभा स् कार मा। १७ केल्यामि भक्षा अकरान ॥ जन्म अकिशान पुलराइमङ् ज्यु भक्तिमाय राम्स्राः। आवरंग वस्त्रं आसि श्रुष्टियामार स्वभए के गारा व्यावस्य सन्यक्षा चिक सवीग्रीक क्रम्डस्याः। द्रमभः ग्रमण्ड भाष्ये शक्षापा ग्रायार्थितः॥ र्खोभूभं पाले कार्य जानू याभूभारा किलो। সহত হয়। বাধায় সহি বক্ষাস্থালি: স্ত:। ৩॥ अक्ताः भ्राच क्र्यम् उ व विम्रिक्ः। अवज्ञान्द्रज् मूर्वः मूत्रसाम्वकार्याः ॥ ४। नेिंच ठना । । अभि अक्ति । अयक ना त्यापि म्लः॥ अगरम्कार्यभूत्रिक म्ड त्रिकामिना

ত্যাহার্:॥

ত্যাহার্যার্

ত্যাহার্:॥

ত্যাহার্

ত্যাহার

ত্যাহার্

ত্যাহার

ত্যাহার্

ত্যাহার

ত্যাহার্

ত্যাহার্

ত্যাহার্

ত্যাহার্

ত্যাহার

ত্যাহার্

ত্যাহার

ত্য

ন বিধান বিষ্ণাত ।। নির্মান মান্তি, অতিথ্র ন্রম: সান্ত্র হৈথা শমস্মারা নির্মান মান্তি অতিথ্র তে নার: রম্মান্ত্র।।। মথে ন্যার মান্ত স্মার্কে রান্যা শ্রীমা স্ট্রা:।।

বিধান্ত মান্ত স্মার্কে রান্যা শ্রীমা স্ট্রা:।।

বিধান্ত মান্ত স্মার্কে রান্যা শ্রীমা স্ট্রা:।।

বিধান্ত মান্ত স্মার্কে রান্যা শ্রীমা স্ট্রা:।

বিধান মান্ত স্মার্ক স্মার্কে রান্যা শ্রীমা স্ট্রা:।

বিধান মান্ত মান্ত স্মার্ক স্মার্ক স্মার্ক স্ট্রা

বিধান স্থান স্থান

দিনেদিনে তু বেদান্ত শ্র রুণাদ্রজি সংখুতাং। ১

যক্ষ শ্রহ্মগুয়া লক্ষাং কৃজ্যাশীতি হলত তথেং॥
বিদান্ত শ্রহণাদের নশ্যক্তিবোদাদাতকা:॥
১০

শহাদাতক সঞ্চাল্ড নিজ বেদান্ত মেবনাং।
শ্রহণান্যননাজিব নিদি ধ্যামনত দ্রুয়া।
১১

আরাঞ্চ সর্থন বন্ধ পুরুষেণ বিবে তিনা।
তথ্য পদ বিচারার্থণ সংক্রামা: সর্যাধ্যমান পি সক্রামে পতত্তের ন সংস্কৃত্য়।
বিদ্যানে পি সক্রামে পতত্তের ন সংস্কৃত্য়।
ব্যবদেশকা বিজ্ঞান মতদা ভাস বার্দ্ধিতা।
স্বানিস্কল ভবেতারং প্রবণাদি পরো ভবেং।
স্বানিস্কল ভবেতারং প্রবণাদি পরো ভবেং।
সংবর্থ:।

त्यागाञ्चाभ भारता विख्य भाष्य विमा भराग्रेगः। भ भ शा या विकि काभः भम सि एव व लाव व ।। रेख ह्यावरका भन्नरका ।। अभनत त्मक्रमह् ॥ कामः। काम परं न्थानीः विश्वानः अक्षमाश्वत । जमाएकाभ जन्म शिला कान भा भारिका कर्ण ॥॥ त्यान म्र्यात न्यान क्यार न्यानम क्यानः। थथा नर्मां जला श्वरण प्रमणका कान भाका नि ॥३७ के अवल विधिः। ज्या महेना ह व्यापितिययः॥ श्व भारता भारत्वस्गाजा विरक्षानाम अर्भका खी इन सनव जम्म र्जिण भावर्ण सम्मितः। एम भूकम मृजत्या व वा थे:।

স্থান্ত প্রত্রা প্রত্রা প্রত্রা প্রত্রা ক্রম কর্ম কর্ম কর্ম করে কর্ম করে। সাল্ল কর্ম কর্ম করে। সাল্ল কর্ম কর্ম করে। সাল্ল কর্ম করে। সাল্ল কর্ম করে। স

लाक पाणा स्थालून वर्षा प्रमान हिन्दुकः।

तात्मा भिर्म हिन्दु । विका हिन्दु के प्रमान का स्थान क

মুছ মত্যাদি ত্রিকা: ।

মহন্ত ক্রাদ্রাদ্র মান্ত মুক্ত ক্রাদ্র মান্ত মান

প্রমণ্ড শত্যাকুর ধ্যানা রুচ থোসিন শ্ব বিহায় অভিবাদ্যেও ॥ নাশ্রান্ত র্ন মোলানং কোনবোক্তি জারান প্রমারিত সাগি ন মামিদ্বার্থ সূক্ষা ক্ষতান হন্দ্রোন ভেক্ত করেন্দ্র দেব পিতৃ কার্ফ জ্বল শথনানি কুর্কন্ ॥ সাগ্রং॥

সামাকব্রশ্বার ॥

সবারা, ধের মান্যার্ট, ধেরবারর প্র মির্মার গার

করে কর্ম শুরুর স্থার করি স্থার সামার্টিক।

করে কর্ম শুরুর ব্যার্থিক।

করে কর্ম শুরুর ব্যার্থিক।

করে ক্রিন্দ্র ব্যার্থিক।

করে ক্রিন্দ্র ব্যার্থিক।

সবারা, ধের মান্যার্যা, ধেরবারর প্র মির্ধার

সবারা, ধের মান্যার্যা, ধেরবারর প্র মির্ধার

সবারা, ধের মান্যার্যা, ধেরবারর প্র মির্ধার

সবারা, ধ্রি ক্রিন্দ্র মির্ধার্যার

দ্বন বাসি বন্ধেল কাপকেন শরীরত: 1।

এবন্ধ গ্রিবিখ প্রোতঃ যতীনা বন্দন তবে (॥ ৮॥

প্রাক্তানা ঘার দ্রাদানিষ্ণ কাম শামনা ।

শার্থানোর হ প্রাণ প্রাক্তার্য বিবৃদ্ধার ॥ ৪।

শার্থনোর হ প্রাণ প্রাক্তার্য বিবৃদ্ধার ॥ ৪।

শার্থনার বন্ধার ॥

आषूत्र° यज्ञातिष्ठि ॥

শানে শান্ধে নমস্কারে মন্মত্তে তথেবত। ততুর্বেক সরীধান মসর কাষ্ট বন্ধন । ১। কাষ্টি বক্ষা বামস্কলের সরিবক্ষা নিধায়

भन्या भिवार्ष हेडि गामभाष्टि ।। मिसिर् পু হয় তাত হরিন্দ্র হারি নাম ত।। वार्त्र अ अफि॰ वात्सूष वृति गाथ य कि उन ॥ वृद्ध व्यागनाभवः शार् अपूर्वा जागावि व्यूक व्यान प्रशा भामशायन कृषी नमसायार्थ भ जानू व्हाह आर्था अर्था भ्रम् भ्रम्थायं वाभव रह्म अम्द्रियन्तर कृषा श्रम्किन जाता वाधवर्षः वि ধার তাস্যা পারি দত্তে সম্পাস্য ভিক্সক মুখ্য: সম্ क हिन्छ । निकाभ वामा भ नम रुष्ट्रा जिन्म। गरुषाभववाभाविक भ्रवर्क्व क्षा। তহম্মাজে নিষায় মন্ত্ৰ প্লাবনেন তিবাবং एक माम निकरे॰ गांचा भाषि भारता यस्त अ रेश ग्रंक आर गरंग, के म्या ॥ वस्तामा एक मक्किन आमाए देशाला भूरी द्वा जानू भ र्यंत भाम भण्यार्ग क्र्यांत ॥ स्त मियतभा व्य विवाद अमर्म्यम् भामा भू नि भर्म छ क् श्रा रहाजा अञ्भाषा विकरेमफेड कामक र्खा एक वास्त्र देन स मुक्य रू स्थानी यतः जिः।। वाममाम् भग त्कवः विवादः वस्र क्रणिए ॥ ग्राक्षा भूगम्य गिवाइ भवम् न

अग्रामारम् नयाक्ष्मार्थः॥

अग्रामारम् नयाक्षमार्थः॥

प्रमानामार्य म्हान्याक्षण्य स्वान्त्रमारम् निर्वः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यम्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यम्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यम्यम्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यम्वान्त्रम्यम्यम्यम्वान्त्रम्यम्वान्त्रम्यम्यम

नक् श्वान्या म्यानिया त्या ब्रहः ॥ यहान स्ट्रि प्राः स्ट्रिक स्ट्रिक्ट ॥ व्या प्रिट्ट सम्प्राः प्राः स्ट्रिक्ट स्ट्रिक्ट म्यान्य स्ट्रिक्ट स्ट्रिक स्ट्र स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्र स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्

माम्य मिक्कार्य श्रुकर्गार्थ विक्रिया सूत्रः मकाअ नमभेती सेंगः मानागाम नाम मेंथः मतं भक्ष पृजा कृषा देभभ शर् पूर्णि ॥ म्कवर एक छिम्यः भन् छिवातः भवन्तनः মতৃক প্লাবনের পশ্চাৎ প্রাতিগত্তে। जरूभं वसे, यन महाक शिक्षानं विद्यानं विद्यान आत हरा क्रमिर ॥ अतेर अञ्च का अलाम विक स्न रिन्द्रभीम वस्त्र ध कि विश्वा य प्रमा ধৃষ্বা ভিত্তমূ বামা পে নিধায় সূৰ্ব্বৰ দেক্তা भात मिश्रा मुक्रिव इन्म्न यग्रभि क्र्यार ॥ डेगाग् जहम् भातिशाग् मस्यम् क गृशिक्षा -ज्ञुम् वाद्या मिथायं वन्त्र दृष्ट्वा मुख्य भाग मिश्वा रखनायन ठ धक्त भूष्ठाः विशाय । व्यम्बार्यमर्थानीकामितः क्रमामार्थे ।-বিশ্বকার বন্দ্র ক প্রথাকে কাথিক হ। বাস ने वन्त्रनः कृषा यत्क मन्द्र निषायं छ ॥ ६ ॥ অাশকা শতন্ম ধারান্ কার্যেদ্র জিমান্যতি।। ज्य भागाय भावच्य नितः अपृष्ठि (त्रव्य । ४। भस्कार भार मध्देव को अध्यक्त वर्षात ॥ यर क कामक कृषा जानू यूको निधाय ठ॥१

में कि मेंगे, वह रेंक, तम्म वह कार्पार। मक्स्नि अग्रासर्घ प्राकृ सम्बाद स्थाने मार वर वीक्यभावन यथाभाषणा किमार॥ बस्ये में कि रेखि रुखी सक्त्राधि के थां थां कि পশ্যামুন্ধিদ। ব্যুদ্র ম্যাগ্রীপ্রসমনত:। ग्रदाः भाम ग्ररू शेषा ७० भन् भन् भारे भारे यभायाम् द्वार विकू र्याक अर्थ वात्रकाल ७ २०॥ रेग्ण विज्ञाना शिभमाखा स्वा ७ भणा शिम দ্ম° প্রণাত্তা १ স্মি নিত্তা ।। ১১ ।।-अज्ञान्त्रक्षिणे याग जन्मार् कृषा काभणे ह। भ्यात विधार द्राके प्रथा वीण वभान छ।॥॥ भक्षान प्रमुख भन्दा सकिने प्रवर्ष अवभाग वारंगात म्या स्थार क्ष्रांख्या ॥ १७ नवसम्बन्धन से रेस, वामस् वनसार्धित। एका वाकान आवन चिष्ठहे वामना भण्या गा १८१ किथावक वज्य स र्येष्ट्रा अक्ष अवा क्रमिति मार्थायस्य सार्यना कार्या १००:॥३०॥ आठात ही त्वा द् प्तर यगाय भाशिया अला। राधानः कामभान्यान भनाभान् क्रमभ ता १३७ अञ्ज्ञाशभव्यानि क्रिंग्रेड दिन्न भगा।

माभारदामिन भाभवा कथम मुक्कार्यमा তবাশরাখো নাম্ফেব কায়বাকু চিও সত্তব:। भूत्यन वर्णन शर्म हिए प्रमाविहिन्स ॥३५ चव. केवे। वसंचाका, मिथा: सापी भन्नस्थि। यमा (भवा° अव्हल्ले पू अका जवारि भाग्येकी॥३३ जमार भरा याङ कूर्ण म्छ्क भारभ्य (भर्म ।। বুষর নথম তর্বব্যাম ছিছি ছিতে।। जवभागात भंजील जातम्ब्राज् रहे यदा। जमाभावम्याद्वाः भाषा जवाक्षमभा कार्वाना १३ माला भाष्मे व सराय अवस्यक्ष मियं स्वा षीवगूरुम् भंजावर् अस्थिक व विकल्ण ॥ ११ प्रश्ला एक भवागाः जना विका विनन्धा । মক্মারণমাত্রেন তক্ষমুক্তি: করে স্থিতা॥ १७ छलाः घ्रजर का तम् यकामिना गिर्हिता মঞ্বর নার, বঞ্জ মাঞ্ধের নারস্থন: । १६ एक त्र भवा विमा एक दिय भव भव । त्र विस्त्र त्र प्रक्ष प्रक्ष वर भव्भव ।। १०। শ্রক: भमा শিবো দেবো তার্মে শ্রী প্রবাব নথ:। जावात्रेजार सम साक्षिः किया त्रेजार सम कूछः। आहेड विश्वालिश्र ना दिन एक प्राचित्र ।। रगा रेषि

क्रीय शास्त्राचिताः एक पन्तरः॥ जात्र क मिक्स निः न्यो अक भूक्ष कृष ज्या ॥ वहिर्याभाक लाजा क थार्ड ज्यान ग्रामिक म १६ र्शि । का के अन्तर्भेस, जाग्रात मिय, विव शह रव मेरियम्ब स्थात्ना ।। अथ छर्यक्तरामा विद्यायः॥ वन्त्रा ग्रवंद वाद मुक्तं: भाग मन मंगः। उर मार्नियम अवनामिशिका जायल गतः ॥॥। विविन्यभाषिता प्रकः भाव वावि भ्रम्भाव। अक दिस भारत जिल समस्यादी अवस्य ।।। र प्रका जा जाने जा कर के की वा का मंद्रा मंत्री। इक्ष्यक जर्मिकी क भरमती किं किं जिल्ला जदक्रम्मास भाष्ठे क्षा क्षाणात्मा ज्वायम्।। ना भाषाका मिक्छा गार्ह्सि अन् ।। इस्राक्षाक भावे नक्षा सिर्वे नक्षा के सक्षा त्रक्ष क्रायम्बर्गा ए व वस्ताक समस्ति ॥ ४॥-भार्य अभारे वात्रम्। त्रिया चने लारेवाः। धनाम् जा स्त्र यहिण्ड असी सुस्रा क्लाः कियाः।। रेषि अर्का का कला विष्यः। अग भन्मा भि स्था भार भर ।। भूः। भक्राभाष्ट्रक्षण भ्यान् विवाग्गार अकृत्वा लगः। कागरकियलप्रात्ना विश्व स मक्याः भ्राताः॥३।

भग्न स्रिति त्याक्रमार वात्नः दल्ले गाले नान भ जिया भद्याल आताः भार शकाशिगक्षा ज्ञावित्रो सूक्राको लाक भूर्य भणना छिनित्रो व्यार्था हत्याम मैक कर येप शाह में क्या दे हैं।। यक मणी विमली वा भूगी: भाषिण शव वा। বিল্ল: সমাসমাকে। ভেতিই প্ৰেথ থাগছে॥ १ এক চারা মব্ধ ঋ বান প্রস্থ শতানিত 1 शासनामा कार्यास या दिया विभिष्ठा ।। तास् कः अर्था द, था मान्धयार्थान्। भोवः। मन्स भ मूजदा त्रिक विक सिन स मूर्ति ।।। व।। एणिः॥ भाकादिकुणकृषि दित्या नधाकारेग भूशभूषे र्णाश्रामः भगते क व्यवं र भा दिला भः॥ इत्राम वाभूमवभ उन था उन का वा व ठण्भग्रामिताङ्गभ भठण अखिभादिकः॥५

অসর য় ॥ যথা লোকো যতি সমৃষ্টা হয়্টাতির
নমন্ শ্রচি: ॥ »॥

শাস্থ্য হেল তথা গীতা সমৃষ্টা হয়্বা নখন শ্রচি:।
যত র্মনমাণ্ডেল তথা পাশৃক্ষণো তবে । । ।

শীতায়া: শ্লোক মাণ্ডেল যথা ন শ্রমন্তি সাতকা:।

শীতায়া: শ্লোক মাণ্ডেল গোবিন্দেতি চ কর্তনা ।। ।

গঙা গীতা তথা তিক্ক: কিলিলা শ্রণ্ড থেবল ॥ ।।

গঙা গীতা তথা তিক্ক: কিলিলা শ্রণ্ড থেবল ॥ ।।

বর্শনা থেলা না কিব সাহাণা ব কলো মুনা ।

বর্শনা থেলা না কিব সাহাণা ব কলো মুনা ।

বর্শনা থেলা না কিব সাহাণা ব ক্রনান্যতে:॥

प्रक्रमाद्य सूजः आदि सक्ति।।

न्यास्थारं त्रक्षेत्रनः। त्रवायकाः।

वारिकः॥ अक्रिक्ट कर्म्या मार्गान्यः॥ १ द्रियाः॥ त्यात्र क्षा ग्रिक्ष मार्थ व्याप्त न्या क्ष्याः॥ क्ष्या क्ष्या क्ष्या व्याप्त क्ष्या क्ष्य क्ष्या क् विभाग मह अस्मार्थ भरि गृह्य ॥ व विभागिकाः

মহাত্রকাণ বিশ্রেন্দ্র প্রবিশ্ব পর্বেলা স্থানা।
মহাত্রকাণ বিশ্রেন্দ্র প্রবিশ্ব শিত্তবৈত্রত।
সায়নোলান হাদ্শল প্রোত্রিয়ে শিত্তবৈত্রত।
সায়নোলান হাদ্শল প্রোত্রিয়ে শর্লণ পরে ॥
মার্মক্রমার প্রিক্ত মেল অকাল বর্ষলে তথা।
মার্মক্রমার বিন্দ্রেন্দ্র প্রবিশ্ব কলত্বে তথা।
মার্মক্রমার বিশ্বেন্দ্র প্রবিশ্ব কলত্বে তথা।
মার্মক্রমার বিশ্বেন্দ্র প্রবিশ্ব কলত্বে তথা।
মার্মার বিশাতেত্র তথা বিশ্বেন্দ্র সাতিত্ব।
মার্মার বিশ্বেন্দ্র মুনাদির ততর্ব্ব পি । ১০
মার্বারিত্র বিশ্বেন্দ্র মুনাদির ততর্ব্ব পি । ১০
মার্মারীত হিল: কন্সিৎ সর্ব্বকাশ্ব হলে দ্রায়া।
মার্মারীত হিল: কন্সিৎ সর্ব্বকাশ্ব হলে দ্রায়া।

মন্ত্রানিং ক্র প্রবন্ধ্যামি ক্রমেন্ত্র স্থানিং ক্র প্রবন্ধ্যামি ক্রমেন্ত্র মান্ত্র ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত ক্রমে

कार्यको काल्यको रहेश ज्ये व्यक्षम्यो क्रिया। अस्राम्यः अभाष्णण म्थ्रमास्स्य कार्यकाः। १४ भूगाम्यः।

ख्रु कृषीया विनात्य ख्रिक म्ह्स यायाम्नी।
कार्यिक नदभी ख्रुझ याय्यात्म ह त्मिनिया।
त्मिनिया नत्मा १ या नाम्या प्रदः। त्यायम्प्राः॥
विका कृष्ये द्विषेया ह आन्त्रित्व मन्त्री मिल।
ह्रूथी द्वामी यात्यकाः त्याम स्प्राः अकृतः॥
अन्त्रश्चेकाः॥ त्मिठीत्वात्रः।

ক্রিকারে সামী ভিত্রিবাত্র সমম্মু মুর্বির্য: স

ন্দ্রন ভার্ দ্রিক্স কাল্স নিক্ত কাল্প মর্নানিক্র কথান বর্ষণ্, শাম ॥ সাহাদ্র ক্রেক্সার বাগোধনা ভাত ভালে শালেও কলা সারেও ছাক্তমা । ক্র করি ছব্লি সালে করে ভাত স্থি ছব্ল করিব বি :।। ১৮॥ বিশ্বো সালে করে ভাত স্থি ছব্ল করিব বি :।। ১৮॥ ক্রিক্রে ॥ হার্লিমান্ত্র হিব্র সাল্লির বি হা।। ১৮॥ ক্রেক্তর মিল্ডি: সালি প্রতিক করিব বি :।। ১৮॥ ক্রেক্তর মিল্ডি: সালি স্থিক করিব বি :।। ১৮॥ ক্রেক্তর মালে ভাত্তমান্তর হিব্র মালে করিব। ক্রিক্তরে ॥ হার্লিমান্তর ভাত্তমান্তর । ক্রিক্তরে ॥ হার্লিমান্তর ভাত্তমান্তর বি । ক্র ক্রিকরে ॥ হার্লিমান্তর ভাত্তমান্তর বি । ক্র ক্রিকরে ॥ হার্লিমান্তর ভাত্তমান্তর বি । ক্রিকরে ।। ক্রিকরে ।। ক্রিমান্তর ভাত্তমান্তর বি ।। ক্রিমান্তর বি । ক্রিকরে ।। ক্রিকরে ।। ক্রিমান্তর ভাত্তমান্তর বি । ক্রিকরে ।। ক্রিকরে ।। ক্রিমান্তর ভাত্তমান্তর বি । ক্রিমান্তর বি ।। ক্র

ততা ংক্ত বৃদ্ধো সজাম কাল বৃদ্ধি নিৰ্মিত ছিন্ गक नेय वस्य मिळ्छि॥ भेगामि त्ये काल्या वस् त् मिक्य वस्ति विशेवमकाना अहि (वर नाका। তাৎ কালিকা: কলমাধ্যব ۱۲ X নির্ভাত সুমিচলনে ওতিয়া চোম মর্জনে ॥ युकान् जाएकालिकान् विमान नकागा नुका विभाग भारतास्त्री। महिला। । लुका ।। भारा। दीना ।। अतिश्वाता । आरम्धामा भार । ना भूखा १३०१ उप भा गान ॥ १२। २२। व्यक्ति । १८। । हित्क ॥ २२ भत्द्रात्मा शुक्ता । १३ वाषानिया १६। विस्त्। १७ आविष ११। भीनार्य १३४। र्शा। १२ ईमानितासास १० सर्वाता १० कियात ए ११ ॥१७॥ मा॰ मू खराई १७ मिमार १३ अका १० भागव १० त्रीक्षि १० शावतः। १० त्रीक्रियस्य १० छ सि त्थे ठ ग्रमामाला ७० । रहा शहा ७१ के ७१ मान ७७ रक्ष ०६ म ०६ तो ७५ व्यक्षात्राद्वादार्थ ॥ ७११ मञ्जािक भर्म कांगा मिला का विष्रः । १०। रेक्षाग्रह में भारतात्रक क्यांगाः भारताहरू भूर् क्रम् । क्याहिन्धि नार्षम् । क्याहिन्द्र काधित्यात्री जमकारा के जाही कि के खिला में तस का कर ।। न ज्भाष्यं हित्या न जिन भर्भ वित्तार्ग

जनवाद भार ॥ जिल्ला प्राथित कालाह कालो भारत ं यार्व विष्ठ। ना नकारंग र सि विदाना प्रदेश गार শান্দ্রোঞা বর্ষার রাক্ষার । দেশকি:॥ ইছের সাগ্র রার্মার। अर्काग्रादि यूग स्टेभी छ छिथांग भश्चादि भक्त द त्य कारा अवस्था अवस्था वार्ड अवस्था वार्ड अवस्था वार्ड अवस्था क्यथः॥ जासि भि स्रिभित्व यथः सार्व मृगामा का मिला देश का भाषा के कर परा तहा विक रेगान्थायार्गः स्थाल्बा॥३॥ त्मास मञ्जाम जारूग अर्थनांग स क्राल्यं विष्क भाष्यका कि इग उप सुभिष जागाइ क भृश्वीध्वाः ॥ जेर्डिक्षः ° कर्त्रवी भ्यता आभिष जाङ्गारी भरा भूग्यान्य जायात्रः कृष्ण इग दिविश्व गवशी लिक्य गता र न्य स्वाः॥२॥ যোনধায় জিখি: সম্বর্ধদিবসে ১ম্বাৎ প্রাক্ भू इति जिला भी जिलाभ्य । क्रेने या भारता अस्ति या अस्ति ॥ व्यक्ति ग्राप्ति ग्रा के भी छ তে তিথী° স্মাক্তের সাক্ষ স্মাতি বেদাপারি সমতা व्यक्त निर्मिलायुक्त भारते विक्रकः॥७॥ नवाभर्य महत्क भगरिः।

একো ত্বেণ থরাগ্রেণ বহি শজাক্ষাঞ্চাত্ত মূকোর জনোযানা ভরিতে শু হু প্লয় থাগা দৈ বি ত

अकासियः॥ भ्रीलाभ्यः जातितः इसर्भर जिली थालों क्यालियु क कांग्राग्रा॰ न किये क मान्यानि भर्तासाख्यकातः भर्छ ।। ।। यात्म रा दूर्वाय में मूद विकार याका भाव বক্ত দোতা কুলে মহনাদ্যার ক্ষিতি প্রাক্তাম लाएभार्षः॥ ज्राभागति भाष्ठः भूत्रम्त् বিষ্ণাবলোকাক্রই সমর্গান্থ সন্দোর্থি প্রতঃ। বাদোল্ক শরার্ড দমুক ববে সামা খং বাজে দল भीशास भाषिषा जि भक्षांने करि धार जन्ना लगा कत्य ॥ प्रामाख भिष्ठकायत्य भाषाभाषातृत्व প্রিণীতে দিব° তদ্বৎ মর্ডিনি ফ্রন্থ° ন ত মাঠে मञ्जार्डभानि र छ॥ ४॥ वाकार्सभम्ता भूतिम्लपूर्ण यात्य क्रव्याम्त भागाणो भवेनसुभाकत्रने एक भाभण विभाः धागम्ला ॥ लगन भाग रेजी र तामि भरेन॰ वर्कभवाभन्ताता (नहात महव्याभाक जिनि वभन्दर्क् घाष्ठ्यात्याः ॥१॥। भ॰र्क भाक । ७६। अन्धायाः जाता । इविदिन्धा । अन्यकायत्याः अद्धिः अन्य लानाम अग्न हां जाकिण। हेर्यक्षा (वेक रं।।

সাদ্র: নক্ষপ্রাণি। মার্যন্তোজানধায় ভিগীনা ১০ মার্যা প্রস্কাদি। সাদ্রমদে নক্ষপ্রাণিশ্র। ১০ মার্যা প্রসাদ্যে উজানি মেন্ত ভুলায়ারিন্ধু বার্যারেকার্:॥

अया निस्रार्क्या साम् त्या त्यापसाम् ठ मिन खिह विद्यतः। भागाधिमाः॥ भूग थर्स भाग यज्ञ्रश्वाधिमा শ্রহ সোম্য ভৌষ সিজ:॥ দীব সিভৌ বিপ্রাণাণ क्रवभग (क्षा २० १र्रा विन्ताः ४ न्द्रः ॥ ३। भारत्याक त्याकाः। भग्राभः ऋदिः अल्पर्यत्यतः स्रक्षेत एक ॥भ लाजार्भात् ॥ व्यादः॥ व्याद्व छत्रादि अञ्चा ॥ तास्य, केवधर्मेश किव, स्थित्रम्था निया नामा गामान कें थि। ये ज्ञान जांग सि वि में भी शि शाया उत्या ॥ न्याकी कि दिवाक उ लायू क्या क्रिस. १ ए एउं । इस के के के के किया मिया है। ष्य मित्य ह आशार्ता ॥ २॥ भूगादी क्य मित था मारूल धम श्रीक्ष भनी दि: भ्राष्ट স'জাতুল মিহা ত্রত্তি সুধিয়: কার্ফ বিসংমি कार्य।। भूकीमा भित्र ह क्षाला प्राथिनिजाः किला थ्र्राक्रनः क्षीलन्दुर्भयभाव ताद्र मिणिनः-भाभा वृक्षाले भूज: ॥७॥ ठिडा भन्रफ:॥

७०७

জিপ্রাক্তরারি হর মূল মূর্র প্রি সূর্বর্গ রৌরের বিদ্যুর মিতেন্দ্র দিনে প্রত গ্রহণ ।।-দ্বিরীর্ রুদ্র রাবি দিক প্রামিতে তিথ্যে ত কৃষ্ণাহি মাপ্রিল বকে পিন তা প্রায়ে ॥ ৪॥ স্মোলোক নক্ষ মালি ॥ ২৩। শাস্ত্রান্তি । অন্যান্ত্রিকা এ। বর্জানি ॥ তর্ণী । কতিকা । মার্ফা । বিশাস্যা । জ্যুকা । ক্যান ॥ বিফাং মৌশ্লুক্ত কালে দিন শাজা তম:

বন্দ তানি শ্রশ্নধা কর্মণ জীবতো গ্রাকাং।
পত্য পরি পূর্ণজাশ্রাক্ত দ্বন্ধানার মজদরং।
গ্রেণ্ডামিরি পত্যত: ক্লাচিশ্লা চরেদ্যান্ত:।
গ্রেণ্ডামিরি পত্যত: ক্লাচিশ্লা চরেদ্যান্ত:।
গ্রেণ্ডামিরি পত্যত: ক্লাচিশ্লা চরেদ্যান্ত:।
গ্রেণ্ডামির পত্যত: ক্লাচিশ্লা চরেদ্যান্ত:।
গ্রেণা: সানামুদ্য ধারা নমেদ প্রমতা দ্বনং।।
গ্রেণা: সানামুদ্য ধারা কর্মণ কর্মা ক্রমণ কর্মণ সানাম্বত:।
গ্রেণা: সানামুদ্য ধারা কর্মণা কর্মণ কর্মণা কর্মণার সানাম্বত:।
গ্রেণা: সানামুদ্য ধারা কর্মণা কর্মণার সানাম্বত:।
গ্রেণা: সানামুদ্য ধারা কর্মণা কর্মণার সানাম্বত:।
গ্রেণা: সানামুদ্য কর্মণা প্রমান্ত সাম্বিত:।
গ্রেণা: সানামুদ্য কর্মণা প্রমান্ত সানাম্বত:।
গ্রেণা: সানামুদ্য কর্মণা প্রমান্ত সানাম্বত:।
গ্রেণা: সানাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা বিলাল।
গ্রেণা: সানাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা
গ্রেণা: সানাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা
লাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা
লাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা
লাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা
লাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা
লাম্বর্গা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা কর্মণা
লাম্বর্গা কর্মণা নাম্বর্গা নাম্বর্গা কর্মণা নাম্বর্গা নাম্ব

ध्या भूकाः भक्ति ४० मिश्राः र्वे स्थाः भिक्ति ।।

ত্রাণ বার্থা ন শৃত্যু যাত্র সমতে নাক্র জি: কুছি (ত। পূর্ব্বা প্রমান সম্পৃত্যু প্রদুল প্রমানত:। প্রাণাম্যাম সাত্র কৃত্যু যাত্রি: স্তর্ফান্ত নাক্র থা। তার্গির মাজ বলক্য:। । । ।

भान १० वर्षन १० विच प्रमाण भू त्या भाग । भाग विद्या भी त्या के वर्षन । । । । जिल्ला के वर्षन । । । । जिल्ला के वर्षन । । । । । जिल्ला के वर्षन । । । जिल्ला के वर्षन । जिल्ला के वर्ला के वर्षन । जिल

ভিষ্ক: পিছুন মমুদ্দিত ক্ষতিৎ কর্মা ন কার্থেছ। কার্থেৎ মর্কাদ্যান প্রমুণ নিজ্ঞ নির্প্তান ১০ পর্চ কার্থেট:

লিত্রে র্ন্তে ক্রতে ডিক্সু: স্নান নেব সমান্তরে।
কথ প্তে র্নি: কুর্যুদ্রন্দ্রমানারি তর্লণ।। ১ ।
কথ স্বানি সংযুক্ত: স্নাজানাংগ্রামার ডির্মণ।। ১ ।
ধতে ক্রতে ডক্স ডিক্সু: স্নানমার্য ন বিকৃতিং।।
ধতে ক্রতে ডক্স ডিক্সু: স্নানমার্য ন বিকৃতিং।।
।

তমাৎ কর্বকরা কিন্তি নামি শিলা পৃতিবৃদ্ধি। শাতাত শ:।

যাত র্যাত্র র্যাত্র প্রার্থ বিধিন হি। ১৪ কুর্যার্শাঘণ তিব্দুর্বন্দন নত বৃদ্ধিয়ান্॥ শবর্তক:।

भिष्त्र प्रिक्त पार्जिकः कूर्याए कार्य भ्रह हार्य।।।
त्वा भृष्य कृष्ठा शत सुन्या प्रिक्त कार्यः।
ययः॥ भाष्र भ्रष्ठ हिने स्राप्त विष्टः कर्या यम कत्व ।॥
भाषा क्रिश्व श्राह्म श्राह्म ।।

भाक्षां भ्रम्ता ।

भिट्यार्थ्य हिन जिस्नः कार्या दिन्य यदा ठातुराण भिट्य अग्र नशक विस्ना श्वा जवादि हि॥

व्यञ्गानः।

দিনে মাতু র্যন্তি: কর্মা ন কুর্ফাৎ মোহাকা দিকে । ১৮
কুকতে যদি মূদ্রাজ্ঞা তার্তৌ নরকৌ ব্যাস্থ্রী দ
অন্ধিরা:।

जिक्: श्रभाषा नमा किन श्र वस्तानिक धर्म। १२ नाजा जाका भश्यात को वर नश्रक धरहर। विकृभ्याल

ডিজামান্য যো ডিক্সু শতির শ্রাভিনীয়তে॥१॰

প্রতির্থ প্রর্থানি বিষ্ঠানা পায়তে জিমি:।

প্রমেরা চন গুল্বা সমাদার মাধ্রর ।

মাতর প্রতি মো দদাদর বদ্ধ মাত্র গতিরা ॥ ११

মাতর প্রতি মান্দের পদ্ধ মাত্র মাত্র গতিরা ॥ ११

সম্প্রমেরা চন গুল্বা সমাদার স্বর্গ গতির দিল।

স্বামেরা চন গুল্বা সমাদার স্বর্গ গতির দিল।

স্বামেরা চন গুল্বা সমাদার স্বর্গ গতির দিল।

স্বামেরা চন গুল্বা সমাদার সাধ্রের ।

যো যতি বিদ্রুমন্ত্র বা ধন বা মাতর ক্বাচিৎ।। ১৬ দীয়তে যদি মূচাআ মো দখো যাতি ন সংলয়:॥-কাজাযন:

সক্রম্য যো যান্ত: সক্রের্ম রার্থ স্থাতর ॥ ১৫ থদিরকেদগৃহ পচ্ছেৎ সহত্যাল সম: মৃত:। তদা চাক্রায়ণ ওকুর্মাৎ স্রাজাসত্য মথা দিবা ॥ ১৫ স্থামার:।

স্ব প্রায় প্রতি থা সভ্রেন্সাতুর্দর্শন কাওক্ষ্যা। সাজিকুর্নরক থাতি স্মরাবৃতি বর্তিক ॥ १৬ বিষ্ণু: সুরালে।

নি: পপতা মুক্তি সদ থতানা পপাদ্লাতা:

শ্রতবান্তি দোষা: ॥ আরুত খোগো শি নিশাত্ত তথ্য: মঙ্গেন যোগী কিমুতা স্পামি দ্ধি: ॥२१ भतात्याताः न भगाधि शिष्ठ वर्षा भूख नाम्य थवामिलल्कः ॥ भूर्त्त्रभू भूर्त्वर्भ भूत नेत्राचा भूरम्ख्यः भिष्ठ भत्तात्यात्राः ॥ १५ यावणः कृत्वल जकः भश्वत्तान् भाग्यात्र ॥ जवत्वाम्य नित्रवण ल कृत्यः लाक गण्डेक् द्रः॥ १५ न जाल्लाका नित्रवण ल कृत्यः लाक गण्डेक् द्रः॥ १५ विश्व कृष्वर्त्वतं भूग यवा वि व क्रिल ॥ ५० ॥ यरमामि न मर्थाष्ट्र च्या पृक्षाः मात्रिक्वः। यरमामि न मर्थाष्ट्र च्या पृक्षाः मात्रिकत्वर ॥ यरमामि न मर्थाष्ट्र च्या पृक्षाः मात्रिकत्वर ॥ यर्था कृत्या व्यात्रिक्वः वित्रभावः भ्यात्रक्वः। प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः भव्यक्षः भाविकत्वर ॥ प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः भव्यक्षः भविक्षः। प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः भविकः भविकः। प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः स्त्रव भी क्षाः। प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः स्त्रव भी क्षाः। प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः स्त्रव भी क्षाः। प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः स्त्रव भी क्षाः। प्रक्ष का भूग लाक्ष व स्त्रकः स्त्रव भी क्षाः।

ज्य श्रम् जिक्र लाकाका भारत महिन विक्र त्र का विक्र का व

শ্রক্তি মার্জার মুখা শ্ব শ্বান বানর মেশুকা: 18
কদা চিন্মু সুমাণ্মোতি গ্রিদিন বর্জার্মাত: ।

আন্ধিণা দিনমেক স্মাৎ পশ্র মৃত্যে দিনপ্র শারদ:

নারদ:

अर्थक क निर्वारं के के निर्वारं निर्वारं के निर्वारं के निर्वारं के निर्वारं निर्वर

प्रमण्याच्या भेवा एका क्रम्याच्य क्रम्याद्व ।। क्रिक्रियं प्रमण्या क्रम्याद्व क्रम्याद्व ।। क्रिक्रियं प्रमण्या क्रम्याद्व क्रम्याद्व ।। क्रिक्रियं प्रमण्या क्रम्याद्व क्रम्याद्व ।।।

क्रिक्रियां प्रमण्या क्रम्याद्व क्रियां ।।।

क्रिक्रियां क्रियां क्रिक्रियां क्रम्याद्व ।।।

क्रिक्रियां वर्णायाः भेविक हां प्रक्रियं क्रिक्रियां ।।।

क्रिक्रियां वर्णायाः भिवक हां प्रक्रियं क्रिक्रियां ।।।

থিপ্রস্থে বিপ্রমর্ণে দিনানিদ্র ॥३०॥
কাত্রিয়মরণে দিনানি বিপাতি॥ ২০॥ বৈশ্বমর্ণে দি.৬০॥

मूह भवल हि. ४०। जिन्द्रना जाकाचि॥ डेऊर्थ। শ্ব শূত্র পাতিতা শ্যান্তো মৃতা শেষ্ট দ্বিজ মনিরে। लोह खय सरस्ताम भन्ना आविष् यथा॥ ३०॥ দশ্রাত্রা ক্রিনি গ্রে মাসা ফ্রেন্ডে থবে ফ্রিচি॥ श्रिका क प्राप्ति प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र भार भारत क्षेत्र क्षेत्र भारत भारत क्षेत्र क्षेत्र भारत भारत क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र भारत क्षेत्र क् लकाखिक्शंतिक्र शिक्क भरें वेरी ।।-अत्या (अव्य अकार्यः भाषाकः। श्रेष राष्ट्रभातिः॥ मा अभू लोजू वभन्न आस्मोर्ड किय कार्तक ॥ भाक्त मित्र भारत भारत जिन्द्र जिन्द्राचि रार्जाराए ॥॥ आकाए स्कं दिला भारत राजि कि की यानी कुर्का भारत कृष्णात्य भागत्वाय कर्माणि जजाभा ताथ दस्ता क्ष्य। अज्यस्य मार्गायुर्गाना नात्म वनानीभूष्य याल स्वत जित्व भारत भारि दिन् । उ आ ७८ ।। १८ मन्यान

याणानाः भीजणात्म्वाहा म्गायधानि भविषि भ भर्थतः जम्पूर्वज्ञाक्षिकामिः किरिशसः ज्यकाक्रम्वादिति ॥ १६।

দিক্ষাপারে বিবাধে চ মূতকে বনতোজনে। বিস্থালথ্যে শিবস্থানে যতি জিক্ষা ন কার্থেং। কার্থেতা যদা মৃত: সততে নক্ষ শয়:। চাক্রায়ণ দ্বয় কুর্ফার্থমায় ক্র্যুর্থ থাজন ন:॥ স্থ विवाद अञ्चवस्त्र ठ त्योशीयन्त्रय कर्याति। मकाश्वाकः शुक्तरक्राः दिवस्य कः कर्षम्गरः। विराध भ्राथनायाः भ्रीयास पालकार्यान । नाधकंग्रीनि कोल्लक कर्नराश कल्प वठ ॥३३ दिन गरे अधिक के जिस्से के क्रियोह सिमा। भाभि सास्त्र जगास्त्रात् भक्ष साक्ष जलायह॥१०। धणावणा अल्यक्षाता मिन त्यकः भारीकाति। भाष्ट्रजास्त्र भिष्ट्रजास्त्र जास्त्रभार्यने ॥ २३। मिन गरी भारिकाका जिका पूर्णामारि संगा। भ॰कल्य आइ व्यवभग्र दीर्थ आइ भगामिया ॥ २१ भक्षशाल्य कुर्यादिन त्यक मार्यकार्य । प्रशास्त्राति क्षेत्रास्य खामात त्कार् कर्याणि॥ १७ डेमनील रिवाह्य थाउनुष्ठा युन्भव्हर भागवल्ले गांवायन वल्ले वामि भक्ष छिका छाडि।।। वास्त्रविषयं विवायः भारतकर्म वा ॥ अस्त्रे स्प्रात्माक विमामा में एंगर नरे.॥ १० अक्षमामासिक रास्ट्रे गर्सिका गरिवाद्य । रिवित्वा नग्र सिक्य का विवर्भया ॥ १७।

मक्रभामाशिकगार्ड उम्ज्जं भूषकी जारह। जम्म थार्डिजितंव ग्रा क क्षाणि जणानिकः। १० श्रूण्य रेडिलकः॥

अश्रमामाशिक तार्जा वर्षमात्मा जलम्यादि। उम्पृत् लेव व्यासक पूका ठासा यत ठात् ॥२५ यम् तात्र भुधालका जार्या वाय वजभूता। गार्सिनी वार्य वाभ्यात्क उम जिल्ला न कार्याय । रू क्यकांग्रा अभूवांग्रा ठक्षांति भामि न कासि ।। তথেব ত কুমার্ম মাসনেক ভালেরু য:॥ ७०॥ लाक्ष्रकार हातः हातः भक्ष भक्षकाराः। अठ दे के स्रम्भिक स्मायम के म्लक अत्वर्ध ॥ ७॥ अन्त्राख बनाम मन्त्राज्य किया विकार कार्य विकार सो जिका न क्यों वास करें वा कियारी कर् ॥ जित्यात्रक्यात्मा भार भाष्ट्रः सन्माभिकः रिदः॥ ७१॥ भाजानियहो अकः। आष्ट्रः विभाजा अद्गुर्शि শিতামই শিতামক্ষে শ্রদ র্থণ শার ক্যান্তিত। माभवरंग्यनात्मांना स्वर क्र्यार्थ अवरंगः॥ १० स्व तिशा अभिद्यानाः आअत्यदः विनिश्वति ॥ मेरि॥ ॥ भाग्राख्यः॥

त्रात्रेश रेश क्या क्ष्मण्यः , आंध्वास्त ॥ १८

> 12

उद्दर्भागितिक कूर्याए न कूर्याए माजिला जातर ॥७६। अम्छ ॥ जिल्हा भारत स्वाक स्वित्व । ाणिया ए जिया भे भारति भारति के पाय के में भी एकामूय्याष्ट्र या रह आर्थमाभ्य जितम्रह । जिन्मेग जम्मू का का जिन्मार्थः छर वित्रास्त ।।। अगळ अनु:।

अभिभुजाभुजा कन्मा सम्ब्रहासकः महिज्ञाह्त्। जन्न भूगामिक कुर्याच्य क्रिक् भारता गरिः ॥३। किके विकार न भेष्ठी गार्माघन भार मिलन.। भलात्वा व्य स्मिष्ठ सारम्याव वित्य न त्यालाव १०० विश्वपद्यभ्य यः कर्ण ७भ्य जार्था वह भूला। जम्भूर् वर्षां मिल्यू धायए मार्क मिना वास ॥ ७२। भृद्धत्याम्कथञ्जः वा क्षाजाना नाम्यम्यारिः। आम्मानः स्रमाद्यन साम्रान्छिण अभा छत्र ॥ ४० रेडि अভिरम्भ अक्रां । अथा जिका अक्रां शक्रां श जय शिक्षा सकात्र सिद्धान्य महा महा विशेष । गाहिना गाहिना आक शिक्षा आ कल्मेश्र छ ।। भार्यक्षेत्र गाष्ट्रिक भार सार् संग्री कर्गाष्ट्रिक ॥ भार्कत्र मालोकानः भत्रक्भः भभाष्ट्र ॥ भा

শিতাথহ:।

अथाहिजसभक्षम् भूममञ् भर्क्या ।

থে। প্রত্যান ক্রিন্তার্যাণ । ব্যানান্য ক্রিন্তার্যাণ সমস্থর । দ

মাধ্কর্মসক্ষত্ত প্রাক্ষণীত ম্যাতিত ॥ তাৎ কালিক তাম দার্শ কৈ পথা বিশ স্মৃত ॥৬ भनः भक्ष्मत्रिण्यं गृश्न् शीन् भक्ष अस् ठ। মুধ্বদাহরণ থত মাধুকর মি: ভিস্মৃত ॥ ।।।।।। भग्राता पा प्रानार आग्यर आणिक अकि भ भूरहे:। उत्थाक् भनी जिम्लार् भावा नू माना भूतिः। ह जिकारेन अभूकागाए शालावा निर्मानिष्ठ । णगाहिक जिस्का लाकक भन्त्य येशी ।। ७। उपमात नयल्याक जिक्रार्थ प्राक्ति। दिन्। जाएकालिक भिष्ठि म्याउ उप इ विश्रू भू कुना ॥१ मिब्रमन्थं एफ जिते वानी ए धना है भारति। जेनमन् जिम्बार्भ्नाया साक्षका कि ।। प जिका मकाविधा एकाः (आग्र भागभग भूकाः। जामात्मक जमा वामि वर्णन् मिहि भा भूगाए॥ने भगळ॥ यिकार्थ विधारिका अवृधिभव्छी छउः। अर्णिला मित्रणाना निर्णिश्व भरा रता ॥ २०-म् अमळ। खेल्कान वर्णभन्निक त्रेकान्नामि ज्ञावरश्च हिए। अक्वाचामी ज्यम्यस् कम्ति मा भाराज्य ।। भ निक्रि तिवक्यासि धर्मानात्सव अर्कमा

यसास्त्र जू न (दास्त्र रिश्व यक त्या विक दित्र दित्र दित्र पित्र पित्र

लिम्हंल न अभातिम मुस्रम्थ भिराष्ट्रभा ॥ ३५

गालाभूशभूशिकाणाः नागिर्दन कथीला ।

न्यार्थः भन्यस्तिति नात्यात्मात्वन मस्य ॥ भू॥

कत्रभागामि । युरुम् उच्छाक ॥

अथ जिसा ठ प्रकार की जिसे । । के वासती।

ठ्येत्रास्य सिकाष्ट्रम्, प्रायं ॥ न्यानिक्यारामामन,

> >0

क्र्यापि सववर या श्री ग्राट या ने अंशातनी प्रे यथा।। त्यांज्यः ॥

क्तिः भाका यथा हमा निवास्त्वा अत्यम्पृति । भागाहक ज्या जिस् निता हाता भूत भूत ।। भाग्यमण्यत् भागि स्व निष्ण गृहान छिए।। क्छिन् युस्त् ठ्रान् यूजन् मार्धना हमन करत्। नगिवसम् भग्रळण ॥

आत्मन रूपमा शत्रं ताग्रमाग्रल भूतिः। १७ <u> পুতাকোঞানিগদি</u>

मानिभाग भूमत भागः वा लाख ताख विभाग करा तमान ना नंत भीता तमान नाम नेसे नं अक्षेत्र क्रानक्रम्य भवात्राक । रेव ॥

🖈 শৌনক:।

न्मानि नाज ठवर् तामीन अर्दे हिक्स मा हर्व ।। जिकेन् यूका सहार्य्यान्यारण राज्यात ज्या॥ লৌতম লৌনক বছসো রাভ্যমন বিকল্প:। निधागा धिक्र पूर्ण ठाअत १ मूमिरिक ठ ॥ आक्रामिण गात्मेल्य भानि भाग ठल्यु र्थः।। नानि भाग करंग क्रिक्ट मेल में भाग में अंकः ॥ মার জ্বংগ্লাত ঘণ কুর্ফা তার জিলে প্রস্থাত কং । उर्वापूर्व १० कृषा य आठल आज भा ठाव ।।

ज्य आरोल भारत अनम अनम अनम आस्त्रामि निर्मित क न यू करा जिका मान निधि उक उम्म भाष् करा ला क्या मूण्या द्वारिधा जाति हि निकार ॥ माध्यकी जिक्का सभा आ अट भारत जा है।। মার্কর পানি-সাত মন্ত্রীয়া মুর্মোর্ম । > माध्कर्वने मनभाभा कर्मगण जल्परा ।। ठलक्रम् खङ्गर्य आत्मे अन्य अभारत ॥२ ज्या मिन्य जिन्नना॰ विना अधुक ख़न छ। हिंश रहित्र वे प्रविशिष्ण रे वि ध्रव त्युवार ॥ ७ पर्ः॥ भाष्ट्रकृती°ठार्यक्रिकाः पाक्षनानाः गरार्थमा। न घार्रियर जिल्ला में माह्या मि ग्रंदिश्वीत ॥ ४ णर्वासानभानः कविग्रानः भगः भवः। रिनणन कान् शिकार्ः म्यान् रंग्धितः भाषः॥ द किः॥ न विकारा, नाराया न ए विका माहगरः। भाभाभाग अभा जिस्ता जभाम र्यत् महल् ॥ ४ भाषा छ भः।

जिक्राधधुक्री नाम अर्कणाम धना मिनी।
अवश्वाठ श्वाठ क्षाध्यान अधा अग्वा॥१
जिक्रा श्वी निवा श्वी जिक्का त्वेव धार्व धारः।
व्याविशान के व्यक्तिक द्रुवलास क्रिय स्विः।
भानगा क्षाध्य एक्षाभ व्यक्ति विवका क्षेत्रः।
भागगा क्षाध्य एक्षाभ व्यक्ति विवका क्षेत्रः।
भागगः प्रात्मक भूक्ष भागभाषा भिना ज्या॥

जिकान्न अक अविधानियूलकूता। अविन् र्रः कूनातान आप्रियाभि अय गूल ॥ ३०॥ निवलक्ष्मि कानी अव ल्याहिनिक्छल ॥ ३० प्राथानिययथाव ।

जिक्राणी आर्यसम्भामः मियो भून्ते जू युक्तिभान्। जाताकृत्वी म स्थानाखः भारतिशारोक भग्नद्वः॥ १० विकायभूणवः वामः भारतिशारोक भग्नद्वः॥ १० जात्रमाणी आकृत्वा भारति व्यक्ति । १० जात्रमाणी आकृत्वा भारति व्यक्ति। १० जात्रमाणी आत्रावित्वाः भार्यभाग्यम् भारति। १० भारतिमाणी भारति । १० भा

रेजातन जू रासन कर्यण त्याकन असर।

सारामभारत। भिष्ठीकेल्व्य इस्मिय केल्यर्ग्यक्ष्म, यहि।। १। व्याप्तिय क्ष्येक्ष्म मास्याक्ष्म, ॥ १।

কালিস্ক মিন্তানা।

কালে কার্যারে র্রিয়ার্ক ন্রিক্ষার্য সক্রামার্য রাম্বর সমান্তর বিষয় সক্রামার ক্রিয়ার্য প্রক্রার বিষয় সমান্তর বিষয় সমান্তর বিষয় সামান্তর বিষয় সামান্তর বিষয় বিষ

आजन्म ते वालकार जिन्म तार वृ वर्त्ता ।

यम वृष्ठ विताकार विता वित्र वित्र वित्र ।

यम वृष्ठ वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र ।

यक्ष कि वित्र वित्

पणा भश्चा मनात्मा मि नृभः भूक्षा न नाश्वा

अकाध्यन विषिः।

विकृष्ण्यात ॥

তিক্ষাদ্যরে সদা ভিত্তকা: সালিল দক্ষিল করে।
দিয়া তিক্ষা প্রথমেত পালেমক করে দিলে গাল
কর্মা তিক্ষা প্রথমেত পালেমক করে দিলে গাল
কর্মা তিক্ষা প্রথমেত পালেমক করে থাকে।
কর্মা তিক্ষা প্রথমেত পালেমক করে থাকে।
কর্মি প্রতার করি তিক্ দেশ পরতার করে।
তিথার মদত্যা প্রতার করে।
তিথার মদত্যা প্রতার করে।
তিথার মদত্যা প্রতার করে তিক্ কে গৃত্যা দিলে ।
তথার মদত্যা প্রতার করে করি করি করি করে ।
তথার মদত্যা প্রতার করে করি করি করি করি ।
তথার মদত্যা প্রতার করে করি করি করি করি ।
তথার মদত্যা প্রতার করি করি করি করি করি ।
তথার মদত্যা প্রতার করি করি করি ।
তথার মদত্যা প্রতার করি করি ।
তথার মদত্যা প্রতার করি করি ।
তথার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার করি ।
তথার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার নিক ।
তথার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার নিক ।
তথার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার নিক ।
তথার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার নিক ।
তথার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার মদত্যা প্রতার নিক ।
তথার মদত্যা প্রতার মাল দিল ।
তথা সমিক মদত্যা প্রতা

অর্প্রাপাতিত সাধু যতি র্যার পরিক্রান্ত।

মত্যস্থাকতিত সাধু যতি র্যার পরিক্রান্ত।

মত্যস্থাকত পরা র্প্রত প্রাত্ত পর্যার্থিত।

মত্যস্থাকত পরা র্প্রত প্রাত্ত পরিক্রান্ত।

মিক্যস্থাক প্রিক্রান্ত সক্ষান্ত্র্যান্ত্রা বিশ্বতা।

মিক্যস্থাক প্রিক্রান্ত্রা বিশ্বতা বা প্রার্থিকাণে

মার্থান্ত্র মার্থানাক্ষ তিক্রা মিক্রে ক্রিয়ারতা।

মার্থান্ত্র মার্থানাক্ষ তিক্রা মিক্রে ক্রিয়ারতা।

মার্থানার মার্থানাক্ষ তিক্রা মিক্রে ক্রিয়ারতা।

মার্থানার মার্থানাক্ষ তিক্রা মিক্রে ক্রিয়ারতা।

মার্থানার মার্থানাক্র প্রার্থিকার মার্থানার মার্থানা

ওফতামাহতা প্রস্কা পুরস্কাদ প্রচোদিতা। তোজা প্রদানাত র্মেনে আপিহুস্কৃতকারিশ:॥ ৪১ ইতি দ্যাশ্রেয়:।

स्याये, वे सामा संसु, करों ड्रिक का रंग्रेस है। १८४। रेख स्था, व्यास्य स्प्राम, त्वामा सामाय स्ता ভিক্তাদ্বর্মাতের নতিয়েন্দ বিশেশ কৃতি।
ভিক্তাদ্বর্মাতের নতিয়েন্দ বিশেশ কৃতি।
নক্র হ হলাহার ক্রিপ্ন লেইছ লাম্যু ॥ ৪৪।
মাধুকরমসংশ্যেষ্ঠ কর্মান্ত্রণ প্রকার্ম মাধ্যু ।
সাম্বর্ম সালতে বিশেশ ভিক্তাভিক্তাল করে। তুলা ক্রিপ্র ।
সাম্বর্ম সালতে বিশেশ ভিক্তাভিক্তাল করে। তুলা ক্রিপ্র ।
সাম্বর্ম সালতে বালামামান বিশুর্ম না ।
সাম্বর্ম সাম্বর্ম সালামামান বিশুর্ম না ।
সাম্বর্ম সাম্বর্ম

जेभावला जेकामगण्य जिथे भक्र्यण। प्रकामण जिस् ल मिला जेक मा २° विशेशण। जामः। 'हैं:

मकार्ता लाजन क्रिक् भार्य भारत्य भारत्य क्रिक्त महा ॥ ४१ रखो भारते जल्य वाक्र त्यास् भारत्य भारता ॥ ४१ रखे भारत एरस् एर वा याचा भारत भारती ॥ ४१ रखित्र भारत स्वास्त्र भारत हार्य क्रिक्त । ।। रखित्र भारत स्वास्त्र भारते स्वास्त्र भारते ।। व्यास्त्र भारते स्वास्त्र भारते ।। व्यास्त्र भारते स्वास्त्र भारते स्वास्त्र भारते ।। व्यास्त्र भारते वा वर्ष त्यास्त्र भारते ।। वर्ष व्यास्त्र भारते व्यास्त्र भारते व्यास्त्र भारते ।। वर्ष व्यास्त्र भारते व्यास्त्र भारते ।। वर्ष व्यास्त्र भारते भारते व्यास्त्र भारते भारत

ক্রিক্রান্ত্রান্ত্র।

ত্রান্ত্র প্রত্যাত্র প্রত্যাত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্রনাত্র।

ক্রির রম্পেন্তর প্রত্যাত্র ক্রান্ত্রনাত্র ক্রির ক্রান্তরা ক্রান

स्वित्य सि भैंगे, संसाद्धांति॥ भंग सि सिस्वित्राज्ञान विद्यातात्य साज्ञान स्वस् वास वारंत्र वास र्त्यांत क्ष्म र्त्यक माण्य स्वा वास वारंत्र वास र्त्यांत क्ष्म र्त्यांत्र प्राप्ति । व्यांत्र स्वा हर्त्ये, त्या प्रस् स्वा व्याव । त्य स्वा क्ष्म क्ष्म स्व क्ष्म । त्र्ये स्व क्ष्म व्या । त्य स्वा क्ष्म क्ष्म स्व क्ष्म ह्ये क्ष्म स्व । त्य स्वा क्ष्म क्ष्म स्व क्ष्म स्व क्ष्म क्ष्म । त्य स्वा क्ष्म क्ष्म स्व क्ष्म स्व क्ष्म क्ष्म । त्य स्वा क्ष्म क्ष्म स्व क्ष्म स्व क्ष्म क्ष्म । त्य स्व क्ष्म क्ष्म स्व क्ष्म स्व क्ष्म क्ष्म । त्य स्व क्ष्म क्ष्म स्व क्ष्म स्व क्ष्म स्व । व्य क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म स्व । व्य क्ष्म क्ष्म स्व । व्य क्ष्म क्ष्म स्व । व्य क्ष्म क्ष्म क्ष्म स्व । व्य क्ष्म व्य क्ष्म क्ष्म क्ष्म व्य क्ष्म क्ष्म क्ष्म व्य क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म व्य क्ष्म क्ष्म व्य क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म व्य क्ष्म क

ब्धानक गृशेषा यथा विविधस्य भार खाक्यामि भक्ताम्डीकर्गार्थ (शत्रम्य अर्म) खाक्यामि भक्ताम्डीकर्गार्थ (शत्रम्य अर्म)

न्नेप्यक्ताक्षिक, लाज, त्रावः भ्रम्भायं स्र त्रेवः ॥-

>3/0

जिल्लाच गारिना ग्राक श्रिक्ष निवं रका जरह ।। राभानकभा (या विन्यू: भाया खाव क भा क्या जि। ज् भायः यादि शिक्षाकः साभागाभः वराद्यद्व।॥ अकर माय ग्रेशको जाकरा हि हि में प्रक कर्पका छक्छ छिका याय इ म्र श्रिका। उर শরিবেশণ স্মৃত্যন্তরে॥

শাকাদীন্ প্রত স্বাস্ত শক্ত কো জে প্র বাখব:। लयः माक मारिकाका मिक्ति किता कि मारेशि ॥६१ তদ্বে পর্যানে হ আজ পাত্র যদি স্থিত। वमाक्त क यदासक, वसम, मा, भर्षाक ॥ वर्ष भ्रमि जिन्नाए भागिर प्रार्थ ॥ त्मेरीयंभिः॥

नवन कस्तर्थेय मृष्ट खेल जारे वडा एक, क्षित्रक विविध, रम्मे न न स्थाति ILON

মৈশ্বৰ°লবন গ্ৰহ্মামূদ্ৰিক তবেং শাবিয়ে প্রথম হোতে প্রতক্ষে ক্রাসি নিত্য শ:

उक्षर्भिक्तिश्वः॥

म्कात्म्य भूष ठात्र लव स कस्त्र थया। अमङ्ग जिलमङ्ग अपूर्का करा ठर ॥ ४०। रुआ प्रयुक्त मर्का प्रयुक्त रुख १।

বতদ্বোরাক্ষদো শ্বারাৎ সো শ্বারান্যব্রহান।

বিষ্ণুপ্রাল

কল হিল্প বিষ্ণু প্রকল করে হিদ্যুত।

কল হালিক বিলান সারাহ্য সারিকেলাতর দিবে ।

আর্থি মূল মিতি সীতা ফার্য পারিকি পারণ

ফল বিষ্ণু পারিকেলাতর দিবে ।

আর্থি মূল মিতি সীতা ফার্য পারিকি পারণ

কল প্রী বিক্তবে নিবেদ প্রণবেনাক প্রকা রিনা

কল প্রী বিক্তবে নিবেদ প্রণবেনাক প্রকা রিনা

কল প্রাক্তবে নিবেদ প্রণবেনাক প্রকা রিনা

বিষ্ণুপ্রাল

ক্রিকার্যাল

উতান বদ্ন° দৃত্বা এক্ষ সাবেন সাহিত:।

পঞ্চলা কুরি গ্রান্থন মন্ত্রে মৃ ক্রান্ত চোদিটে:॥

ত নার সুর্বাম্যাহান্ত্রামক্রা মৈয়াহ মমা চরে ।

নৈবা হুতী: মন্থলেদ্যোগী দক্তা স্ঠাত্যা ক দাতন ॥

নমাদ্যে দ্রমণ তে জিন্থ্যা ধর্মাবিংকু চিং ।

আনন বিধিনা হুত্বা লঞ্চ প্রাণাহ্বী প্রতি:॥

অন্তর্বক্ষ সাবিত ইত্যনেনতু।

অন্তর্বক্ষ সাবিত ইত্যনেনতু।

অন্তর্বক্ষ সাবিত ইত্যনেনতু।

অন্তর্বক্ষ সাবিত ইত্যনেনতু।

বরং গ্রান্থা বিশ্ব র্জে লোহ্র দোর্টে র্কলিফাতে॥

নবং গ্রান্থা হিলাতু জে লোহর দোর্টের র্কলিফাতে॥

নবং গ্রান্থা হিলাতু জি লোহর দার্টের র্কলিফাতে॥

নবং গ্রান্থা হিলাতু জি লোহর নার্টের র্কলিফাতে॥

নবং গ্রান্থা হিলাত্তর জি লোহর নার্টের র্কলিফাতে॥

নবং গ্রান্থা হিলাত্তর জি লোহর নার্টির র্কলিফাতে॥

নার্টির বিশ্বর বিশ

আশ্বামে বিকে "

प्रथा राम न जार्मा जिल्ला भागा रूकी शु हा ता सिरेभ्र जारासाय सु त्य व्हर् ठरे थ्या।

त्याकिण स्र । यते द्रुष्मधा किका दिश् । अध्येष्ट नाम्यर माल्यम न क त्रमान्य भवर ॥ १०॥ गावक कत्रमंत्रीगांस क्रंगायकाला एकार जाता क्षायत वा रेखिए सर्खिए एक प्राचीक। ११ अस्त्रज्यक्षा राष्ट्रभामी ज्या यूदि। তাজন বি সমাদায় তিকু: স কক্রেল তু॥ ৬৯ निकलिन कार्योग कि नार्यभा नुवान्त्र । भागम् अ जाजन क्योपियाँ मात्र प्राचा प्रति ॥१०।

रवीधायनः ॥

व्याजन र्वन मान भूभरावः छाष्यरः। न विदिशान्ता कार्या जहमा क्यान अपूछ ॥१॥ आत्मा अन्विधि क्षा अक साना इंडि अशा । क्यकीरामिछिकाक्षाभिष्डभूरभूष म्या ।।११ मकान्य रम् कि द्वा भीगा एवः मूतः। कियादिभूयभद्मा द्वा किसा धामस ४० कतीए। ला, शत्रा मर्का का का का व्यापित ॥ १३ সংখ্যার য়৻৸ড়ি তেই য়

र्यस्थाह:

অগ্নিনা শুমানা চৈব স্থান্ডেন মালিলেন হ। দ্বারেলৈব হু মার্লেল ছাড্রির্জেদা বুটো: স্মৃত: ॥৮৫ তথ্যা হাসি।

উদকঞ্চ তৃণা সম্ম দ্বারা পদ্ম তথ্যেব ত। এতিরন্ত রিত কৃত্বা সন্ধিদোধো ন বিদ্বতে ॥৮৬। সরাশর:।

यक भेर्क्य स्वविद्याना विस्नाना भर् जाज्य । यक्ता नि जल्द भायः त्मस्यत्रं न जान्यर्। মিতাশনো তবেরিত তিব্দুর্মোক্ষ মরায়প:। काय नर्भा मुखा नाषा न उठाढि भिषा मा नः॥४४ रिण भिष् अमा श्री याम्यर अस्थाते व किर्यत्व। शिष्टः सक्ष्मण्ड एम जनम वर्षायम्गा ।। ४२ ग्रामके नेद्धिमा क्रिया सिक भव्यवन विष् यात्रके व नमा लेकी जल नाजायन भाज ॥ >० जिकालाय स धः किष्ठिम्यपि जिक्नुः अभूरभ्षिए। प्राप्त त्राप्तर्व सर्का ज्ञानाग्रामा स्रोक्तरः। १ अविधिय ठामक वर्ष्त्र भूकिक पूकालाम न भागतम भिराष ॥ आनम मृजद्रभाजा रामो ठ अकाण नजधायन पूर्णे ए॥

376

हुलक जिज्याने व सूर्य भारकः विलाधाए । भन्डाएकत्काणयञ्चामिनि। भाष्यसम्भूयद्राको हमृद्धि अर्थले तिनि । आठभ ठ ७७: कार्क मञ राकुक्र जरून ॥१॥ ७०५२ शायन सकायः॥ তোদনে দ্ব লামারি নির্বতাত মনকরে। न्डलग्नथम् द्राये लाम्यस्य म्डवर ॥ २१ শত বর্ষ শ: কৃষ্য ক্ষর মুদ্ধর পুর: ॥ यव्या मी क्रमकर्ण किंप प्रशास्त्र ।। अ नगानाठ भाषां गांक भाषात विस्ति र्भाः। डेब्स्डि दाशा नास्मय शुमिष्ट्रणस्य जासजा ॥ २४ विक खाद मा भाक्षीय देवी क भय देत, स्मामंत्राम सरेकक क्र्यार ॥ अञ्चितिकः। धन्:॥ नस्य प्रस्त निष्या अभागं साहि र्यू। मार्त दृष्ठियु परभागार निर्णिवता व ७ क्र्रिकः। ने শাতাত্য:।

मसलाम हालभूला अभ्याना द्वेशेषू ठ।
स्मार स्मार किस्मान स्वाक स्वाक स्वाक स्वाक स्वाक स्वाक स्वाक स्वाक स्वाक स्व

डेब्बिका विकेशम्बः स्वा मूद्रम वि विषः॥

ンジ

उत्मास्य जनीत्मका मक्षात्मन स्ट्रसार ॥ जन्किक्यमभूकः भागत्म विशिय् । ३१ पावर भाषभन्त्र जारा दिसा न सङ्गिष् उज्ञलम् छिष्ठिसावस्थावस्थावस्थावस्थाकिण ॥ २४। আছান্তা হা ক্রছি সাবদ্যাবং লাত মর্ ধৃত ॥ उक्ता ॥ इत्र ॥ अया जाक में छि:। यां भिक्षी धमा पूर्वका मूचका कमा कमा न वस्तामारमः क्रियाय साम्याभ मान्यम्॥ ३०% भागिकित, ॥ कालामाध्य मार्गिकित। । विश्व म्डलक न ठाकीया ख्राह्म अभिकारिः भर्। म् भाष्ण र्फ लायक र्फा वसारामे व्हार्थ। । या व वर्ध विवा विश्वा तोष सि या व किल्लावा। जामलाका विजानीया हुका हा मा गणे हार्ट ॥र अवीवासिविती यसी गर्ड उर्व इश्य ही। फना शायी भूतर्गक ना मदीराम् जा भाषि॥ ७ उनका कार्मिड श्रमः दिजाव श्रम् कार्मिड । व्याणात्रे वायायवान विवर्ध काल्विक उथा।। र प्यादि कर्भा क्षा करा नात्म क्रम क्रक तार्भन्नामण्डा काहिए ऋगः भूत्या भिर्मु ॥ व नाशिया उत्राह । उक्र रसम् वासारंग कार्ष ।

अप शेचापू यानादी भ्रष्टमा व सूर्व फिला। पा जम्बा तोव लाकक पुष्ण ठासा येन ठावर। अधमार सक्राय ए वे मूर्म माया किला मिता। अवीवा अ जमारख्या निज्य अिं विंग्निवाः॥ भृथक् कृषा ह या जिका भाषा भाषा त्र भूशकः॥ प वाल त्या भव्या अकता जिका त्याभवाग जत्। भीउ गिष्ठा य आखान य नमान य ए भ ग क्षि॥ ने आ जिका हि भिजा क्यां जानू भी वर्षम्या छ ।।। यकान्यभूभाष्य थे अन् विकारि ह्यिन । रक्षायक प्रायम् जियक अवस् ।।।। प्राम् प्रकृत गिर्धाचार भाषा मण भगाठात्। নক্রখ, মান্ত ভালসং, সাত্রখনেরিত ৯ মর। १। नय वर्गे वर्गे वर्गक्षक देखा प्रासारंप , प्रायं ६। ग्रामभाव रिष्टिका ठाउँ ग्राम स संस्थल ॥ १० भूकलगानि ह हा जाति रचकातः भकारितः। स्री पार्क सिर्वेषा में अंदिषा के व्राप्त १ १ १ श्रिक्ष क्रीक्रामी (पाद्यः रेक्षे प्रामानेम, प्रखंद 1) व মার পাত্র মলর্লে ত্যাজারি। न्यकाक गर्स छ के ख्रिक क्या म अध ठाणात्मः अणिलेः अस्मि यजिः भ्रायः विमर्काणं र्ति ज्याप्ति मार्स् स्म स्रेब्र, र्रेच, र्वासिताः । १८ स्मिया व्य मान भें भरे कु, मिलः मान, श्रिमक्रिक

সংলয়ে ত্ব থ লাতে তু তস্য তালো বিহী যতে।।

ইতি তিকা প্রক্রন ।।।।।। সমান্ত।

माठरम् गाठ ठामे अस क्याम प्रक निर्मा त्र क्या । ज्या के क्या क्या के क्या के क्या क्य

द्वा तिलो भग शिलों जू भूता जाभूना भित्र । उभार भर्क खगलून जाभूना पर्ज यह स्वा जन । जाभूनाचा स्वा क्षित्र का भा मा ति क्षिक । ॥ एषा का भा निर्मा क्षित्र । विश्व भूख के यानक श्रीक या लोक्या स्व क । भ कर गुक्क वाभ क योजन भा ना ना निर्मा क्षित्र । प्रक्ष

দ্রক্ষরি মাণ্ম সক্ষার মধুমান্ধিক লেব্নাও।
বিচারক্ষ সারিজ্যাগাদ্যতি: সভন মৃহ্ছতি ॥৬।
বিধরাণ কঞ্চোলেভা সধ্বাণ কঞ্চি বিনা।
বিতিঞ্চ কুঞ্চোলেভ দৃষ্ঠা চক্ষ্রিমীলায়েও॥
প্রকাশ শান্যাণ সাম্লব বা মলামূল ত্লাদিক।
ভিত্তিব মন্ত সন্থামীনরকে সভাতি প্রত্বণ ॥।৮

পুর্ণ সক্ষা তু যোতুজে তসমাত্তসর এয়। भाषाग्रेषा व ता प्रक्र कम्म क्ष्य विविग्रल ॥ न रेडिकाक डकामीनि॥ अधनकः॥ रिवशकासे लियाता यमा भनायल विश তন্মজ°নজামিতামু র্বনজ রিশিতোজন"।) आकाना दिराक्षा क्यांग यम भन्। गढ वारी:। १६ अर्थ डेलाखनार्जि। युक्त अमिताः॥ चिक है।गांभा नता समा विस्वता है।गाः। ह नार्कत्म ग्रह्मत्म काडी मार्क र मर्कम् ।-णागक्षणगाली भूकितियो प्राकाः। भारत के कि माल के क्रिक मान प्राम्य भारत है। আদি দ্র চনাম্ব কী পাতান্তে পারণ বিধানামুকাপা ज्या भूक विद्वाका त्या वागा अत्ये वठना णावायम् । जिल्लामा निर्माषु ॥ नक्षयः॥ देलाशिक्क नक्षय याग्रित सार्याप्राप्तिः। भूष्यय वांवाभित्रभीथः भागताभाराहि॥ परार्द्ध भरत अवार्ष धर ख्रात्माधनी॰ भ्राष्ट्राधि ।। मिला शिला शृता भर्स भामेः श्रम्काला व्यक्षक के ज्यास्मानासे में ब्रेन माकर्ष ॥२॥ বাহু সুৱালে 1

তন্ত্রপূর্তা পরারাত্ত ত অথ্য বিষ্ণু বে তথা। আর্থাদ্র্যেত জিত্বক্র কালিলাম্বাঞ্চি সর্বাণী॥ ৬ এতেথা মালিকর্তক্ষরকাত থলাস্থ্য লোম্বাণ।। প্রতি লোপ প্রাল

अग्रत विश्व क्लेख ग्रहणे जीर्य नर्भता। भिरम्भ किला सक्षा अर्था प्रश्न पादा मर्या।।।।।। एरी पार्व सन्या जिक्न तोकिकी विश्व सन्या।।।।। नावश्रा ॥ भाष्य जाद्र भारक् क्लासकी जोत्यह भाषा ॥ ।।।।

कड़ी भारत ह ह्याहिकार आसकी कामिका अहा।

प्रमास वा निभी माल श्राह्म हिंदि मर्कानी भक्ष है।।

स्मिक सह एत्माक मूलाया भव्य कर हाहिला

धर्मिक सिव्य ता भूरः भवाः (काइ मर्भ्य सिमार्थ वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर

अथ भागिक्य सक्तर्गः॥ अभितः॥ ३:। मुक्तम् भर्भः याता भाषा चिभर्भ कामर्। भक्तम् र्सन्यार भागामान् स्वादम्॥ ।। आर्थः॥ यादिकन्दिर समाद्वा दिनाभानं भमा द्वर्।। गान माना दिक कर्जा धाजा मेळ अशा छात्र १२ यस ई भारति निर्देश

म्यक्रभू विक इक्षा विवायको खार्ड्जर्व । ७ मानश्र खिका बंधेल बिक्त रेखे प्रामांत्रेन, उक्रज्य वाश्र व्राक्षनालाजन त्या र मार व्यवस्थित । भेद्धा सिक् वे वस्त्रमें नैसा प्रामान, प्रथि। विधि द्वार थन ग्रीयान नू ज्वा यथ ना छि हि।।-जार्डकृष्क् जमान्सः कूर्ण क्रूकुर्ग गायानः॥६ आयल्फ मिरिकाभभा गांड व्यज्याय है।। अक्टु वाया हाजि भगाक के क थामक:॥ १ प्रकास अन्य क्रिक्ट मानागाम अवासिक म अभागतक् भ्रायक गायः मिस्य सिक मेयः।।।। कृष्ट्रिकः (माधनस्य धानाग्राभा सुकार्यकः। ए अकानाम्धिलावेष्ट् धाराम्छ्यः विसीग्रहा ठाक्षित्रम्युक्षिण वगाळातिभाष (यवठ॥ न भागत्म विन्यानि वामि भानत भागभण्यभार। क् क्यार जक्ष ने मुख्य ॥ स्थाप्रिमाय स्था भव्भ शहेजार्गाः

ক্রমান্ত্র হর্তাক্তি, মান্ত মোসা। ব্রক্তির জন্যান্ত্র। কর্ত চার প্রকার কর্মির মান্ত মান্তর পরে প্রক্রির ।। বৃত্তি কর্ত নার কর্মির সার্গ কর্মকার নাত্তিত। আক্ষ কর্ষি সকাদি মার্য: ॥

আক্ষ কর্ষি সালাদি সুরণ মাত্রার্ম সুস্কীত ॥

অ্যামবাতি কৃষ্ণ স্মাৎ সাদিস্পান্য তােজনঃ।

আক্ষ কর্ প্রাণাদি সুরণ মাত্রার্ম সুস্কীত ॥

অমুক্ষ কর্মি সাণ্টি ক্ষ্ণ সাত্রান্ত্রার্ম । আজবক্ষঃ।

অমুক্ষ কর্মি সাণ্টি ক্ষ্ণ সাত্রাদি সুরণ মাত্রার্ম সুস্কীত ॥

অমুক্ষ কর্মি সাতাদি মার্যার্ম সুস্কীত ॥

অমুক্ষ কর্মি সাতাদি মার্যা; ॥

অমুক্ষ কর্মি সাতাদি মার্যা; ॥

অথ পরাক্ষার্। থাজব ক্ষা:। দ্বাদশারো পরাক্ষা পরাক: পারক্যার্ডিত:। এতদা তর্ণ শজে প্রজা শ্লাথো নিক্ষপত্ত ॥ তর্জ কারিকায়াং।

দশর্মের দশ্রের প্রিশ দ্রারিবর্তার । তথ্য দ্বাদশা শাৎ সুমিদারের ক্সে দ্রুর্থার স্মূত্রর্থ মারে প্রস্তুকে দৃষ্ট দ্বিত পুস্ককান্তর্গের নদ্যাত সারে প্রস্তুকে দৃষ্ট দ্বিত পুস্ককান্তর্গের্থ নদ্যাতে তথ্য তু দিশুরো বোরি॥

যোজন মিশ্বভীরেড খৃত হোম শত হুন ।।। उनकवात्भा वा ॥ अध्यक्तभाक्ष द्वाम्भाश्वाद्याक्षण्यः। लक्त्र न अव्यान्य त्राचाना नात्राचाक्र में भक्त भक्ष ॥ अ विवा भारायन वा । भानायाम नव इभावा॥ भक्राक्रिए। स्यू हिज्ञाजानामि भक्रा त्माक्रमा हि चि हलः भागे कर छन। वहतार । উপবাৰ্কানে এক বিপ্ৰতোজন ॥ ভাবন্ধন ধান্য বস্তা निमान° वा ॥ अप्या दिखलादि वृद्धि वह गांभका अव्स प रिया वा ॥ ज्ञानमा भारतायायाय वा मण्डा क्याए। भा भाव वाभभात नक दम सामाना वासाग्रल शकी। अवाक्सरे। आहरे स्व वर्ष। म्य भक् ज्ञांत्रास्कर, भेक त्याधार्यमार्थियार रेडि कुट्यादि लक्ष्मले ॥ ध्या छ ॥

नक्षत्रकान भाषान्त वा प्रम् हिलाः क्षात्राम्या भूठाकः॥ यहमक्षात्र यदि ठामि वायः समास भाषायत्रभूवर्षे ।।। निह

यन भक्षामा जमा विकादि कि वर्गी क्ला हिछे:

रक्ष वासाराम समय सम सापारामारंगः कार्याः। यगीकृष हिले सकान त्यव कार्य ॥ माग्निहराष्ट्र भार्क्य गांठक्षीन विनिद्यार्थ ॥)॥ প্রথম দলোবাথ মূলমন্ত্রম স°স্কার্ড:। साराज करंगल क्या समयम समाप्त्र ॥१ जमार मर्थ नगावा मनार्थक नावा नावर प्रमापंकाता शलाका काता त्रा का दिल्ला का लास्य ।७ তস্মাতানি সদা কু ফদ্যিতি: শুস্কু প্রয়াজন:। धालन अन्म°नासि त्यायन भाभकर्माण ॥ ४ अभाक्ष मित्रसाम भागीते प्रानिम्ह । जनस्मार्थराज्यः सर्वारम् देकाल । थारिभागाभ्य-पूजाना जमयकः स्वर्धरः ॥ ५ आव्याविभावं धान त्याता यत्केका ज्ञावना । श्रुसमावास्ति भूकि जान बक्तावानि महंगः ॥१ मृह मार्गाक्य सक्षेत्र ॥ स्म

अग्रभाग्रह्म विधिः। श्रक्षेत्रभाग्रम्कान विधिः क्रिक्ष ॥ शाक्षो भग्न काल करे खालाग्रामन् क्षा कड्छ भागः विधाग्र प्रभा यकागः भन्मा खल्यः खड्छ आकान् व्यक्ति।

जगरमाहका प्राय क्यांच वार्ष मान्य वार्थ मान्य वार्थ

বিষ্ঠ মুথানে।

বার্য ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রাম্থানার মার্য মার্য ক্রমান্ত ।

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রাম্থিত মানাক্রামান্ত ।।

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রাম্থিত মানাক্রামান্ত ।।

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রমান্ত ।।

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রমান্ত ।।

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রমান্ত ।

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রাম্থিত ক্রমান্ত না

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রমান্ত ক্রমান্ত ।

ক্রমান্ত প্রাম্থিত ক্রমান্ত ক্রমান্ত না

ক্রমান্ত ক্রমান্ত ক্রমান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত ক্রমান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত না

ক্রমান্ত কর্মান্ত ক

প্রাজ্ঞা দিখি দেই: শক্ত থাক্সা যা গর্মারী ।

মদ্বর্মি দির ক্রিন্ত প্রাক্ত প্রত্ব প্রাক্ত ।

ক্রিন্তে প্রান্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ।

ক্রিন্তে প্রান্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ।

ক্রিন্ত্র প্রান্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ।

ক্রিন্ত্র প্রান্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ।

ক্রিন্ত্র ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ।

ক্রিন্ত্র ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ।

ক্রিন্ত্র ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত্র ক্রিন্ত ।

ক্রিন্ত্র ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত ।

ক্রিন্ত্র ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিশ্বন ক্রিন্ত ক

भग्न सकामक्रम्या स सकाला रिमि गा शि हि। १३ यर साख्य भराष्ट्रण सम्भानि जम भिनः। विष्ठात्र गृति विश्वा क्ष्या सम्भानि जम भिन्ने।। १३ न स्याप्तक ज जय भर्ति उर स्याप्त नः। भ्रम्य अक्षा अक्ष्य भ्रम्य विष्ठ गाळा नः। भ्रम्य अक्ष्य भ्रम्य व्याप्त नः। भर्षा भाष्य विश्व भाष्य स्व स्व ।। १३ विषय अक्ष्य विश्व क्ष्य स्व विश्व ।। १३ विषय अक्ष्य विश्व क्ष्य स्व विश्व ।। १३ विश्व अव्याप्त विश्व क्ष्य स्व विश्व ।। १३ भर्मा व्याप्त विश्व क्ष्य स्व विश्व विश

দাসংশ্বরুপ ববায় প্রমুদ্ধ মুন্তা মজা। ১৬

মহন্ত ইব চিদ্রুপে মুনে দ্রুর্জ মন্তা মজা। ১৬

মজার বিলাশক মর্রক্ষাম্পাতি বোহাত । ১০

মজার বহ্যা মুক্ত প্রথান্ত্রা নিশ্চিত্র সাক্ষা
মূতবং মার্তক্রন্তা। কল্লোল হীনা বুধিব

শ্বিবার দীদাবর স্থায়: মুখীস্টাও।

মর্কেন্ত্রিয় মন বাহিতা রালাজীরা নির স্থা
না শান্তা। স্বালাজীরা বিহুরা মহ্লাবন্দের্ভি

মার্কাজির। ১১।

পাম্রের স্থান্তি ক স্থান ক্রিক্সিক্সির প্রতার ।।।
প্রতিত ক সহজ্ব ন কিন্ধিক্সিক্সের গ্রেত ।।।
প্রতিত ক সহজ্ব ন কিন্ধিক্সিক্সের ।

क्रमण विवयकारण द्रम्क खु म्रम्यः। द्रम्यायद्रमायभा भम्छता क्रमादिया ॥ ११-देशमा भव्या भ्रम् अभ्या भावाभी ज्या । अध्य भावाची भृषा जीर्थ भावा ध्रमास्या ॥ ११ म्ह भी भी जांगाः।

ख्य शाह्रवः। अथय व्यर्गेटें विधिः। । हं।
विभव दिश्वरामा अध्यः स्मावः प्र्याप्त ध्रम्याः।
विभव दिश्वरामा अध्यः स्मावः प्राप्तिकः।। ।।
विभव दिश्वरा प्रदेशे व्यविभी कर्णाम् कः।
विभाग काम प्रदेशे विभाग भिक्रपे विभाग स्मावनः।
विभाग काम प्रदेश विकः अध्यस्म मानम् ।
विभाग किर्मा विक्राणेः भ्रम्यावनः। विक्रमात्रे ।
विक्रित्र भ्रमा व्यापी विक्रमाणेः भ्रमावनः। विवाद विक्रमात्रे ।
विवादी विवाद स्माविकः। विक्रमात्रे विक्रमात्रे विक्रमात्रे ।
विवादी विवाद स्माविकः। विक्रमात्रे विक्र

गमत रिलाय अय गमः।

मार्पायस्य लक्ष्यक भाषा भ्रं गातका भीभ वाउक्षिय विभूग भागानि व । अवशी वं न लख रंगर ॥ आर्य रक्षेत्र स्वी जाइ राष्ट्र राथ मकरा ठाक किन्म आलक्यः सम्रानः मन् स्पर्य राम्भिताः अमिकिना नग्रभाको क्किए भृष्टिकी भाषिका मका वात्रात्माला ग्राम्सामाय हि वि वर्षेत्र समाप क्रमस्याल मित्रव्यं श्राहकादी नह हे की श्रूण वल क्य क्रिक्न किंभर मध्यावल भूगम् भ क्रिक्न गाळार । मृश्चि मूज न्यामर माम वस मूज जन मिरंवर ॥ শাস্ত্রপত বদেয়কত মন: দূত মমাতবেৎ 11 © विश्वाप्ति विश्वह्याप्ति इयुष्णाप्ति नियनम्दि मार् एक निक में मेळ ज्याग भवन क्रिणिए॥ वक्षा वा म्यास भवत्व प्र मिन वर्गे भूखं दिन इंगे । अर्के न्यायं अक्षया वरः ॥ वसा अक्य कित्थे क भाग प्रमे जना श्राह्म ।। ५-आकानः अर्क्ष भूजानि सम्यम् जिकू म्हार्नमही । अस्वर दूर्वकामि विविद्यान्य भूकवर ॥ १ नाम प्यायम् कारं प्रमान् स्र र्से पर करे या रेक, यथ, साध, कामारा प्रविक्य वर्ग न न् नृष्ट বিশৃত্যুরালে-

পর্মাত প্রতির ব্যানিক বর্ষা প্রক্রমাত প্রতির । ১০
থার প্রকৃত্ত কালে পি থার ক্রির লো প্রকাল । ১০
নক বাজা অবাসাবা নক ইন্তির লো প্রকাল । ১০
নক বাজা অবাসাবা নক ইন্তির লো প্রকাল । ১০
ক্রির্মান সভা মার্শি প্রানামকো মধী প্রবেশ । ১১
ক্রিম্মান সভা মার্শি প্রানামকো মধী প্রবেশ । ১১।
ক্রিম্মান সভা মার্শি প্রানামকো মধী প্রবেশ । ১১।
ক্রিম্মান সভা মার্শি প্রানামকো মধী প্রবেশ । ১১।
ক্রিম্মান সভা মার্শি প্রবিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্ব
বিশ্বিশ্ব
বিশ্বিশ্ব
বিশ্বিশ্বা
বিশ্বিশ্ব
বিশ্বব
বিশ্বিশ্ব
বিশ্বিশ্ব
বিশ্বব
বিশ্বব
বিশ্বব
বিশ্বব
বিশ্বব
বিশ্বর
বিশ্বব
বিশ

থা হাতুর্গ্রান্থানি প্রকলেশ প্রকরণ।। দাশ দীবা স্কলেদ্বীবা আকালে দীব মালি নি । দীবথাকুলেলোকে বর্ষাস্থক প্রধানি ।। ১ অমিপ্রণ দিন্তায়াণ।

सार कार एम्स् भाका का र्सिक्स कर का मान्य ।

विया हार्वामिति॥

अया कार्या अ भृश्या प्रस्त यान्य विश्वा ।

या विश्व विश्व श्वा श्वा श्वा विश्व श्वा विश्व ।

या विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

या विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा या विश्व विश्व विश्व ।

श्वा या विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

श्वा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ।

विभू हूर्ण विक नक्ष प्राकृ को व्याभणाः।

उत्जान्यन नाई शाद्य धिरिक्ष कमा ठत।

एव विका न हि शाद्य धिर्क पर्यक्तित श्रव्याक्ष्याः

व क्ष विभूद्र्य भादिभूद्र्य व वाभण।

विश्व क्ष विभूद्र्य भादिभूद्र्य व वाभण।

भूद्र्य दिव में तार्वर अदिश्रक्ति कर्माति।

विभूद्र्या विकाग्राक्ष भोर्मभाभाः दि वाभर्यर ॥ १

त्या व्यक्ति क्षां विद्य भूष्रभाद्ये प्र वाभर्यर।

प्रवार भारत कोत विद्य भूष्रभाद्ये प्र वाभर्यर।

अ्ष्रको लोर्गभाग अश्वभ्यमि राभागः। व्यूभक्षावडील्यू कोई नासि कदा हत ॥ ७। धार्षभीभारत

लोर्नभामा धर्यामा थाजः कार्यः कार्यः । भूरूर्व चिष्णं थाछ भार्यम् दिराभ धरा ॥१ लोर्नभामा ख्रमा कोर्य भारति दिराभ धरा ॥१ भूरूर्व चिष्णाम कार्य धरिष्ट्राक्षेम् रिक्षण केषि॥॥ विल्यन्थ्य भारते।

अधिभात्मा यम विश्व वमा क्षेत्र इयं अवत्।।
भाभ हर्यन श्रयभा भार्त्य क्षेत्र श्राम्य श्रिकः। विभू हु जीविकः पाकः मकः क्षेत्र श्रम्भ स्व श्राम्य श्रिकः।
अन्य भिक्षाम्य विभू हु जीविकः स्व क्षेत्र श्री श्री श्री अन्य भार्य विभू हु जीविकः।
अन्य भिक्षाम्य विभू हु जीविकः स्व विभू हु जीविकः।
अन्य भिक्षाम्य विभू हु जीविकः स्व विभू हु जीविकः।
अन्य भारति विभू हु जीविकः स्व विभू हु जीविकः।
अन्य भारति विभू हु जीविकः।

(भोर्नभाभग जम जिसू: अश्वरभग भिराभागः। যামি দ্বিশুরুর্তাদি বিধি পরাণি বাক্যামি তামি अर्थानि देविक कर्या प्रवानि त्क्रों स धानुषः कर्भा जरू ह अञ्चरः कालः। अवः अञ्चर अश्वी বাপায় দিকুতে তিখু বুর্তাধিক মিডি॥ भागि पू को सं विशय हिभू इंडा दि शिय कार्न वङनानि जानि आधृहारे: धाकिशानि निर्मुणानि श्र्वां अ वयन विवाधार अभ्यकाल अभ्यक्ष्य भाविकागाकः॥ यक विभूद्र्यादि मार्ख्य थन् कण्या यार्व भाषवाषिष्ठिक अन् वि कि विक कर्ष विभग् न के प्राध्येय विभग्।। थानि ह हजूर्नी विश्व निषध यह नानि जानि भूग प्रत्यू पृष्ठेष्वा स्विभाष्य्रभं भविभ वण विथ्याषुन स्कोत् एम ध्रमका जाताळ जिर्मूणा नि ॥ कोत्र धकात्रादि॥ काकान्यक मिलावक्ष भूष्र भक्षिन वाचारं।

कासान्त्रक्ष मार्गायक्ष भूष्रभास्त्र वाकारार्।
भागान्त्र गालः क्ष्मेयभाकक वस्त्र हार्याः।
भागान्त्र गालः क्ष्मेयभाकक वस्त्र हार्याः।
भागान्त्र गालः क्ष्मेयभाकक वस्त्र हार्याः।
भागान्त्र भागान्त्र भूष्रभासां वाकार्यः।

प्रकार प्रकार के के क्षा के क्षा ना । अकला म्यं ग्रह्मा ना की क्षा ना मिलाम्यं भागिक किर्मे मनः।

भरा भारमान भामाणा (कम न्यास्त्र नेशादिश्व कोत्रभागामिशः अर्क ए लामा अज्य थः।। थय कोत विशिवका धरीना छ भयाभरः। भागः कृष्ण विशामाय गाषिभाष्क्र निर्मे भाषि॥ ए भाषिका (क्रामन् का नाय न्य ने देश। विधाय सक्तिमाठ ग्रीषा यञ्च सुढः ॥ ७ अकाल्ण माना वारुग कृषा मृत्य अल्लाइन । हानामर्भ एक कियान कलान महर मिस्टि हा। आसी वितान् भूमः कृषा नाविश्व यत्न अधिकान्। कार्य हास्थान अप्रक्र अप अप क्या क्रिक अधिहा । भवा व वन्ति क्षा गक्षाभन भौभिषाः। य दिशास्त्राम् वस्त्रन मण्ड ७२ निसाय ह ॥ ने তীরস্বত্যা মির ফ শ্র: ক্ষালান তদ্ব কর । आठभावाग्यालायञ्चार्भवाभाः त्क्रीद्रभाठावर्णः असिंग वृत्। कि किए कि कि नू क्याम्य छः। कोत्रायण अक्कीं कन न्यास्त्र गार्था ॥ ॥ ॥ नथाना क्रमन क्रमेर क्रमानीना क वाम यन्। कूरि कोरक द्खन भ्याद्यम् भाष्यम्। ११ , वकाल्य मृथं अन्दर्य मात्य जिमान्त्र थाएं ह ॥

अञ्भक्त हिश्र्कार्वः वार्यम् सक्तराम्यानः॥न आर्येशात्र क्र अस्थानि स्थानारंगर केस्व्यव्यवः। क्रुत्थाम्य जात्वने क्रुत्थाता निभूक छ। कविकिका श्रुक्षेत्या गापु मक्ति अवला मार् । भूके जान् यान्य एम ल्यान् भूम क्राम न्यानि ह।।॥ ७७: कोर्य व्या मितः कमाण्य वामायर। न्ध्राक्षाणि राष्ट्रत ज्यानग्रति कृत्रतः ॥ >१ कार्यपूर्ण अणः किमान् गिश्राजीत् रिनि कित्यश यात्रात्र वाका अवी लात्रक, त्राय मा करिंद ॥१० ন্থি প্রত্থার° নিখড়াথ তার মেতো অধি শচ छ। क्रांशाः भामतार्थिश्वां किष्ठक्रातं कितिकित्भर। थ्न नमान्याया ठिव छाडिवा व जल जया ॥ उत्ज जला खाँवियाचा मित्र आणिक्य भृश्स्या॥३६ । श्रिक देवावं । यिशकार्भे साह्यावं भेरे बजा। कियज्यादः विवादक ज्या क्वान्य भाभागा। वस् क कि भूग के को भीत काल ए स्मृता रार्दः आद्रभाषा भाषा य भाष्ट्रभागि अधा ठाउँ ।। भा भक्कितान्यवात्रेश अभगाष्ठभ यञ्चः। वानायाय ७७: क्यांन्यार : साउमार्थण्या।।। विभक्षेत्रे अला लोन भण्ड्यान् कार्ताः १३ उठ यह शृषिकाश्चानः त्क्षेत्रश्चानाम् नखतः ॥ विख्यान ७७: कृषा एका दीन् भगमार भ्नाः। र

एक भाषाक भीषा भरे के अविलान्गि :॥ रश भणाउद्याने वित्यवः। कार्य्यः।

धक्रभ्रशा मित्रम सः काम नः जन् नज्रः। जाह क गाग्याला यञ्चार भवाभा को तथा हात्र ११२ अवर्शगृष्ण किष्ण उय विष्क्रभाग्रम्गरिः। कूरुभन्मिन छेर एया न्यानिक खन । १७ आत्रमका दिवर्वारं, ज्ञापदा: ज्यान्यकार स्थान क्रियमानायं वार्यन नमस्मिक्नानिक कि छ ॥ १८ मिर्वाक्रम्य जला नामा मिर्वा॰ मह स्थाला थाएं।। कार्या कर्मान्म् नयानाथ निकुलन ॥ २७॥ दि षण्यातः निभजगम्य जीतः गास्ता भाविभय । ञार्वभान विष्ठ्वात् कर्गगाय्य मान्याः । १४ भूम महान्म्लाकेव भाषिवांव फल ज्या । जला जना ख्रातिकार नितं आनिक अन्त्रमा ॥ ११

किथएरात निभक्ताय छाडि वार भूम ज्या

न्यक्ष स्वावकुषं भाषा मार्क्स मा हायं ६ ॥ १० मारिक का म्यायात के अस्प्राह्म भवाषः।

मामंत्राधा अव: केत्रार अद्भयम्भा भारत्रा॥ १५ कोत्रभान थरीनास कामयर्थः अकीर्रिन ।

व्यामक्रमामक मनामः असामः क्रम् क्रमिश् रिक्रिश-मृह। आंहाक्ष्री तस्त्राधि

राज्या गढ्यं, सावी केंस्टांट केंक्टावारात्रा ।

মনসাকর্মনা বাতা পূজাই ত পরাও পর ।।

ইতি পূহ পূজাদি প্রীয়ের বন্দ্রান্ত ক্ত্রা তত: পশ্রম্বাৎ

আতি থাতি বতন ।।

।

স্থান্য সাহিত্ব স্থানি সার্থণ বর্ষ ক্রমন্ত ।

সত্ত প্রেরামাসার ব্যামার্থনার ।

কৈবেল গৃতি কার্য: সান্ধ্রমারিক্রমব্যা: ॥

কিবেমন সন্ধ্রমার মার্মিক্রমব্যা: ॥

স্থাসার্থি কর্বায়াসার ব্যেমার্থ বার্মকে ॥

স্থাসার্থি কর্মনার মার্মিক্রমব্যা: ।

স্থান্য স্থান্ত কর্মনার ব্যামার্থনার ।

স্থান্য স্থান্ত কর্মনার ব্যামার্থনার ।

স্থান্য স্থান্ত স্থান্ত সার্থনার ব্যামার্থনার ।

স্থান্য স্থান্ত সার্থনার স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্য স্থান্ত স্থান্ত সার্থনার ব্যামার্থনার ।

স্থান্য স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্য স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্য স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ।

স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার ব্যামার্থনার ব্যামার্থনার ।

স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত ব্যামার্থনার স্থান্ত স্থান্

অহ ভারান্নিবৎস্যামি সর্বাস্ত হিতার বৈ । বিভিন্ন কল্পেচা দ্বাময়েও॥ অতি:

নাসমান সহায়েষ্ঠ নিবসেদ্যোগাবিৎ কৃতি । বসেৎসেঘান শালেষ্ঠ সুসালেষ্ঠ জনাসিষ্ঠ ॥ ७४ দক্ষ:

सायवाद्या स्वारक्ष स्व स्थान स्व स्थान । । १० व नक्ष प्रव प्रतिक्षा स्व स्व स्थान । । १० व वाभाव द्वा क्ष क्षान । भ्रम्म क्ष यक मात्र । । १० ॥ नक्ष प्रतिक स्व क्षान । भ्रम्म क्ष यक मात्र । । १० ॥ नाम स्व न क्ष्क प्रात्माया भ्रम्भ । । १० ॥ नाम स्व न क्ष्म श्राम्म क्ष वाल मात्र । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष भ्रात्म क्षा क्ष वाल मात्र । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल मात्र । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल मात्र । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल मात्र । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष वाल । । १० ॥ नाम स्व क्ष वाल क् প্রের: লোকো তবেও তা বাম হর্ম দ্রো লন্যা: ॥ ৪০ শৃদ্ধ সের দৈশুকা মাথে মঞ্চলে ন তা দ্রিমণ বাসেও। দ্রোকারী তা স্বারা বর্ষাস্থ দ্যান্তিত তাথেও।।৮৯ দিলামালা সুমারালা মুদ্ধা দ্যান্তিত তাথেও।।৮৯ দিলামালা সুমারালা মুদ্ধা দ্যান্তিত তাথেও।।৮৯ ফার্ডি বর্ষু সুক্ষ দ্বর্দাে ব্রিলে তথ্যেল দ্যা: ॥ ৪০ মামিন দেশে বা সাক্তেতে ন তার দ্বিমণ বাসেও। তেম লোকো তবেও তা বাম ক্র্মি দ্যো মন্যা: ॥ ৪০ শৃদ্ধ

र्क्ष भाजा जनः।

নিম্বালন্ত্রিন মান্যে মান্য কর্ম করে। প্রক্রাইএ বছখেকে মান্যইন, মান্য ছবিক্রা। ৪১। বুক্রাইএ বছখেকে মান্যইন, মান্য ছবিক্রা। ৪১। বুক্রাইএ বছখেকে।

মাসর্য' যদা তদা সাফ্রা' ক্ষোর' ত কার্যে ।। সাফ্রামাপি ফ্রার্টন্যতামিতি ব্যুনার ॥

जान गुरु क्रिक जाम मर्न-किस्या मर्न-मूर्कक पणा में भ्रमाम वस्तानि क्रूफिर्।-अयम भ्रमाम्यमः॥

भारतात्रक्रकार कर स्थार । मास्या मास्या मास्या भारता विकास कर स्थार । प्राप्त स्थार । प्राप्त

নিয় নাত্র বিয়া গ্রামা ।। গ।
বিষ্ণা প্রামান্ত ক্রামান্ত করম গ্রহণ কর্ম প্রামান্ত ক্রামান্ত ক্রামান্ত ক্রামান্ত লাক্রামান্ত ক্রামান্ত ক্রামান্ত

ण विश्वाचा विधि पंविष्ठग्रात् आग्यान् भूवि क्षेत्र अग्या कात्यात् भ्रूथाि विश्वात् कगािका श्वत्रभूक्षात् ॥ अर्थात्यकात् भूत्रतािभ गातेः भाव्यति भाभिष्या अर्थात् विश्वात् विशेष क्षात्रातः भाभिष्या अर्थात् विशेष

म्हामाल ॥६॥ श्राक्ता विमाय विश्व कृतित जनमाल (र्यम्नाद्मान्य म्हान्य व्याप्त विम्नाद्मान्य व्याप्त विव्यान श्राह्म क्ष्य प्रम्म क्ष्य क्

आवः त्रमञ्च वर्मनः स्मिक्षित्र वाम मस्मित्र स्मित्र विवास सम्मित्र विवास सम्मित्र विवास सम्मित्र विवास सम्मित्र विवास सम्मित्र विवास समित्र विवास सम्मित्र विवास समित्र विवास सम

प्रहाभक्ठे° वह्न ॥ कलाश भूमभि भीवे विष क (प्रभाभी। रिका जर्न भारि छ रहे समस्म ॥ ॥। मास्मा भूर्याय जुक वरे भूमा निवासित । धालेकार्यवा॰ भागं नाम केर्या में अस्ति॥ श मेरि मिरिया छक् एकक्रादियः मूर्व वस्त्रम्य रृष्ट्वा यथा भूय विद्राद्र ॥

वेषि विश्वक्रभा भवा अक्रानः।

जणा व भारभ भ्रम मूजानेरगः। आसी भाभान् विश्व: आन्यकीता भ यकास्त्रताः। এক হ ভতুরো মাসান্ বার্ধিকারিবমেৎ পুন: 1151 আর্থিকে প্রাভিষ্ণানা বিশ্বর্য ক্রন বিদ্যার। न मिला अरिखा जय मुक्ट मार्ख भूताखतेः ॥ र ल्यात्सा के स्थान, वस का का के के प्रवास्त्र द्रमधाता मि या विद्वान् अविद्विष्य भले विभि भ गाडि अवसभ्यंत्र, तत्र गर्वी य प्पाञ्च ॥ ६। সপাকুশে বমেন্নিত্ত তিকু র্বোক্ষ সরামূল।। সিদ্ধান্ত বিদেশ গাবছার। মার্কার ।। ৫ প্র अमळ भारत शामानीता ॥

अर्थान अर्थान भिक्त भारत क्षेत्र का कि का कि লৈপুরাজন ॥ বারাপসী প্রান্তি দলানি শীশ্র কাশেন চাতো কবধান বন্তি॥ 611

यवाठार्क सि स्वाविजयो भाषानाना॰ ठलूला॰
भण्यहाभः भूल्यभ्रमन (स्विटाव स्रमा॰ भि।व्यावक्रम क्रविवामि छडः व्यावक छावका छ।
कालक्रम क्रविवामि छडः व्यावक छावका छ।
कालक्रम क्रविवामि अका स्वावाम लयस्य।
प्रमास्व भर्भस् भाकितः स्वावास भाविक हि।
व्यावावानानी वस्य स्मामार म्वर्यभाविद्या।
विलामादा प्रके जल भूक रेख वापक छा॰॥।।
विलामादा प्राव विला विभाविक रिष् का नी निया
भ वाभिकः क्रवाभस्टः॥

क्रकः। भ्यमामवस्य में।। अप निम्मे में।।

विष्यम् अभाग प्रमायवागा स्माय विष्यम स्वा विवासः ॥ युकाबि नातः विस्था यसायह स्रायः स् नमाः पर्मग्वरागाः ॥ २०॥

आलाउ अर्थ मास्त्राणि विहार्य ह सूनः भूतः।
रेम्पारः भू निश्चानः एक एम नायाग्रणे अमा ॥ ॥ व्याप्त्र भूतः भूतः।
या प्रत्य भूतं आनः यागा ल्क्ष्य भृतः भूतः।
या प्रत्य भूतं भानाः अर्थ मास्तः स्राया प्रतः।
धानार भाभानि न मास्ति धाना न्या कः थः विन्ति।

নি প্ৰাম্থ মত হাই।

यजीवा° भाग्राम्हल विधि नर्भग्रिक कामिणः।

भीळास्था। त्य शांशांश्वरका ए आयांगाम स्र काल पाला। मुस् देस्मित प्रक्तावि स्थिं रेक्षे। गाल सूर्य। अ सस्थि प्रस्थित प्रक्तावि स्थानाम स्र क्ष्ये मा

ন্দ্রা প্রান্ত ব্যক্ত ব্যক্ত । নাজ্য না ভারা মহন্দ্র স্থার দ্বার্থ ।। বৈ তেও সার্য্য নার্য ক্রিক স্থার নার্য ক্রিক ।। ব্য তেও সার্য নার্য ক্রিক সার্ভ নার বি নার্ভা।।

পর : ভার্য ক্রেন্ড ব্যক্ত ব্যক্ত ব্যক্ত বি নার্য ক্রিক বি বি

थाउँ यन्दर ।

দেবতা প্রতিথাত ইচ্চা থাতি ইক্টা ত্রিদন্তিন ।
নাম্মার ন কুফা তে ইন্তা তি কৈছি পাট
থাতি ইক্টা স্ফ দন্তিন বি কৈছি পাট
নাম্মার ন কুকীত কৌরব নর ক প্রভে ।
কাম্মার ন কুকীত কৌরব নর ক প্রভে ।
কিত কৈছি থেকে উত্ত ।।

भूवानां उत्।

यक मली चिमली वा मियी भूल सुली व ह। कामाय भाग थादा १ मि यार्ड: मूला पूरिकिय ॥

गाल साम्म भन्ना भश्मी जिल्हाः।

মথানাথ:। এক্টেক্ষাপেক্ষনার্কিক, এইবল, সামথো দাসামূত্র। নাত বৃদ্ধে শুলু কল দ্বাক্টেক্স, দদ্বার স্থিক্স প্রকার বাহি বৃদ্ধ মের্থেইক্সে এর ইক্টের প্রম রান,। নাত বৃদ্ধ মের্থেই ইক্টের এর ইক্টের বৃদ্ধির্মিন।

অকৃতে বৈশ্বদেবের তিক্ষুকে সৃষ্মাপতে।

ওকৃত্য বৈশ্ব দেবার্থে তিক্ষা দ্বা বিসর্জার।

বৈশ্বদেব কৃত্ত দোষা বিশ্ব দেবো কালো বৃতি।

ন বি তিক্স কৃত্ত দোষা বৈশ্ব দেবো কালো বৃতি।

অত্য থতীনা পৃত্যুগ্র সাম্মান।

क्षी हक छित न्ति भूत्रां क पर्मिक ।

र्भ जला विस्कामक् मत्र र्भ सम्तर्गिशा के विस्तर का निर्मा का निर्मा के विस्तर का निर्मा का निर्मा के विस्तर का निर्मा का निर्मा का निर्मा के विस्तर का निर्मा के विस्तर का निर्मा का निर्मा के विस्तर का निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्म का निर्म का निर्म का निर्मा का निर्म का न

ক্পম্য জলে এ বৈতি নিম্ম:।। নিম্ম:॥

পর্য র'ম্ম জল ত্মৌ বা পূরণণ। দিক্ষু বিকিরণ মিডি বিবেক:॥ উসসো:॥

 করে:।

সমিন্দ্রীকরণ তেরাও ব কর্বক স্বাদিতি:।

ত্রিদ্দর প্রকাদের ভেরত ব কর্বক স্বাদিতি:।

ত্রিদ্দর প্রকাদের ভেরত ব কর্বক স্বাদিত তিত্ব —

ত্রেদ্ধর বিদ্দর প্রকাদের ভেরত ব কর্বক স্বাদ্ধর দ্বানা

থার প্রকাদ বিদ্দর কর্বক প্রকাদিক প্রকাদ লাউক্ত

থাকে: শব্দ শীত্রাদ্ধর ক্রাদ্ধেল শুক্রি দিনামা ক্রিক্র

থাকে: শব্দ শীত্রাদ্ধর ক্রাদ্ধেল শুক্রাদ্ধর লাজক

থাকে: শব্দ শীত্রাদ্ধর ক্রাদ্ধেল শীত্রা দ্বনামা ক্রিক্র

থাকে: শব্দ শীত্রাদ্ধর ক্রাদ্ধেল শীত্রা দ্বনামা ক্রিক্র

থাকে: শব্দ শীত্রাদ্ধর ক্রাদ্ধেল শ্রীর দ্বনামা ক্রিক্র

থাকে: শব্দ শাত্রা। মন্তকার্তিতি: ভ্রোক্ষ দ্বানা

থাকি প্রকাশ করে বা ক্রান্তের শ্রাদ্ধর দ্বানা

থাকি প্রকাশ করে বা ক্রান্ত্রাদ্ধর ক্রাদ্ধর দ্বানা

থাকি প্রকাশ করে বা ক্রান্ত্রাদ্ধর ক্রাদ্ধর ক্রাদ্ধর করে বা

থাকি প্রকাশ করে বা

থাকি করে বা

থাকি প্রকাশ করে বা

থাকি করে বা

যাত পুরুষ মূজেন খ্লা পার্য্তা বিনিক্ষিপে ।। বৃতি পুরুষ মূজেন খ্লা পার্য্তা বিনিক্ষিপে ।। বৃতি । স্বার্তি মূজিন প্রেম নিদার ।। প্রতান পর্যত্তা ।।
ত্রা শ্রুণ স্থামন খলি কার্য মিতি ।।

প্রক্রির

যতীন্ বহন্ সম্গত কৈরে স্থানা মাতেন শুরুতি।

অশ্বয়ের দেশে প্রাপ্ত বিষ্টার স্থাক্ স্থাক্। গর্জ
শুরুতীতি ॥ স্থান মাতেল বর্ষ বহুদ্দিমান্ তবতী
জর্ম:। শুতত্বা তাবেনা শুদ্ধিত্বা তাবক্ষ প্রা শেবো

कञ्चादिक वाध्ये ॥

क्षी हक भ मारा यथा । याज शाम् उर कृष्वा हमा भगीता रिप्त श्रमाण याज मिक्सि कर के प्रश्ना ल्या उरहा एका निर्मा यह या गार्क हि कि कृष्वा अभिना गिः भगिष्ठ रेकिं मिन श्रमा भारी श्रम श्रमेश न वा म्रिट । जला रेक्से मान श्रमेश भारी श्रम श्रमेश महा प्रस्ति हि हि कि मान श्रमेश भारी श्रम श्रमेश क्ष्मा मि जील्य किस्म माना प्रमि । प्रभागि नाम रिप्ता मिला माना मिला श्रम भारी श्रम भ्रमा प्रभागि नाम रिप्ता मिला मिला माना श्री भारी श्रम भ्रमा प्रभागि नाम रिप्ता मिला मिला स्मामिना श्री भारी श्रम्भा प्रभागिता नीषा यहा महा रिप्ता भारी श्री भारी श्रम्भा प्रभागिता नीषा यहा महा रिप्ता श्रमेश भारी श्रम्भा

जमद (वीक्षायुनः।

मार्गिति काम कर्णिया द्वामा हि ।

श्वा विकार्य शृक्ष भाष्य विकियम्ग्रे।

याभि श्वा व जिल्ह के वाद्र की कि समा हि ।

याभि श्वा व जिल्ह के वाद्र की कि समा हि ।

याभि श्वा व जिल्ह के वाद्र की कि मार्गिय का निम्न का कि ।

याभि ग्वा व व्या मार्गित के विकार के विवास ।

याग मार्गिति का कि भाष्य के भाष्य के भाष्य कि ।

विक् के वा पाया कर्क भाष्य के मार्गित के विधास ।

विक् के वा पाया कर्क भाष्य के मार्गित के विधास ।

विक् के वा पाया कर्क भाष्य के मार्गित के विधास ।

विक के विधास श्वा पाया कर्मित्र के विधास ।

विक के विधास के विधास ।

विक के विधास के विधास के विधास ।

विक के विधास के विधास के विधास ।

विक के विधास क

गाद्धम्भूम ग्रह।

রাজ্ঞিক সাইরো, এস্থ মন্ত্রান্ত্র ক্রিয়াল্ডি। । ক্রি কর্মণ সরস্থান নিত্ত, প্রত্যান্ত্র ক্রিয়ালিড্র। । ক্রি কল্ড সাইসক্ষ ব্যথনের ন্ত্রান্ত্র ক্রিয়ালিড্র। । ক্রি কল্ড সাইরাল।

শ্ব গৃংগতে বিধিনা প্রাতিষ্ঠা দি তে গুণ্মে বিষ্ঠা নিবে দিত শেষণ প্রায়শ সূর্ব: শ্বরিতি বাস্থারিতি স্থিত্যাতি র্যম্মানত ব্লোজর্ম:।

अर्के दीमग्रामिशिरीहि॥

হক্ষে সঞ্জে। কেশব।। নারায়ণ । থা মাধ্ব।।তা নোরিক।। প্রাথরায়। ২। বুছিকেস।। ১০। সম্প্রমাত। ১১। দাঝাদর।। প্রথম সঞ্জে।। কেশব।। নারায়ণ । থা মাধ্ব।।তা নোরিক।। ১২।। কৃষ্ণ সন্ধে॥। মৃত্যু

সঙ্কর্পন 121 বাসুদের ॥२। প্রস্কুয়া ॥৩। অনিধন্ধ १८
প্রক্রেরের ম ॥ ৫। অধ্যোক্ষর । ৬। কার্রমিণ্ট ॥१
অকুতে । ৮। রুনার্দ্র । ই। ইন্সের । । হরি। ১।
কৃষ্ণ । ২২॥ ইন্সি। রাদ্যান্তদ্যা

नाम नग्र विथा वाभू मिन भाग भ मूक्य रेक्यां। यूर्वः भः भ्रथा मूकः। श्राहा मूकः (कि भावे वाल वर्गः जिस्सा मूकः। श्राहा मूकः (कि भावे। वाल वर्गः जिस्सा मूकः। श्राहा मूकः (कि भावे।

गढ सर्म मण्डार।

অহকেতি ঘতী মৃতে ত পুত্র পরোরাপি ক্ষোর নামি।। ঘতৌ মৃতে ন বপন নোদক নের তারিয়া। নালোক নের লোক স্ত বস্কুনা শোহি নাম দি।। বিভ উসানস্ত স্মৃতি বাক্যের সর্বেষ্ঠাণ প্রবাদিনি বপনাদি নিথেয়াদিত্যার:॥— প্রত্যেণ্ড।

পপ্রাত্তাশ্বর ক্ষেত্রে মাতা সিত্রো মৃত্রে থলা।
আথানে সোম পানে ত ষ্ট্রমুক্ষোর গরিথায়তে ॥
কার্ম্য তের বারেরের মিণ্ডিশ্ব মালা সিতৃ মরল নিমিণ্ডর ক্ষোর্ম্ম তের বারেরের মিণ্ডিশ্ব মালাত্র মর্ল ।
তারে হি সামান্যতো যাত মাপিন্ড মালাত্র মর্ল নিমিণ্ডর বাল্রম্য প্রযানু সারিবাশর্মিতা
পশ্বস্থ স্মৃতি প্রামিত্য নিষ্কে ধার্ ।

ন ভ মক্লামেন পিতু: পুত্রে জনজনক তাব সম্বান্ধা ধুনি নিকৃত প্রতি তাক্ত ॥

তথা সাতি সূত্রেণ তদীয় সামুৎসারকাদের স্টুর্ স্থানা সাতে:। নতে ছা সাতি কাঁত্রা সন্মার্সিনা বিদি কদাতিৎ সূত্র: কুর্যাৎ। যথাবিষি ॥

भशागायं जू यक्ताक मार्म भार्म ने छ छ ।
रेषि काल छ जु विर्वच कामि अन् मे छ छ ।
भार क्षार अस्म मिष्म महाल मि मूस्य क्षार भार अस्म मिष्म महाल मिस्र मूस्य क्षार भार काम अस्य भार मिष्म क्षार क्षार मिस्र मूस्य क्षार काम काम अस्य भार मिष्म काम अर्थ महा ने मिसिर के क्षार अस्व अस्य भारत काम अर्थ महा

ग्रहश्मभः ग्रर।

বিষয় ক বুরী হাবো হত্বস্থায় জায়ত। শিবসোবপন তথ্যা কার্যণ বিষয়ায়া সমেতি। শুনোজে মুখ্যা মুদাবশ্যকত্বাদিনি দিক্

অথ শন্দাস কাশৈ বিতার: ॥-অশুক্তেতি।।

প্রতি সম্য স্বাদ্ধের ॥ দেব বেল সঁতোও সতি কলো- সন্ধ বিবর্দ্ধের। প্রতি

চত্বার্যক্ সহস্রাণি চত্বার্যক্ শতানিত।
কলে র্যান গামিঞান্তি তদা গ্রেতা পারি পুদ্: ॥
সন্নাম শ্চ ন বর্তকো প্রান্ধণো ন বিদানত॥
ধতি ঠেঞ্চব বছনেন নিয়মামিত কাল্যমানীতত্বা
দ ধুনা কালে ধু প্রিব্যেণ্ড প্রক্রামাণ নকুর্বত ধ্রাত্ম:
তন্ত্র ॥ চত্বার্যকোতি বৈঞ্চব বছনেন নিয়মিত মু
স্ক্রালাস্যাতীতত্ত্বাপি তদু প্রকাল্যম্য পৌন
কালত্বাৎ ॥

স্বালাদ্তরত: কালো সৌল স্ক পরিকার্তিত। বৃতি তদ্যুক্ষণা ে॥

यावहर्न विजालासि यावाहमा अवर्षा । आग्नादा कथ अक्षाभ जावए क् यार् कलोयूला । रेक्यामि स्मृडि वहत्वत्र विलाश्व । अक्व लोने कालाक्यम् कानाए। लोला म्ह व्यहला जविष्डि॥

गर कार्य रूपर

आभागणः सम्माण ताने कालभाण गूजा नाक । रेट्रम भूग्य काल भट्रमः । थाउवर मिकाः भार्ति । भि भाषतामि भूग्य कालाहि कत्य रिष्य असा लामा मिक त्यों ने काल्य रे प्रा में किकारि ॥ गाया हम जन्य त्रा भाग मर्गः। मन्यासला उगायाक त्यम्य मुद् कि वक्षयमा का सम जम्ब जान समा यक म ज्या गित्रवादिकमत् जित्थेत ॥ अन्या काहिए निधामी ज य भुश्ह का भाग मान क्रां विसाम रेडिकाग्ड: भार। रेडि वस्र उस निकाहाता र प्रधूना मधाय रिप्त য়েত্র সক্রামণো: ক্রিয়া নিয়মক:॥ भाषियाम छाउँभा मि समाने उंग जिस्कि र्यवभाष्त्रात्।। याजन अग्निरहाया गवानामु अनुग्राम भानाम क्कि शिष्ठिवारुष्ट भागामणुष्ट्र भार्यः ॥ यावद्वन दिञालमा सि यावद्यमः स्वर्कल। হৈছি বিশেষত্বা ওস্তা প্রবাদ:॥ ह ठार्थ स्थान्ध्रानि ठ्यार्थ स्थानि हिल भा भवादः। अभवादादाभाद्याद्य त्वार्थम

ताब्ध्याम गर।

মিতি বিভিন্নানেন ততুর্মতা থিক তত্রক্ মন্ প্রাতি কমে মতি কলো নাগ্নিরে এন্ধ প্রতান মান্ত কম্চা তি প্রশাসিত মান্সাম্ব ।। মঙ্গলানি বংমদা তার বলাদ শি তদ নুষ্ঠান মান্ত বার্দিত্য লও পাঞ্জাবিতেরে তি নিবং। বৃতি।





अथा अस्य स्वस् क लेडा के व्यायक लायकः ॥ १० वरमद अशानिजापि विरियं हालक मतोः भंकाता গছিত্ত। সংক্রোবা মান সার্ সক্ষেয় মিতেপ্রামা শিভূমেধ কামো বিধিবৎ সম্মূরী সপ্তারাক্ত গভা অমাবাস্যায়া প্রাভরেবাব্রেংশ্লিমুসমমাধা গ লিত্ম: আই কিন্ত, থারী বাঞ্জান্ত, খ্রেক্টামের-अर्कष्ठः अर्क विक्रम कान भग्नः जनाः जक्रका इन्हि কা অমৃতত্ত্বায় দল্মত ইত্যেরমত ব্রহ্ম মইন্সার্ভ্য দয় দিব % লোক যিদ্যামু থ সকে সৰ্বাহা ভিত্তিত।। अर्था यशे नश्यू अ अनुषा भाना अक्षत्रं जान थिए বাঞ্চলে র রাষ্ডে ক্রমাকরটো র পঁরারটো রমটো প্রিঞ্জ-ইতে বৃত্তি ইত্ৰা নপ্ত নপ্ত, নাক্ষেত্ৰ সাহখন্য ইত্ৰি হিৎ भया ग्रे चिंछ ठजूर्जि श्रुवारके शाका जी प्रवृशा रोत् বো পাতিপ্ততে ॥ অখান্নি ভিতি ভ দ্বাৰ শ্লী সমারোপ থে ব্ৰত্যা ওচ্চাহেতা গৃত বৃত্তি তথ্য দ্বেক:।। वक हका जाय हिए एक सक्ति भारता त्याचे थी खिंद्रान्य के कारण । कार्कि कार्य मृत्या मुक भर्गधिधाशं ॥ अछिए। धार्मिधिक रेए

जाआधार । विर्वाणि निर्वाणि ॥ अ विज्ञ अ्वा र्थान थेन आध्य प्राथान् विभूक्ष छ ॥ ठात्र भूवर्ग वर्णन शकी विराण धारिन्यान् ॥ वासू अक्का अज्यक्ष वा विद्वित

तो इ दि: हिला:॥ भू गदीद्य अभाद्या मः मृत्ये कार्यास्य भारकः॥ अद्रख्य दिव भूक्षः क्रयः মকুষ্য উচ্চতে॥ সমাম ধেয় স'কিন্দ্র থান্ত্রির भक्तश्र देशल ॥ जिसार फल विश्वकाकी भक्ता প্রত ক্রিকং ॥ অগ্নিবর্ণ বিষ্কামতি বার मुम्मं भ्रम्भव ॥ लाकाद्वार्थशा अविका वनः গঙ্গতি भेथूত: ॥ জত্বাকামান শশুস্ফাতি তথা কি मन् विश्वेषि॥ कि'वा इत्या भम् दिन्य त्थापान् का ज्ञि केल्क्यान् ॥ गर्यवाश्र यशास्त्रीतः भीत्वा श्रास्था॰-जल्यवठ॥ अश्भवक्रे भिक्काभि भर् भन् মনাময়°॥ ইতিমন্ত্রফাণ্নিমপুন্রার্ক্তন দ্যা-দায়ামার্মিত্তথাকাতা মন্ত্রা দ্বান্ধ্রমাম য়মর্থয়: প্রাণময়ো মনোময়ো বিজ্ঞান ময়:।আন न्यां क्या कर्म क्षेत्र त्याकः व्यक्ता क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र भी। कण भ्रज्याच्या भत्रमाच्या जाला भाराहिति कथमात्यं भारत अभावाता त्र्मिनाभावाल नाः দিমক ॥ সো ই ডিমান আজেনো বনু মান্নিইতি-र्थाक्ष आख्यान कात्रवृति ॥ या आ थातिका त्या राज्यान्ता थया जितिवर्णल ॥ आ विस्म भनादि ठक्र नाक तले: मुकला तानिकास ने गृहित्ते:-मकामीन् विष्णान् भूतान् थाने भागारा ॥ जनाव्यता पागराणे जमा अनाराहिणः हाजूर्डिः क त्रामः भकाक्षेत्रातश्मि वाभनामग्रा भकादीन्

यासायलजा जन्मनः श्रं ये ठेष्ट्र देशक त्राम्य त्या हिल्लस विकाता जावान्यम् जातः अयुस् भव भ्राथ्या जाता म्या आकिः॥ श्रुय जात तिरिष् त्वेवस्थि रहेल्यः यमा छमाडेख्रीयः रहेल्याम ्यारहरू ॥ य सार्यानो॰ श्रश्ना वित्र मात्रा अ त्यात्रा र भ्रम्भः काम रेकुठाल ॥ भानामि ठलुई मराभू लमा अनुभारा काला यम वर्ण ख जमा भागेयय काम क्ष्रिक्रक ॥ चढि का मध्ये भूति भूत आदि म्छ्युर्सिः दहाले झाखा भक्तादि विस्था भ कण्मारि धर्मान् यमा कर्ताणि जन भरताभ्यः तन भा ब्रेटिकारक ॥ जल्हिसामार्ग, रीस सर्वार हि লোহা বিলেধা জান' যদা সমতে তদা বিজান ময় एएड इट्रिक १। चल्ड एएड ठावेस्रिंड मेथायेन विकालन यहेकिकिकाशाधिव शक्का थमा वर्णल ॥ তব্যেশ্রহার: থোন ব্রাম্কত সঁকাই:কা বঁশারাটো प्रश्नः कर्ण यम जम देश विस्ति यूकिः भूग यूकि त्र निके विकास प्रकिर्धः य त्रिक भक्त अपनि त्राचा त्रभ गकाः भूगवः यद्यवः भूग भामा कर्मानू भारी र्या आजारीत महासि ताम सामिनाहीर भागा गांबिर कुर्वालां यना इन्छल ॥ जना उंभविष्ठा ज़ित रेक्टरहरू ॥ अन्य आदि यह श्रादिन्छ रेका निश्व भूका। यूलीक के यूवात्मार के भूलिसे

মহোলোক প্রালোক তামালাক প্রতালোক ক্ষা তল সাতাল বিতল নিতল মূতল র্মাত ল মহাতলাতল প্রস্তাত্ত ক্ষ বিবর্জিয়ে । দেওয়াজ্যদ্যক কোসীয়ক সার্গ্রাহেৎ সালিখা বিস্কাদিতি। ভ্রম: যতে:।

रहत्स् अक्र करित वा अधिक्या वा ॥ डेमरील निका प्रारं म्मू वा विभ्रक्त ह्या का प्रीत्र उन्हा त्यो भया वा मार्य प्रायं के अवाग त्यो भया हा मार्य ॥ क् ठी ठता अक ठाही क् ट्रेस विभ्रक्र । मच्छी ह्या का क विभ्रक्त । देखि व्यवाठा छे डेई भयक्ष वर्ष आठतर । अर्ल्स विस्व आह के क्या वर्ष राष्ट्र ॥ डेमानिश्रम्भार विश्विष् ॥ दिखी युम्ब ।।

ए थालून (व्रक्ति (व्रक्ति वेडि॥ वृडीय यान्य:16 অথাত: প্রমধ্য পার্বাদক নাশামন नारा नामिक भूत्यो वसाठर्य भूत् भाव अलार् भाय भार भाष या यहीया यह रामित जिस्ता र्थं याय विभक्त दर आर्थ भाकी भाव था। । उ কিওঁ বিওঁ বিভেত সুসানিষদ বিক্তাপেত্য শ্বে ण्यू भारिकन विकान अर तिम् ॥ उँ छहित्या भा ্রম সদ্ সদা প্রায় সুর্য:। দিবীর ত পুরাতত তাই প্রামো বিদাণাবো দাগুরা'শ: মামীন্ধতে বিঞ্চে र्यर भव्या भद्रा देश यक्तित्य अकलेत्य याने ন:।। সাৰ্বত্যকেথিত ওপু শৃগু গৌতম তন্মম।। ्यालार्यम् विष् अष् त्यामिने का मुभन्नि ।। । হুসাস্য মাত্র বিপ্তার সাঁতে সাঁতে কথা প্রস্থ ।। অথ হুশ্ম প্রয়হ্ম নির্ণয় প্রাঞ্চামান্তি॥ अक्ष ठातिला भाखांग मखांग एक अक्ष रंभर्भ ভি সদা য° মর্বেছু দেনেপু কান্ডো বর্ততে যথা গ্লি:কা ঞেরু ভিশের ভেশমির ড বিদিত্বা ন মৃত্যুমেতি॥ राम्भरके अंशाहाहायू म्याप्य भारिकार छः প্রদান্তিনী কুত্র মালি সূরক কা সাত্রা অমাহত মাত कथ्र विश्वको भागोत्रिक क्राष्ट्राच्यवर्थे गरे । तस्यं के कारं कियाता ईश्वाकर मस्य कार अत्या जाम् भा ठ इस् य अस र स भारत स अह सह है ह

भकामा भारत ब्रह्म भव्यात्व कुछार ॥१॥-जाय देश अधिः। अविक गार्यो क्रमः भव्यव মোদ্বতা রুমিতি বাদ প:। বৃতি শক্তি:॥ মো হুমি जिकीनकः ॥ भरे भरेका आहारायरमा स्वक्ति गार्ड अर्थाणि हुऐ गारा विकानि उराहि ॥ भू थी य त्याभाग निवस्त्रों निवाजभाग जन्म भूका भाषान गाए।। रेडि अग्नित्वामाना रवीयरे।। इन्यान्य अन्यान कर्मणाओं जवजः॥ अव कृष्य क्रम्त्य क्रम्ल कृमाल्या न काराए।। अभीका भो अकारा कारा वि म सन्दरभूत्य कहा कडा ने उत्ती राष्ट्रकाला महा मि त्याद्य भार्त्व चरवः ॥ सम्मण्ये नागातिकः नि क्षित्रंग भाष्य क्ष्य कार्या क्ष्य कार्य कार्य कारि अजिकाल ॥ यात्रम् काश्च एआश्चेमा वृचि र्याण भूकं मलायू भूले आणि तालाया निवालकान् पा उवित ॥ यात्य कृत्वयि विश्वति भारमध्यीका বারুণ্যাত ক্রীড়া বায়কে পেমনাদৌ বুদ্ধি: মৌজোরতি প্রীত্তি: देगात इसमानाती अत्थ विज्ञाए किंशत कार्यम् वस्ता। क्ष्यिंगाः श्रेस् क्षि भैवितिः॥ अभैक्षाया वैथांगः॥ यम् देवा नात्मनीता उर्ड पूर्णिके हेन्यताय दिला है भम्भारतिष्ठि जिशेष्ठ ॥ यव अर्थ द्रभवना ज्ञार धाता विठा छेला ॥ त्वत पन्छ देत्वा जर्भ त्या आ किया आत्मकारा आयुक्ता भाक्षि भ यव तम् । विषा : । अनियान् किना त्रिक्ट रिभ्र थर्डा महीए

जिक्करण भून रेकी के यका के यक खे तमरेकारों खे जेंकार खे श्राम के भूशा के श्राम के श्राम के जिक्करण भून श्रीम के भूशा के श्राम के श्रीमां के प्राच्छा रेक वसरेकारों के भूकारता रेक श्राम के श्रीमां के भाजा। अक खुकी। अक श्राम्थिक भ्रोणि॥

ज्यात नू अज्ञा अस्या भाषां स्पृत् अस्या भाषां स्व छाता विन्हा विन्हा । धना निक्रने भागूको जल्ले শেষ্ট্রত শর্মার বেক্ষায়াপ: প্রত্যায়েতি মধ্যান-তত্তি अक्रियरारि। रेजियकाठारी खन्धाधीय खासे र्वम न्वा ठेविष अक्षठत्थी न्वानात्रुण भूभान देशका जान नुक्रमा छित्रिकि हिंच एक स्रो ठ माफिए। यहिन्सु अप न्यात्मा यक्षित्र व्याणक्य वास्ति ग्रा त्या १ तत्थ इत्राचं १०० श्रम्भायायः आज्ञायकः स्वास्थायास्य खा १ प्रारा विन्दानदां ये अज्ञानका व सालानक एक ॥ विशव विकाल मित्र भाग मिन्न विकासि नास भावाण तभे हुमाए॥ लेजमांनि छ इति द्वाए॥ मा कि शाशवधारा ॥ अथा गालिक्वर, गाईक्वाकाल त्यवः विक्रिणे भिष्यवभाद्यतीयं अविनि प्लास्थ्य भृष्ठिः সিবেদিতেকে সালিযান কেশারিক্ত বিস্ফ থকো प्रकिल् यः आहा रेक भ्रम पूर्याम ए प्रेक्ष भीनानभोत्रा अरिनाधामि अर्वना वीवाधान धरा अन्वान र्वा यम वागत्स्र विश्व यः आसं आश्रीसर त्या १ का आसं द्वात्या॥

क्लेड्यानिश्योद्धिए। कार माग्र हाल र्यस्वल एकल गर त्यान भारत कि शास क्ष्य भयक खायन आराप की वास छाड त्या र भगाग्रित्वः । सा र भगाग्रित्वः । १ ॥ अक्रामान्नीत् ष्राष्ट्रवरावर्षस्य साम्यान्य मामा र्वा किना धाना म सां ५ तम ८ शासि भक्ते दिया।। किर्या दीकार्यातितार कामार्यात्र काला अर्द्ध हमारा वै वर्षां या खूपूर्णा भूषास्त्रभाषः कभाविष भेष्ण धारा के देवता भाष् विथुक भारत अति कित्ति । महाराष्ट्रिकामी न मनाभी तेक शाहरण प्रक्र शहर नार्यक्षिक भिष्ठि उन्नि आकः।। कुछिकारे अभिक्षिक वितिरहेशभूभाका हो। मीला भ्या निर्मी कला (को भी मा स्कापन एका 11) भारत्य भाग गारीक देशवांभक्षायवर ॥ राका मरीक (बना कर मार्च कहर्न राम्पानिः॥ भाग नार जया लोड मृहिः सूरा शिवहर्।। ं अभा भूमिन भारी का व्हिना गात्र श्वास्त्र वास्त्र (१॥ नामर्थ भूग इः गान्यः महीच भाषानार्यः ॥ স্থামানেন তুঞ্চেত নিনিতো ন শাসেৎ প্রার্থ मन्त्रिकामां पानगरी विभागियर। जाभग्रको क्रियानियल म ें रेण थर्न रहान काले आहि हे भारति हुए अधारण ।-